श्री जिनचक्र महामण्डल विधान
(24 तीर्थंकर विधान)

रचयिता

बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

संयोजक

बा. ब्र. संजय भैय्या, मुरैना

प्रकाशक

धर्मोदय विद्यापीठ

सागर (मध्यप्रदेश)

कृति	:	श्री जिनचक्र महामण्डल विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैय्या, मुरैना
संस्करण	:	सप्तम, सितम्बर २०२२
मूल्य	:	१५०/-
प्राप्ति स्थान	:	धर्मोदय विद्यापीठ १७०, गीतांजली ग्रीन सिटी संजय ड्राइव रोड सागर (मध्यप्रदेश) ७५८२-९८६-२२२
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

अनुक्रमणिका

अन्तर्विद्या iv
अन्तर्भाव vi
किसमें क्या? vii
विधान स्तुति १
समुच्चय चौबीसी पूजा २
विधान आरती ६
श्री वृषभनाथ विधान ७
श्री अजितनाथ विधान २३
श्री शम्भवनाथ विधान ३७
श्री अभिनन्दननाथ विधान ५१
श्री सुमतिनाथ विधान ६७
श्री पद्मप्रभ विधान ८१
श्री सुपार्श्वनाथ विधान ९६
श्री चन्द्रप्रभ विधान ११०
श्री सुविधिनाथ विधान १२२
श्री शीतलनाथ विधान १३४
श्री श्रेयांसनाथ विधान १४६
श्री वासुपूज्य विधान १६०
श्री विमलनाथ विधान १७५
श्री अनन्तनाथ विधान १८९
श्री धर्मनाथ विधान २०३
श्री शान्तिनाथ विधान २१८
श्री कुन्थुनाथ विधान २३२
श्री अरनाथ विधान २४४
श्री मल्लिनाथ विधान २५८
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान २७५
श्री नमिनाथ विधान २८६
श्री नेमिनाथ विधान ३००
श्री पार्श्वनाथ विधान ३१६
श्री महावीर विधान ३३७
महासमुच्चय जयमाला ३५१

अन्तर्विद्या

अरिहंते सुहभत्ती सम्मत्तं दंसणेण सुविसुद्धं।
सीलं विसयविरागो णाणं पुण केरिसं भणियं ॥ सी.पा., ४०

वीतरागी तीर्थंकर अरिहन्त प्रभुओं के दर्शन, पूजन और भक्ति से सम्यग्दर्शन विशुद्ध होता है और इससे जो विषयों से विराग भाव उत्पन्न होता है, उसे ही शील कहा है। इसी को ही परम पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द भगवन्त ने ज्ञान कहा है और ज्ञान कैसा होता है?

इसी भावना के अन्तर्गत जैसे ही एक बूँद का जन्म होता है, वैसे ही सागर जन्म लेता है जैसे ही अणु का जन्म होता है वैसे ही विराट जन्म लेता है। ऐसा ही प्रसंग इस कृति के संदर्भ में भी घटित हुआ और क्रमशः एक-एक विधान बनते गए जिससे पूरा श्री जिनचक्र विधान संयोजित हो गया। इन विधानों में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भक्ति के साथ-साथ विषय वस्तु में तत्त्व और अध्यात्म का भी समावेश किया गया है। समयसार, प्रवचनसार, तिलोयपण्णत्ति और उत्तरपुराण आदि आचार्य प्रणीत ग्रन्थों तथा श्रावकाचार आदि ग्रन्थों की मदद से विषयवस्तु को रोचक बनाने का प्रयास किया है तथा इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि कहीं भी विषयों का, सिद्धान्त का भक्ति के अतिरेक में स्खलन न हो जाए फिर भी कहीं हो गया हो या किसी निमित्त से कोई भी अशुद्धि रह गयी हो तो उसे जैनागम के अनुसार शुद्ध करके ही भक्ति करें। इस विधान को महा अनुष्ठान के रूप में चौबीस दिन या दस दिन में भी कर सकते हैं या प्रत्येक दिन एक -एक भी कर सकते हैं या मात्र पूजाएँ भी कर सकते हैं, क्योंकि इस विधान में प्रत्येक तीर्थंकर की पूजन - विधान पृथक् - पृथक् स्वतंत्र रूप से बनाए गए हैं तथा प्रत्येक की जय, भजन और आरती भी सम्मिलित की गई है।

इस बिन्दु से सिन्धु तक की यात्रा में कुण्डलपुर के बड़ेबाबा परम पूज्य श्री वृषभनाथ भगवान् एवं आस्था के ईश्वर परम पूज्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की असीम अनुकम्पा, छत्रछाया वरदहस्त और आशीर्वाद का ही प्रताप है अन्यथा मेरे जैसा क्या करने में समर्थ हो सकता है।

हमारे भगवन्तों, अरिहन्तों व निर्ग्रन्थों का यह मार्ग निश्चय और व्यवहार में एक सिक्के के दो पहलू की तरह चलने वाला अनुष्ठान और अध्यात्म से मिलकर चलता है अर्थात् इस भक्ति के अनुष्ठान का उद्देश्य मात्र यह है कि हम सांसारिक राग-द्वेष, संकल्प-विकल्प आदि आत्मा की वैभाविक परिणतियों से बचकर आत्मा की शक्तियों को पहचान कर इस माटी के पुतले को परमात्मा की मूरत में बदल सकें। यही ज्ञान वैराग्य शक्ति कहलाती है।

इस कृति को ब्र. संजय भैय्या, मुरैना ने पूरी लगन के साथ संयोजित किया और ब्र. भरत भैय्या, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर ने भी पूरी लगन से व्यवस्थित करके मूर्तरूप में लाकर सभी भक्त गणों तक पहुँचाने में महती भूमिका निभाई है। जिनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं कामना करता हूँ कि वह भी आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की कृपा से अतिशीघ्र रत्नत्रय के दिगम्बर-निरम्बर पथ पर जिनमुद्रा को धारण करें।

बड़ेबाबा, छोटेबाबा के चरणों में नमोऽस्तु निवेदित करता हुआ, उन सभी संघस्थ मुनिवृन्दों को भी नमोऽस्तु करता हूँ जिन्होंने इस कृति को व्यवस्थित करने में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से अपना अमूल्य सहयोग दिया है तथा उन सभी त्यागी-व्रती, भैया-बहनों, भक्तगणों एवं पुण्यार्जक परिवारों को आशीर्वाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस कृति के संयोजन में सराहनीय योगदान दिया है।

ना तो मुझको कलशा बनना, नहीं शिखर ना दरवाजा।
ना तो मुझको वेदी बनना, ना कमलाशन जिनराजा ॥
मेरी इच्छा बस छोटी सी, ना मंदिर ना मूल बनूँ।
विद्या गुरु प्रभु के चरणों की, बस थोड़ी सी धूल बनूँ ॥

मुनि सुव्रतसागर

अन्तर्भाव

आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी ने रयणसार ग्रन्थ में श्रावक के लिए दान और पूजा को मुख्यरूप से धर्म कहा है। उसके बिना श्रावक, श्रावक नहीं है। जिनेन्द्र भगवान की भक्ति सम्यग्दर्शन का कारण है और सम्यग्दर्शन को मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी है। भक्त को भगवान् के करीब लाने में भक्ति ही माध्यम है या यूँ कहें कि भक्त से भगवान् बनने में भक्ति ही मुख्य कारण है। बिना भक्ति के भक्त कभी भगवत् स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकता है यह पहला सोपान है भगवत् दशा को प्राप्त करने के लिए।

ऐसी जिनेन्द्रभक्ति की भावना से भरकर श्रमणशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के सहज कवि हृदय, वात्सल्यमूर्ति मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने चौबीस तीर्थंकरों के विधानों की रचना करके 'श्री जिनचक्र महामण्डल विधान' के माध्यम से महापूजा करने के लिए हम सभी को एक नया सोपान दिया है।

इस विधान में मुनिश्री जी ने कई स्वाध्याय के विषयों पर अपने गहन चिंतनों को सहज व सरल भाषा में विभिन्न प्रकार के छन्दों के मोती में पिरोकर एक भक्ति माला तैयार की है, जो मुक्तिवधू का वरण करने के लिए हमें प्रदान कर हम सभी पर बड़ा उपकार किया है। हम सभी उनके प्रति हृदय से उपकारी हैं। यह कृति निश्चित रूप से सभी भक्त जनों के जीवन को एक श्रेष्ठ जीवन बनाने में परम सहकारी रहेगी। सभी भक्त इस अनुपम कृति के माध्यम से जिनेन्द्रभक्ति कर जीवन को श्रेष्ठ बनाएँगे।

कृति के संयोजन में उन सभी के प्रति मैं सहृदय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। संयोजन करते हुए मुझ छद्मस्थ के द्वारा किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि हुई हो तो अवश्य अवगत कराएँ एवं सुधीजन सुधार करके पढ़ें।

अंत में पूज्य मुनिश्री के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु करते हुए भावना भाता हूँ कि आपका आशीर्वाद निरंतर बना रहे एवं सदा प्रभु-गुरु भक्ति करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूँ। इसी मंगल भावना के साथ मुनिश्री के पावन श्रीचरणों में पुनः अनंतशः नमोऽस्तु...।

बा. ब्र. संजय, मुरैना

किसमें क्या?

श्री आदिनाथ विधान	:	१२ सभाएँ, २४ परिग्रह = ३६
श्री अजितनाथ विधान	:	२४ विकथा = २४
श्री शम्भवनाथ विधान	:	४८ भाव-अभाव = ४८
श्री अभिनन्दननाथ विधान	:	११ प्रतिमा, १३ चारित्र = २४
श्री सुमतिनाथ विधान	:	६ अनायतन, ६ काल, ६ कर्म, ६ आवश्यक = २४
श्री पद्मप्रभ विधान	:	६कारक, ६ सामान्यगुण, ६ आहार, ५ आहारवृत्ति, १आहार त्याग = २४
श्री सुपार्श्वनाथ विधान	:	७ व्यसन, ७ तत्त्व, ७ भय, राग-द्वेष-मोह त्याग=२४
श्री चन्द्रप्रभ विधान	:	४ कषाय, ८ मद, १२ अविरति त्याग = २४
श्री सुविधिनाथ विधान	:	नवधाभक्ति, नवग्रह, नवदेवता = २७
श्री शीतलनाथ विधान	:	१0 करण, देवों द्वारा १0 भेदों से पूजित = २0
श्री श्रेयांसनाथ विधान	:	४ पुरुषार्थ, १० प्राण, १० धर्म = २४
श्री वासुपूज्य विधान	:	१२ भावना, १२ तप, १ रोहिणी, १ मुक्तावली = २६
श्री विमलनाथ विधान	:	२४ ठाणा = २४
श्री अनन्तनाथ विधान	:	९ योनि, १७ मरण = २६
श्री धर्मनाथ विधान	:	३ आत्मा, १० कल्पवृक्ष, १७ अयोग्य व्यापार त्याग = ३०
श्री शान्तिनाथ विधान	:	४ अनन्त चतुष्टय, अतिशय, त्रयपद, ८ प्रातिहार्य, ८ कर्म = २४
श्री कुन्थुनाथ विधान	:	१७ नियम, १७ यम = ३४
श्री अरनाथ विधान	:	१८ दोष, ९ क्षायिक लब्धियाँ = २७
श्री मल्लिनाथ विधान	:	५ स.द. की लब्धि, ५ दोष, २५ व्रत भावना = ३५
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	:	१० सम्यक्त्व, ३ प्रक्रतियाँ, ४ कषाय, ४ उपसर्ग = २१
श्री नमिनाथ विधान	:	२८ इंद्रिय संयम विरोधी विषय = २८
श्री नेमिनाथ विधान	:	२२ परीषह, ४ भावना, ४ आरधना = ३०
श्री पार्श्वनाथ विधान	:	नमिऊण स्तोत्र = २४
श्री महावीर विधान	:	४ संज्ञा, ६ लेश्या, १४ गुणस्थान = २४
		६६२ अर्घ्य+२५ पूर्णार्घ्य+१२५ पंचकल्याणक= कुल ८१२ अर्घ्य

अपने परम उपकारी गुरुवर

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के

कर कमलों में सादर समर्पित

जय बोलिए

आस्था के ईश्वर-प्रार्थना के परमेश्वर,
पूजा के प्रभु-भावना के विभु,
विश्वास के वैभव-गरिमा के गौरव,
आराधना के आराध्य-साधना के साध्य,
समाधि के सम्राट्-सम्राटों के सम्राट्,
ज्ञानी के ज्ञान-ध्यानी के ध्यान,
श्रद्धा के श्रद्धान-भक्त के भगवान्,
परम पिता परमात्मा- पंचम युग के त्राता,
ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी,
परम वीतरागी-परम उपकारी,
परम हितकारी, परम कल्याणी,
परम कृपालु-परम दयालु,
परम श्रद्धालु-परम धर्मालु,
प्रातः स्मरणीय-संत शिरोमणि,
चारित्र शिरोमणि-युग शिरोमणि,
सिद्धान्त शिरोमणि-अध्यात्म शिरोमणि,
ऋषियों के ऋषिराज-मुनियों के मुनिराज,
योगियों के योगीराज-श्रमणों के श्रमणराज,
आचार्यों के सरताज

परम पूज्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज की जय ॥

विधान स्तुति

(चौपाई)

नमो-नमो, नमो-नमो[२]

नमो-नमो चउबीस जिनम्, वृषभनाथ से वीर जिनम्॥
पावन परम वृषभभगवान्, जिनवर अजितशील गुणखान।
श्रेष्ठ जिनेश्वर शम्भवनाथ, अभिनन्दित अभिनन्दननाथ॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥१॥

निर्मलता दें सुमति जिनेन्द्र, निर्मलतामय पद्‌म जिनेन्द्र
सुपार्श्वप्रभु की जय-जयकार, जिनवर चन्द्र दोष भयहार ॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥२॥

पुष्पदन्त जिनवर तीर्थेश, शीतलजिन अघहर निश्शेष।
शील सहित श्रेयांस जिनेन्द्र, वासुपूज्य जग पूजित इन्द्र॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥३॥

हे परमेश! विमलभगवान्, अनन्तप्रभु अनन्त गुणखान।
केवलज्ञानी धर्म जिनेन्द्र, शान्ति-विनायक शान्ति जिनेन्द्र॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥४॥

हरें कुन्थुप्रभु मायाचार, अरहनाथ सब दोष निवार।
मल्लिनाथ जिन गुणभण्डार, मुनिसुव्रत प्रभु परम उदार ॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥५॥

श्री नमिनाथ जिनेश्वरधाम, नेमिनाथ हरते अज्ञान।
पारसनाथ परमप्रभु धीर, शासन नायक जय महावीर ॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥६॥

वर्तमान के प्रभु चौबीस, इन्हें नवाएँ हम भी शीश।
जब चाहा इनका सम्मान, जिनचक्र तब रचा विधान॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥७॥

संकट ग्रह भय चक्र विनाश, जीवन का ये करें विकास।
अतः भक्ति से करो विधान, ऋद्धि-सिद्धि पाओ वरदान॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥८॥

श्री जिनचक्र महामण्डल विधान प्रारम्भ

समुच्चय चौबीसी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(लय : चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने।
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदन...।

जो दें दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो।
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बन्ध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को।
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समुच्चय पंचकल्याणक अर्घ्य

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिले निज मुक्ति सों॥
भवचक्र निवारी, नवग्रहहारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥१॥

जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतलप्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्म-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित् बसंत, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्तियान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो।
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥
भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति शुभम् भूयात्॥

विधान आरती

श्री जिनचक्र की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुंथू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥
श्री जिनचक्र की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
निर्मोही निर्ग्रन्थ सभी हैं, किन्तु मोह लें सब संसार।
रहे दिगम्बर पूर्ण निरम्बर, फिर भी जिनके ग्रन्थ हजार॥
धर्म चक्र की धुरी यही तो, धारें तारणतरण जहाज।
भू नभ अम्बर से ऊँचे पर, करें भक्त के दिल पर राज॥
श्री जिनचक्र की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
भूल-भुलैया भव की भँवरे, जिनमें हो हमसे भी भूल।
किन्तु हमें ना आप भुलाना, दे देना चरणों की धूल॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, भर-भर झोली दो वरदान।
'सुव्रतसागर' करें नमोऽस्तु, भक्त आरती करें प्रणाम॥
श्री जिनचक्र की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

❑ ❑ ❑

श्री वृषभनाथ विधान

जय बोलिए

आदिब्रह्मा, आदि परमेश्वर, आदि जिनेश्वर, आदि सर्वेश्वर, आदि जगदीश्वर, आदि महेश्वर, आदिधर्म के अधिपति, कैवल्यकमलापति, परमपूज्य

श्री वृषभनाथ भगवान् की जय ॥

श्री वृषभनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥

मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।
तुम्हारी भक्ति का चंदन, हरे भव ताप बढ़-चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

सभी संसार के पद तो, दिए आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

सुगंधी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुनकर के।
करो रोशन हमारा मन, उतारें आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जलाएँ धूप कर्मों की, चढ़ाएँ धूप जो स्वामी।
वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हर लो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् की, महिमा अपरंपार।
पूजे जो धर ध्यान वह, राग-द्वेष से पार॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाए।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आए॥१॥
वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
एक माह जब उम्र शेष तब, नन्दीश्वर का उत्सव कर॥
बाइस दिन की कर सल्लेखन, प्रथम स्वर्ग ललितांग हुए।
धर्मसहित ललितांग मरण कर,वज्रजंघ प्रिय पुत्र हुए॥२॥
वज्रजंघ श्रीमति रानी ने, दो चारण मुनि सत्कारे।
जो उनके ही अंतिम सुत थे, दिए पूजकर आहारे ॥
इसी समय चारों मंत्री भी, नकुल व्याघ्र वानर शूकर।
मुनि से सुनकर जनम कथा सब, खुश थे मुनि चरणा छूकर ॥३॥
आप आठवें भव तीर्थंकर, बन जब मोक्ष विराजेंगे।
तब श्रीमति श्रेयांस बनेगी, आठों भी शिव पाएँगे॥
वज्रजंघ श्रीमति इक रात्रि, दम घुटने से मरण किए।
पात्रदान से भोगभूमि में, दोनों आर्या आर्य हुए॥४॥
पात्रदान के अनुमोदन से, वहीं चार उत्पन्न हुए।
पात्रदान की महिमा सुनकर, हम सब भक्त प्रसन्न हुए॥
आर्य गया ऐशान स्वर्ग में, देव हुआ श्रीधर नामी।
उसी स्वर्ग में चारों जन्मे, उसी स्वर्ग आर्या जन्मी॥५॥

श्रीधर हुआ सुविधि केशव फिर, वज्रनाभि चक्रेश हुआ।
आठों जीव वहीं फिर जन्मे, श्रीमति तब धनदेव हुआ॥
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाए।
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थसिद्धि पाए॥६॥
तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, वह अहमिन्द्र यहाँ आए।
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाए॥
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न दिए।
रत्नवृष्टि देवों ने की तब, नगर अयोध्या जन्म लिए॥७॥
तीनलोक के जीवों को तब, मिली शान्ति केवल पल भर।
इन्द्राज्ञा से शचि ने तब ही, मरुदेवी को मूर्च्छित कर॥
लिया गोद में ज्यों जिन बालक, तब सम्यग्दर्शन पाके।
दिए इन्द्र को भावी भगवन्, 'पुण्यफला' के गुण गाके॥८॥
ऐरावत हाथी पर लेकर, चला इन्द्र सौधर्म वहाँ।
सुमेरु पर्वत पाण्डुक वन में, मणिमय पाण्डुकशिला जहाँ॥
एक हजार आठ कलशों में, क्षीरसिन्धु का जल भर के।
किया जन्म अभिषेक वहाँ पर, पूर्व दिशा में मुख करके॥९॥
फिर सौधर्म इन्द्र ताण्डव कर, 'वृषभ' नाम रक्खा उनका।
हुआ सुनन्दा यशस्वती से, विवाह बन्धन फिर जिनका॥
ब्राह्मी भरत सहित सौ सुत को, यशस्वती ने फिर जन्मा।
और सुन्दरी बाहुबली को, सुनो! सुनन्दा ने जन्मा॥१०॥
ब्राह्मी तथा सुन्दरी को दे, अंक तथा लिपि विद्याएँ।
पुत्र भरत वा बाहुबली को, दी बाकी सब शिक्षाएँ॥
वर्णाश्रम षट्कर्म बनाकर, पूज्य जिनालय बनवाए।
पिता राज्य अभिषेक करा के, तुमको राजा बनवाए॥११॥
नीलांजना अप्सरा का जब, नृत्य देख वैराग्य हुआ।
दिया भरत को राज्य तथा फिर, लौकान्तिक आगमन हुआ॥
देवों ने वैराग्य सराहा, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ।
बैठ सुदर्शन नाम पालकी, सिद्धार्थक वन गमन हुआ॥१२॥

अहो! नमः सिद्धेभ्यः कहकर, पंचमुष्टि केशलौंच किए।
संग चार हजार राजा के, जिन दीक्षा ले धन्य हुए॥
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तब, छह माहों का योग धरा।
मरीचि ने मत कपिल बनाया, सभी भ्रष्ट थे हाल बुरा॥१३॥
अन्तराय जब हुआ वर्ष भर, तो श्रेयांस सोम राया।
अक्षय तृतीया को इक्षु रस, देकर दानतीर्थ पाया॥
पंचाश्चर्य हुए दाता घर, सबने जय-जयघोष किए।
एक हजार वर्ष तप करके, घातिकर्म प्रभु नाश दिए॥१४॥
समवसरण में तीर्थंकर प्रभु, केवलज्ञानी धरम दिए।
रत्न त्याग तब प्रथम भरत जी, जिन अर्चन कर नमन किए॥
भव्य पुण्य से विहार करके, धर्मचक्र को चला दिया।
फिर कैलाश धाम पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिया॥१५॥
काल दोष से समय पूर्व में, लेकर जन्म मोक्ष पाए।
करके उत्सव भक्त आपकी, पदवी पाने ललचाए॥
हम भी नाथ! आपके गुण गा, मना रहे आनन्द अहो।
रागद्वेष भी मंद हुआ है, मुखर भक्ति का छन्द प्रभो॥१६॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानन्द महा॥
पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥१७॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।
तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शान्ति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥१८॥

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् सम, उतरे कार्मिक भार।
यह पाने वरदान हम, बोलें जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

अर्घ्यावली

(समवसरण की बारह सभाओं का वर्णन)

(चौबोला)

प्रथम सभा मुनियों की होती, जहाँ विराजित मुनि जन हों।
दिव्य देशना प्रभु की सुनने, आकुल व्याकुल तन मन हों॥
तत्त्व भेद-विज्ञान प्राप्त कर, चिदानन्द का वरण करें।
चिदानन्द को पाने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं वैभाविकपरिणतिविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

दूजी सभा कल्पवासी की, देवी जन की शोभित हों।
जहाँ देवियाँ कमलापति के, चरण कमल पर मोहित हों॥
करें अर्चना सुनें देशना, बुद्धिविपर्यय हरण करें।
बुद्धिविपर्यय हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं बुद्धिविपर्ययविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

तीजी सभा आर्यिकाओं के, साथ श्राविकाओं की हो।
मुक्तिरमा का देख स्वयंवर, आत्म सम्पदा पातीं वो॥
नारी बाधाएँ हरने को, मिथ्यादर्शन हरण करें।
नारी बाधा हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं नारीबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

चौथी सभा भवनवासी की, भरें देवियाँ आकर के।
प्रभु की अर्चा चर्चा करतीं, नाच-नाच गा-गाकर के॥
जहाँ उन्हीं के भव-भवनों के, भ्रमण हटें भव-बन्ध झड़ें।
तन-कारागृह हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं भवन-भूमिविवादविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

पंचम सभा खचाखच भरतीं, व्यन्तर सुर की सुन्दरियाँ।
अपना जीवन धन्य करें वे, खिला-खिला अंतर कलियाँ॥
निरख-निरख चैतन्य धाम वे, बाधा संकट हरण करें।
अन्तर बाधा हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं भूतनी-डाकिनीबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

छठी सभा में ज्योतिष देवीं, छटा बिखेरें सज-धज के।
पुद्गल की पर्यायें भूलें, प्रभु के चरणा भज-भज के॥
प्रभु की उपमातीत चमक को, पाने वे तो मचल पड़ें।
आत्मज्योति को पाने हम भी,आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं नवग्रहभयविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

सप्तम सभा भवनवासी के, देव निरंतर भरते हैं।
जय-जयकारों के नारों से, बाल-क्रिया वे करते हैं॥
जड़-क्रिया का विभ्रम छोड़ें, अहो! ज्ञान की क्रिया लखें।
जड़-क्रिया विभ्रम तज हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं जड़क्रिया-विभ्रमबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

अष्टम सभा भरें व्यन्तर सुर, अपना विचरण वे तजते।
कौतूहल चेतन का लखकर, कौतूहल अपना तजते॥
तत्त्वज्ञान में विचरण को वे, चिन्मयप्रभु के चरण भजें।
तत्त्व-ज्ञान को पाने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं भूत-व्यन्तरबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

नौवी सभा भरें ज्योतिष सुर, चमक-धमक अपनी भूलें।
निज रत्नों को पाने आतुर, जिनवर के कब पद छू लें॥
अविनाशी अक्षय सुख पाने, नश्वर ज्योतिष शरण तजें।
सुखाभास को तजने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

दसवीं सभा कल्पवासी के, देव भरें गुणगान करें।
दिव्य द्रव्य ले भजन गीत गा, मन मोहक सम्मान करें॥

दिव्य दृष्टि का देख समागम, जिन चरणों का वरण करें।
दृष्टिविभ्रम हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं द्रव्यगुणपर्यायदृष्टिविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

ग्यारहवीं जो सभा मनोहर, मानव चक्री भव्य भरें।
जिनमत पालक ऐलक-क्षुल्लक,श्रावक जिनगुण काव्य करें॥
हिल-मिलकर वात्सल्य प्रेम से, परमेष्ठी की शरण गहें।
पुद्गल बन्ध हरण को हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें ॥

ॐ ह्रीं पारिवारिककलहविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

बारहवीं जो सभा सुशोभित, तिर्यंचों के वर्ग करें।
सर्प नेवला गाय शेर सब, जन्मजात के बैर हरें॥
संयम का साम्राज्य देखकर, वध-बन्धन के कष्ट हरें।
छेदन-भेदन हरने हम भी, आदिप्रभु के चरण पड़ें॥

ॐ ह्रीं छेदन-भेदनपीड़ाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

(१० बाह्य परिग्रह) (विष्णु - लय : बड़ी बारहभावना)

बीज धान्य की फसल जहाँ हो, उसे क्षेत्र माना।
सुख-दुख के वे बुनते रहते, नित ताना-बाना॥
बनें आप सम हम भी त्यागी, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

भवन-मकानों की रचनाएँ, वास्तु कहीं जातीं।
इनमें फँसकर आत्माएँ फिर, मोक्ष नहीं पातीं॥
तजें आप सम हम भी वास्तु, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं वास्तुभवननिवास-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

चाँदी के आभूषण सिक्के, वो हिरण्य सारे।
आदिनाथ सम चाँदी तजकर, चिदानन्द पा रे॥
पग-यात्री कर-पात्री हों हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं रजतसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

सोने में फँसकर सोने सी, आतम को भूले।
सोने को खोने पर आतम, परमातम छू ले॥
नाथ! आप सम स्वर्ण तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं स्वर्णसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

गौधन गजधन आदिक धन हैं, यह आगम कहता।
यही पुण्य फल इनमें फँसकर, दुख आतम सहता॥
नाथ! आप सम धन त्यागें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं गोधन समस्या विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

ज्वार बाजरा गेहूँ आदिक, बीज धान्य होते।
इनके त्यागी इस दुनियाँ में, जगत् मान्य होते॥
नाथ! आप सब धान्य तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं धान्यखादबीजसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

नौकरानियाँ पत्नी आदिक, विष बेली दासीं।
पुण्य प्रसाद इन्हें अपनाना, झंझट की राशीं॥
तुम सम दासी त्याग सकें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं स्त्री-दासीप्रथाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

नौकर सेवक पति आदिक सब, दास कहाते हैं।
'पुण्यफला' सांसारिक सुख जो, त्रास बढ़ाते हैं॥
नाथ! आप सम दास तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं पुरुष-दाससमस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

ऊनी रेशम कपासादि के, वस्त्र कुप्य मानो।
वस्त्रों में गद्दी पर कैसे, आत्म ध्यान जानो॥
अम्बर तजकर बनें दिगम्बर, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं कुप्य (वस्त्र) समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

सोना पीतल ताम्र आदि के, बर्तन भाण्ड कहे।
मिर्च मसालों में आतम रस, किसने कहो चखे॥
नाथ! आप सम भाण्ड तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं भाण्ड (स्थानान्तरण) समस्याविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

(अंतरंग परिग्रह १४)

देव-शास्त्र-गुरु तत्त्व विषय की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन परिग्रह बन के, भाव गिरा जाएँ॥
तुम सम बस निर्दोष बनें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

क्रोध कषायों की ज्वाला से, आतम कली जली।
तब चैतन्य क्रोध से जलकर, फिरती गली-गली॥
तुम सम क्रोध कालिमा त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं क्रोधसर्प-विषविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

मान शिखर से रावण कौरव, कंश गिरे नीचे।
रहे न इनके वंश जगत् में, हम क्या-क्या सीखे?॥
नाथ! आप सम मान तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की,हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं मान-ईर्ष्याभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

ओ! री! माया तेरी छाया, सबको घुमा रही।
पिला-पिला कर विषयों का विष, सबको डुबा रही॥
तुम सब निश्छल हों तज माया, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं माया-वातरोग (गठिया) विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

लोभ बना जब लोक प्रदर्शन, निज दर्शन भूला।
लोभी की क्या? दुनियाँ होगी, क्यों रे तू फूला॥

नाथ! आप सम लोभ तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं लोभस्वार्थभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

हास्य नाम का नो-कषाय जो, सबको हँसा रहा।
हँसने से जग हम पर हँसता, परिग्रह वसा रहा॥
नाथ! आप सम हास्य तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं हास्यपरिग्रहविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

पंचेन्द्रिय के विषय सुखों में, जो आसक्त हुआ।
राग रूप रति नो-कषाय वह, परिग्रह बना हुआ॥
नाथ! आप सम रति हम त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं रति-आसक्तिभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२९॥

द्वेष भाव अलगाव रहा जो, कहो अरति उसको।
परिग्रह भाव बना दुख देता, दे सद्गति किसको॥
नाथ! आप सम अरति तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं अरतिबहिष्कारभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३०॥

उपकारक के विरह भाव को, शोक कहा जाता।
परिग्रह बनकर शोक क्लेश दे, आर्त्त रौद्र दाता॥
नाथ! आप सम शोक तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं शोक-आकुलव्याकुलताभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३१॥

सात तरह के डर से डरना, भय की यह गीता।
मिथ्यादृष्टि डरकर मरता, समदृष्टि जीता॥
नाथ! आप सम अभय बनें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं भय-अहितभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३२॥

देख घिनौना घृणा हुई जो, वही जुगुप्सा है।
परिग्रह बनकर प्रेम हरे वह, अद्‌भुत किस्सा है॥
नाथ! आप सम तजें जुगुप्सा, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं जुगुप्साघृणाभावविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३३॥

जिन भावों से पुरुष जनों में, रमण-भावना हो।
रमें पुरुष जन में तो कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम नारी वेद तजें हम, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-स्त्रीपर्यायविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३४॥

जिन भावों से नारी जन में, रमण-भावना हो।
रमें नारियों में तो कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम पुरुषवेद हम त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदबाधाविनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३५॥

जिन भावों से नर नारी में, रमण भावना हो।
बने नपुंसक तो फिर कैसे, श्रमण-साधना हो॥
तुम सम वेद नपुंसक त्यागें, ऐसी शिक्षा दो।
आदिनाथ निर्ग्रन्थ पंथ की, हमको दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद (असफलता) विनाशनसमर्थ श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३६॥

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

गुण-गण जो पहचानते, वे गाते गुण गीत।
गुण-गण को पहचानने, आदि प्रभु मनमीत॥

(सखी)

जय आदिनाथ जिन स्वामी, जय सुखदाता शिवधामी।
जय गीत गान की गाथा, जय धर्म कथा वरदानी॥१॥

जब दुनियाँ भटक रही थी, भोगों को गटक रही थी।
जब कल्पवृक्ष ना पाए, तो गम में मटक रही थी॥२॥
जब चारों ओर अँधेरा, पग-पग पर दुख का डेरा।
जब जीवन की नैया को, भव-तूफानों ने घेरा॥३॥
तब ही जिनवर तुम आए, जीवों को धैर्य दिलाए।
षट्कर्मों को बतला के, हितपथ दे दीप जलाए॥४॥
तुमने सबसे पहले ही, जिन धर्म-ध्वजा फहरायी।
तब ही तुम प्रथम जिनेशा, हो हम सबको सुखदायी॥५॥
फिर अंक और अक्षर की, निज बिटियों को दी शिक्षा।
कृषि करो सभी जन अथवा, ऋषि बनो भजो लो दीक्षा॥६॥
यों शिक्षा देकर ले ली, जिन-दीक्षा पाप हरण को।
दे मोक्षमार्ग की शिक्षा, सज बैठे मुक्ति वरण को॥७॥
मुक्ति से ब्याह रचाकर, शिव मोक्ष राज्य को पाए।
हम चलें आपके पथ पर, सो पूजन पाठ रचाएँ॥८॥
हम पूजन पाठ न जानें, नहि भक्ति भाव पहचानें।
'सुव्रत' हैं भक्त निराले, बस शीश झुकाना जानें॥९॥

(दोहा)

शीश झुके तो ईश का, नहीं दूर शिवधाम।
तभी करें आदीश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री वृषभनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

थूबौन के आदीश जी, भेजे पिपरई गाँव।
जहाँ पार्श्व प्रभु की रही, हम पर मंगल छाँव॥
गर्मी वर्षा शीत में, भक्त भक्ति का वास।
वृषभनाथ विधान से, दुख दरिद्र हो नाश॥
दो हजार ग्यारह रहा, शनिदिन थर्टी फर्स्ट।
पिपरई में पूरा हुआ, हटे कर्म की डस्ट॥
'विद्या' गुरु को सौंप कर, जीवन का हर गीत।
'मुनिसुव्रतसागर' रचे, आदिनाथ संगीत॥
पढ़ो सुनो अथवा करो, श्री आदीश विधान।
विश्व शान्ति का भाव हो, फिर अपना कल्याण॥

॥ इति शुभं भूयात्॥

आरती

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया ॥

नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आए,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए।
प्रभु जी सब जन मंगल गाए ॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया ॥१॥

आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराये,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाए।
प्रभु जी मोक्षमार्ग बतलाए ॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया ॥२॥

सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आए,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी झूम-झूम सिर नाये ॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया ॥३॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया ॥

❑ ❑ ❑

श्री अजितनाथ विधान

जय बोलिए

कर्मशत्रु के विजेता, हम सबके धर्मनेता, मोक्षमार्ग प्रणेता, मुक्ति के विनेता, शुद्धात्मा के सृजेता, गुणों के विक्रेता, आत्मविजयी, महामृत्युंजयी परमपूज्य

श्री अजितनाथ भगवान् की जय॥

स्थापना

(दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो, हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथाएँ, रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव, -रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गए।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गए॥

हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।
जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कामांध से व्याकुल हमें तो, गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिलीं ना, मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात-दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह, सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले नैवेद्य अर्पण, से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना, खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन-दीप से निज-दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

हम आज तक तो जल न पाए, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या, ज्ञान तप निष्फल रहे॥
अब धूप खे जिन रूप पाएँ, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या, मोह के फल मिल रहे।
भूले तुम्हें भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पाएँ, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

अजितनाथ प्रभु की कथा, भक्त सुनाएँ आज।
कर्मशत्रु को जीतने, दो चरणों का राज॥

(ज्ञानोदय)

वत्स देश का नगर सुसीमा, वहाँ विमलवाहन राजा।
सुन्दर चतुर गुणी उत्साही, करे धर्ममय हित काजा॥
सदा धर्म से पुण्य, पुण्य से, अर्थ भोग हो प्राप्त यहाँ।
इसीलिए वह जैनधर्म का, धर्मात्मा हो गया अहा॥१॥

किसी समय वह हो वैरागी, रत्नत्रय धर संत बना।
जिनदीक्षा ले आत्म ज्ञानमय, निर्मोही निर्ग्रन्थ बना॥
तीव्र तपस्या करके उसने, ग्यारह अंगों को जाना।
भावनाएँ फिर सोलह भाकर, तीर्थंकर का पद बाँधा॥२॥

और अन्त में णमोकार को, जप-जप समाधिमरण किया।
विजय अनुत्तर स्वर्ग पहुँचकर, स्वर्ग सुखों को वरण किया॥
पन्द्रह माहों तक देवों ने, दिव्य रत्न सुर बरसाये।
फिर सोलह सपनों को देकर, सुर से भू पर प्रभु आए॥३॥

जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, मेरु पर अभिषेक किया।
अजितनाथ शुभ नामकरण कर, न्यारा ताण्डव नृत्य किया॥
जन्म हुआ तो बन्धु वर्ग भी, रिपुओं पर जय विजय किए।
सभी शत्रुओं पर जय पाकर, अजितनाथ साम्राज्य किए॥४॥

आयु बहत्तर लाख पूर्व की, देह सुनहरी सी पाई।
साढ़े चार सौ धनुष ऊँचाई, सुख सामग्री सब पाई॥
कभी महल की छत पर बैठे, उल्कापात तभी देखा।
भव-भोगों से विरक्त हो तब, फिर वैराग्य पाठ सीखा॥५॥

लौकान्तिक देवों ने आकर, तब वैराग्य सराहा था।
जिससे प्रभु ने जूठन जैसा, राज्य पाठ सब त्यागा था॥

किया राज्य-अभिषेक पुत्र का, उसे राज्य अपना सौंपे।
बैठ सुप्रभा शिविका पर फिर, स्वयं सहेतुक वन पहुँचे॥६॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः कह कर, सप्तपर्ण तरु तल में जा।
एक हजार राजाओं के सह, नियम लिया फिर बेला का॥
जिनदीक्षा ली साँयकाल में, ज्ञान मनःपर्यय पाया।
ब्रह्मा नृप ने प्रथम दान दे, पंचाश्चर्य पुण्य पाया॥७॥
मौन रहे छद्मस्थ काल में, बारह बरस तपस्या की।
केवलज्ञानी धर्मात्मा बन, हर ली कर्म समस्या भी॥
समवसरण में दिव्य देशना, देकर धर्मघोष की जय।
अंतर बाहर का वैभव पा, चमत्कार पाया अतिशय॥८॥
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, अजित नाम सार्थक करके।
एक माह तक योग निरोध कर, सारे कर्म नष्ट करके॥
प्रातः प्रतिमायोग धार कर, मोक्ष पधारे स्वामी जी।
अजितनाथ सम हम बन जाएँ, अतः करें प्रणमामि जी॥९॥
अजितनाथप्रभु के शासन में, सगर चक्रवर्ती जन्मा।
जिसके साठ हजार पुत्र थे, सुन्दर गुणी महा धन्या॥
शुद्ध वंश के पुत्र पिता के, आज्ञाकारी भी होते।
अतः पिता की आज्ञा से वे, धर्म कार्य से अघ धोते॥१०॥
भरत चक्रवर्ती से निर्मित, श्री कैलाश शिखर पर जो।
रत्नों के चौबीस जिनालय, अरिहंतों के मंदिर वो॥
चारों ओर उसी पर्वत के, परिखा कर गंगा भर दी।
दण्डरत्न से कार्य पूर्ण कर, जिनशासन की जय कर दी॥११॥
पुत्रों के मरने की झूठी, खबर सगर ने जब पाई।
भागीरथ को राज्य दिया तब, जिनदीक्षा फिर अपनायी॥
उधर पिता के मुनि बनने की, खबर मिली जब पुत्रों को।
तो पुत्रों ने जिनदीक्षा ले, धारा शुभ चारित्रों को॥१२॥

पिता पुत्र सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे तप करके।
और यहाँ भागीरथ राजा, बने संत सब तज करके॥
ध्यानी मुनि भागीरथ जी के, चरण पखारे इन्द्र महान्।
वह जलधारा गंगा पहुँची, तब से गंगा तीर्थ समान॥१३॥

भागीरथ गंगा के तट से, तप करके निर्वाण गए।
सुनकर कथा धर्म की हम सब, जिन-गंगा पहचान गए॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाए।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाए॥१४॥

द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।
जिनका नाम अकेला सुनकर, भक्तों के कल्याण हुए॥
फिर भी गुरु ग्रह बाधा हरने, अज्ञानी प्राणी डोलें।
ग्रह क्या? मृत्युंजय बनते जो, अजितनाथ की जय बोलें॥१५॥

शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या?, हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥
किन्तु आप सम चिदानन्द को, 'सुव्रत' पाने ललचाए।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आए॥१६॥

(दोहा)

अजितनाथ को पूजकर, करें प्रार्थना आज।
कर्म शत्रु पर जय मिले, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(अडिल्ल)

बड़े-बड़े पर-ज्ञानी जो भी आ गए।
अजितनाथ से मात तुरत वो खा गए॥
हमको आक्षेपणी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं आरोप-प्रत्यारोपविनाशक-आक्षेपणीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

अजितनाथ ने परमत खंडित कर दिया।
जिनमत मण्डित उच्चासन पर कर दिया॥
हमको विक्षेपणी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं न्यायप्रदायक-विक्षेपणीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

जो संसार दुखों के अद्भुत काव्य हैं।
जिनको सुन भयभीत हुए हम भव्य हैं॥
हमको संवेदनी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं दीनताभावनाशक-संवेदनीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

राग आग से बचने देती ज्ञान जो।
जिन दीक्षा देकर करती निर्वाण जो॥
हमको निर्वेदनी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं इष्टसिद्धिपूरक-निर्वेदनीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

नारी-तन से रागादिक के जो वचन।
करने वाली कथा नशाती जिन धरम।
तुम सम स्त्री-कथा त्यागने, द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं स्त्रीअपवाद-स्त्रीकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

अर्थ उपार्जन रक्षण के उपदेश जो।
करने वाली कथा हरे जिन - भेष को॥
तुम सम अर्थ कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं अर्थविकार-अर्थकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

भोजन पान मसालों वाले ज्ञान जो।
करने वाली कथा हरे चितज्ञान को॥
तुम सम भक्त - कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं भक्तदोष-भक्तकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

राजाओं के वैभव का अनुराग जो।
करने वाली कथा हरे वैराग्य को॥
तुम सम राजकथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं राजरोग-राजकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

कृत कारित अनुमोदन चोरी चोर की।
करने वाली कथा हमें झक - झोरती॥
तुम सम चोर कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं चोरभय-चोरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

जिससे वैर बढ़ें जन्में नशते नहीं।
ऐसे वचन आपको सच! जचते नहीं॥
तुम सम वैर कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं वैरविद्वेष-वैरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

जिससे पाखण्डी जन का सत्कार हो।
आतम के स्वरूप का हा-हाकार हो॥
पर-पाखण्ड कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं परप्रभाव-परपाखण्डकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

देश नगर या ग्राम शहर जो धाम हैं।
उनके रागी वचन कष्ट संग्राम हैं॥
तुम सम देश कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं स्वार्थभाव-देशकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

जिससे भाषा बोली या विज्ञान से।
राग-द्वेष कर हटते आतम ज्ञान से॥
तुम सम भाष-कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं मन्दबुद्धि-भाषकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

जिनमें तप स्वाध्याय न हो वैराग्य भी।
वो अकथा जो जला रही चित बाग भी॥
तुम सम अकथा तजने हमको द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं तत्त्वविकार-अकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

राग-भोग जो बढ़ा रही वचनावली।
दान धर्म जो हरती आतम की कली॥
तुम सम विकथा तजने हमको द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं दानधर्मविकार-विकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

कर्ण मर्म के भेदी भीषण जो वचन।
करें हृदय जो छल्ली-छल्ली चित् धरम॥
निष्ठुरत्व-कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं निष्ठुरत्वभाव-निष्ठुरत्वकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

कहें पीठ के पीछे पर के दोष जो।
जिन-दर्शन के जिससे उड़ते होश हो॥
पर-पैशून्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं अवर्णवाद-परपैशून्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

काय कुचेष्टा रागजनक जो हास्य मय।
ऐसी कथा करे आतम को कष्ट मय॥
कन्दर्प कौत्कुच्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं हास्य-कायकुचेष्टाकन्दर्पकौत्कुच्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

जिनसे होते विरह-कलह अवसाद भी।
वही कथाएँ हरती आतम स्वाद भी॥
तुम सम डंबर कथा त्याग को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं विरहकलह-अवसादडंबरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

बिना प्रयोजन जो जन बक-बक बोलते।
इसी कथा से अपनी लघुता खोलते॥
अब मौखर्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं लघुता-मौखर्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

अपने मुख से अपने गुण-गण की कथा।
नीच गोत्र दे करती अपनी दुर्दशा॥
आत्म प्रशंसा कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं नीचगोत्र-आत्मप्रशंसाकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

पर-दोषों को कहने करना सैर भी।
नीच गोत्र दे कलह कराये वैर भी॥
पर-परिवादन कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं अवगुण-परपरिवादनकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

घृणा अन्य से करवाती जिसकी कथा।
समकित हरती भरती आतम में व्यथा॥

पर-जुगुप्सा-कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं घृणा-परजुगुप्साकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

जिन वचनों से पर को पीड़ा कष्ट हो।
यही कथा चेतन को करती भ्रष्ट हो॥
पर-पीड़ा की कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥

ॐ ह्रीं भ्रष्टता-परपीड़ाकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(घत्ता)

पापों की खानी, व्यसन कहानी, दोष कथा की, मनमानी।
जिनवर की वाणी-जग कल्याणी, सुनी कथा ना, वरदानी॥
तब ही दुख पाए, प्रभु नहिं भाए, कैसे हों आतमज्ञानी।
अब अजित ईश को, टेक शीश को, प्राप्त करें मुक्तिरानी॥
जित शत्रु के अजित की, जय जय बारम्बार।
अर्घ्य समर्पित हम करें, पाएँ स्वरूप सार॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

अजितनाथ भगवान्, तुम चैतन्य विलास हो।
करें आज गुणगान, हमको भी संन्यास दो॥

(शेरचाल)

जय-जय श्री सर्वज्ञ देव अजितनाथ जी।
जय राग-द्वेष जीत बने वीतराग जी॥
जय-जय हितोपदेशी दिए दिव्य देशना।
हे! घातिया के घाति सुनो भक्त-प्रार्थना॥१॥

तुम मात-पिता बन्धुवर्ग राज्य छोड़ के।
सब रिश्ते-नाते तोड़ चले मुख को मोड़ के॥

निर्ग्रन्थ पंथ धार-धार तुम तो दौड़ते।
हम रिश्ते नाते जोड़-जोड़ माथा फोड़ते॥२॥

वे लोग रोज हमें देते ज्ञान स्वार्थ का।
सो हमने दिया गला घोंट परम-अर्थ का॥
परिणाम आज सामने है पाप कर्म के।
है दुनियाँ खूब दुखी दिखे लाज शर्म से॥३॥

ये कर्म ही तो देते हमें नर्क सी व्यथा।
सम्पूर्ण कौन कहे पीड़ा दर्द की कथा॥
अब व्यथा कथा नाशने उदास बनें हम।
ले भक्ति का सहारा प्रभु-दास बनें हम॥४॥

कभी नर्क से निकल के पशु योनि को छुए।
जहाँ छेद-भेद भूख-प्यास से दुखी हुए॥
तिर्यंच जन्म में स्वरूप का नहीं हो भान।
अब तीर्थ धाम बनने करें आप को प्रणाम॥५॥

पर्याय देव की मिली तो भोग-भोग भोग।
हम भूल गए आत्मा परमात्मा के योग॥
प्रभु! आपकी कृपा से बने अर्चना के भाव।
अब ध्यान दीजियेगा भक्त का मिटे विभाव॥६॥

जिस जन्म को तरसते स्वर्ग लोक के भी बोल।
वह जन्म हमको मिल गया है कोंड़ियों के मोल॥
ये मिट्टी वाला तन तथा ये मस्ती वाला मन।
है नाशवान् जल के बुलबुले सा नर-जीवन॥७॥

इस जन्म का उद्देश्य है, हो भक्ति आपकी।
पर लक्ष्य भ्रष्ट रच रहे हैं कथा पाप की॥
जिन तीर्थ क्षेत्र धाम नाम आपका ही भूल।
ये माटी वाला तन बना है माटियों की धूल॥८॥

हे अजितनाथ! विश्व में है आपकी कमी।
ये दास भी है दुखी भरी आँख में नमी॥
अब अर्चना रचाई गीत गाए आपके।
बस विश्व से हो दूर कर्म मोह पाप के॥९॥
नर देह मिट्टी में मिलेगी इसके पहले नाथ।
आशीष मिले आपका हो शीश पै भी हाथ॥
बस भावना हमारी जीतें मोह कर्म पाप।
हम भी विराजेंगे वहाँ जहाँ विराजे आप॥१०॥

हमको स्वरूप लाभ होये तत्त्व का भी ज्ञान।
सो अजितनाथ आपकी रचाई भक्ति गान॥
विश्वास हमको है यही हो प्रार्थना मंजूर।
फिर वस्तु वो है कौन सी 'सुव्रत' से जो हो दूर॥११॥

(दोहा)

जिन - दर्शन से प्राप्त हो, निज - दर्शन का ज्ञान।
अतः द्रव्य ले भाव मय, जजें अजित भगवान्॥
स्वारथ का संसार है, स्वार्थ रहित जिनधाम।
परमारथ की प्राप्ति को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री अजितनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, अजितनाथ-विधान॥
दो हजार तेरह मई, शुक्र तीन तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ करो...)

प्रभु अजित जिनेश्वर, हे! सर्वेश्वर, आप हमें भी तारें।
हम आरति आज उतारें।
प्रभु वित्त राग भव के त्यागी[२], तुम साँचे पूज्य वीतरागी[२]
हो तारणतरण जहाज शान्ति की धारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥१॥
विजया जितशत्रु के नन्दा[२], जग-ज्येष्ठ जिनन्दा आनन्दा[२]
जिन सूरज-चंदा सम हमको उजयारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥२॥
सब पूज आपको सिर नाएँ[२], बहु भक्ति-सहित झूमें गाएँ[॥२]
क्यों भक्त रहें फिर पीछे खड़े पुकारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥३॥
पर-मंत्र-तन्त्र ग्रह विष-बाधा[२], भय भूत डाकिनी जल बाधा[२]
प्रभु अजित-भक्त तो इनको सहज निवारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥४॥
तुम सबका ही कल्याण करो[२], सबको इच्छित वरदान करो[२]
अब 'सुव्रत' पाने 'विद्या' चरण निहारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥५॥

श्री शम्भवनाथ विधान

जय बोलिए

हर कार्य को सम्भव करने वाले, हर समस्या को हरने वाले, आत्मा में रमने वाले, मोक्ष में विहार करने वाले, संसार द्वन्द्व हरने वाले, भक्तों की झोली भरने वाले परमपूज्य

श्री शम्भवनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥
काल अनन्त गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥

शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ाके भक्त आपके मौन हैं॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ाएँ निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भेद-ज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बढ़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्‌गुरु अपनाये।
सद्‌गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएँ, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-शुक्ल-पूर्णिमायां जन्म-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल-पूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(सोरठा)

शम्भवप्रभु जिनराज, विश्वकार्य सम्भव करो।
गुण गाएँ हम आज, निज स्वभाव में अब धरो॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असम्भव सम्भव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा - चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गाएँ, बारम्बार नमोऽस्तु हो ॥१॥

एक विमलवाहन राजा था, वह ऐसा करके चिंतन।
यह संसारी जीव मृत्यु के, बीच खोजता है जीवन॥
मोहकर्म के विकट उदय से, यमराजों के दाँतों में।
फँसकर भी बचना नहिं चाहे, धिक्! धिक्! मिथ्या बातों में ॥२॥

सीमित आयु को यह प्राणी, शरण माँगता कण-कण में।
यह मत उसको यम के मुख में, पहुँचा देता क्षण-क्षण में॥
हाय! हाय! अज्ञानी चेतन, फिर भी ना वैराग्य धरे।
दुखवर्धक भव-चक्र भ्रमण के, कर्तव्यों से राग करे ॥३॥

तृष्णा की संतप्त धूप से, आकुल व्याकुल होकर के।
विषय भोग की जीर्ण नदी के, तट की छाया पा करके॥
विषय भोग की करे सुरक्षा, और स्वयं को नष्ट करे।
अतः अनन्तानन्त भवों में, शुद्धातम को भ्रष्ट करे ॥४॥

यह चिंतन कर विरक्त हो फिर, मोक्षमार्ग स्वीकार किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
फिर संन्यास क्रिया से तन तज, ग्रैवेयक अहमिन्द्र बने।
स्वर्ग त्याग शम्भव नृप बनकर, मेघ देख वैराग्य धरे ॥५॥
नर तन में यम नर्तन करके, नर तन का ही नाश करे।
प्रथम दगा दे दाग बाद में, इस पर ना विश्वास करे॥

तन से राग भोग नीरस जो, मूरख उन्हें सरस समझें।
यह संसार असार जानकर, ज्ञानी इन्हें तजें सुलझें ॥६॥

निज वैभव रत्नत्रय पाकर, जिन वैभव को पा जाओ।
आप स्वयं यमराज बनो तो, मृत्युंजय बन सुख पाओ॥
सार सार का सार ग्रहण हो, लौकान्तिक यों वचन कहे।
फिर सिद्धार्थ पालकी में प्रभु, बैठे वन को गमन करे ॥७॥

दीक्षित होकर बने स्वयंभू, ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा।
सुरेन्द्रदत्त को प्रथम दान का, मिला पुण्य सौभाग्य अहा॥
चौदह वय छद्मस्थ गुजारी, बेलामय निज ध्यान लगा।
चार घातिया जड़ें उखाड़ीं, पाया केवलज्ञान महा ॥८॥

देवों ने कैवल्य महोत्सव, खूब मनाया नाच बजा।
अनन्तचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण फिर खूब सजा॥
जिसकी ज्योति 'जिन' से होती, 'जिन' के मोती चित् खोती।
जिन महिमा में गद्-गद् जिनकी, आतम रोती दुख धोती ॥९॥

ऐसे शम्भवप्रभु ने सुन लो, चन्द्र तिरस्कृत कर डाले।
राहू केतु शनि कृष्ण शुक्ल के, पक्ष बहिष्कृत कर डाले॥
और अंत में एक माह जब, आयु कर्म अवशिष्ट रहा।
गिरि सम्मेदशिखर पर धारा, प्रतिमायोग विशिष्ट रहा ॥१०॥

जन्म शाम को मोक्ष शाम को, पाए नन्तकाल विश्राम।
कार्य असम्भव सम्भव करने, भक्त मुक्ति को करें प्रणाम॥
मिले चिदातम निज शुद्धातम, अगर कृपा हो तेरी नाथ।
अतः भक्ति का रचा उपक्रम, रहे हमारे सिर पर हाथ ॥११॥

पर जिन महिमा जो नहिं जानें, जिन्हें आप पर नहिं विश्वास।
यहाँ-वहाँ सिर फोड़ें भटकें, करके अपना सत्यानाश॥
गुरुग्रह का वस करें निवारण, नाथ! आपका भजकर नाम।
वे क्या जानें शम्भव प्रभु जो, दें भव सुख भी दें निर्वाण ॥१२॥

सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥
लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो,जिनपद का सम्मान किया ॥१३॥

(दोहा)

अश्व चिह्नमय शोभते, जिनवर शम्भवनाथ।
विश्व समस्या दूर हो, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(चौपाई)

उपशम सम्यग्दर्शन तज के, क्षायिक पाए प्रभु को भज के।
पाएँ हम श्रद्धा वरदान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं संकल्पशक्तिप्रदाता श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

उपशम सम्यक् तजे चरित्रा, बने स्वरूपे चरणं चित्रा।
पाएँ चरणाचरण महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं संस्कारगुणप्रदाता श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

अभयदान क्षायिक तुम त्यागे, सिद्धालय में आप विराजे।
दो हमको करुणा का दान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं क्रूरभावविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

क्षायिक लाभ आपने छोड़ा, मुक्ति रमा से नाता जोड़ा।
कोई कभी न हों हैरान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं लाभ-हानिबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

स्वामी! क्षायिक भोग तजे हैं, चिदानन्द में खूब मजे हैं।
चिदानन्द दो शुद्ध महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं भोगबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

प्रभु! क्षायिक उपभोग तजे हैं, सिद्ध गुणों से खूब सजे हैं।
स्वानुभूति दो सिद्ध महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं अभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

तजकर क्षायिक वीर्य जिनेशा, बने शुद्ध आतम सिद्धेशा।
आत्मशक्ति हम पाएँ शान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं दौर्बल्यबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

सुमतिज्ञान पूरा हर डाला, आत्मज्ञान का मिला उजाला।
ज्ञान-शक्ति दो सम्यग्ज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं मन्दबुद्धिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

हर कर सुश्रुतज्ञान विभावी, ज्ञान पिण्ड मय हुए विरागी।
निज पर श्रुत की हो पहचान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं आगमविरुद्धमान्यता विनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

अवधिज्ञान तज बने अनन्ता, ज्ञान स्वभावी सिद्ध महंता।
दो मर्यादित पथ आसान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं आत्मभ्रांतिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

ज्ञान मनःपर्यय के नाशी, निज में तिष्ठत स्व-पर प्रकाशी।
चंचल मन पर लगे लगाम, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं मनोविकारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

कुमतिज्ञान को धूल चटायी, जिनशासन की ध्वज फहरायी।
बनें दिगम्बर पूज्य महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं मिथ्यामतखण्डनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

कुश्रुतज्ञान आपने खोया, मिथ्याशासन फक्-फक् रोया।
उच्चासन पाएँ आसान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रुतविकारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

विभंगज्ञान का किया सफाया, निजानुभूति का अमृत पाया।
हो जयवन्त श्रमण उत्थान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं शिथिलाचारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

आप चक्षुदर्शन के नष्टा, निज में रमते ज्ञाता-दृष्टा।
हमको मिले भेद-विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं दर्शनदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

आप अचक्षुदर्शन हारी, निज मय लोका-लोक निहारी।
विश्वशान्ति हो जग कल्याण, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं देहदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

अवधिदर्शन को तुम त्यागे, भाव पराश्रित डरकर भागे।
शत्रु-मित्र को सम पहचान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं पराश्रयदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

दान क्षयोपशम आप तजे हो, लोक शिखर चित्रूप वसे हो।
आतम ज्ञान ध्यान दो दान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं दातादानबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय...। १८॥

लाभ क्षयोपशम तजे देव हो, बने आप खलु चिच्च देव हो।
दो चिद्रूपभाव का गान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं आहारबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

भोग क्षयोपशम के तुम त्यागी, बन बैठे आतम के स्वादी।
पाएँ परमानन्द रुझान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं सांसारिकबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

तजे क्षयोपशम के उपभोगा, शुद्धातम निजमय उपयोगा।
दो आसान शुद्ध गुण खान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं उभयलोकबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

वीर्य क्षयोपशम तजकर वीरा, आप बने चैतन्य शरीरा।
हम पाएँ चेतन बलवान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं पराजयभावविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

तजे क्षयोपशम सम्यग्दर्शन, तरस रहे हम करने दर्शन।
पाएँ वीतराग विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं कुतत्त्वश्रद्धाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

तजे क्षयोपशम चरण सहारा, "चारित्तं खलु धम्मो" धारा।
देना हमें भेद-विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं कुसंस्कारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

तजे संयमासंयम स्वामी, आप बने यमराज विरामी।
पाएँ ब्रह्मरूप निजपान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं हिंसाप्रवृत्तिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

(सखी)

गति नरक भाव तुम तज के, चैतन्य बने दुख तज के।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं नरकगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

वध बन्धन पशु गति हर्त्ता, प्रभु नहिं हैं भोक्ता कर्त्ता।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

नर गति का चक्र मिटाया, सुख सिद्धचक्र का भाया।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

सुर गति त्यागी विष थैली, फिर पाए मुक्ति सहेली।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं सुरगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२९॥

धर क्षमा क्रोध तज पाए, अप्पा आपे में लाए।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं क्रोधविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३०॥

पथ मान त्याग का भाया, मक्खन आतम का खाया।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं मानविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३१॥

प्रभु तुमने माया मारी, सो पाई शिवपुर गाड़ी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं मायाविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३२॥

तज लोभ बनें निज लोभी, सो बन बैठे निज-भोगी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं लोभविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३३॥

प्रभु नारी वेद नशाए, पर मुक्ति रमा अपनाये।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३४॥

प्रभु पुरुष वेद हर डाले, पर निज वेदन चख डाले।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३५॥

प्रभु वेद नपुंसक हारी, चैतन्य दशा श्रृंगारी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३६॥

प्रभु मिथ्यादर्शन त्यागे, निज दर्शन धर निज पागे॥
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शनविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३७॥

अज्ञान तजे छद्मस्था, सर्वज्ञ बने निज स्वस्था।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं अज्ञानविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३८॥

प्रभु तजे असंयम पूरा, सज बैठे संयम शूरा।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं असंयमविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३९॥

तज असिद्धत्व जंजाला, प्रभु सिद्ध बने गुणमाला।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं असिद्धत्वविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४०॥

प्रभु लेश्या कृष्ण नशाए, चित भाव शुद्ध फल पाए।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४१॥

जब लेश्या नील नशायी, गुण गाने दुनियाँ आई।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं नीललेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४२॥

लेश्या कापोत हरण कर, शिव पहुँचे मुक्ति वरण कर।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं कापोतलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४३॥

प्रभु लेश्या पीत विनाशे, चिद्रूप अवस्था वासे।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं पीतलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४४॥

प्रभु लेश्या पद्म नशाए, पर परिणति दूर भगाए।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं पद्मलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४५॥

प्रभु तजे शुक्ल लेश्या को, बन गए मोक्ष हिस्सा वो।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णाते भगवंता॥

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४६॥

(लय : भव-वन में....)

चैतन्य दशा जो जीवों की, उसमें कर्मों का हाथ नहीं।
वो भाव पारिणामिक होता,जिसमें पर का कुछ साथ नहीं॥
वह भव्य भाव कहलाता है, जो रत्नत्रय प्रकटा देता।
जब सिद्ध बने तो भाव वही, शिव आतम दूर हटा देता॥
भव्यभाव बस प्रकट हो, जो है टिकिट समान।
शम्भवप्रभु सम शीघ्र हम, बनें सिद्ध भगवान्॥

ॐ ह्रीं भव्यप्रकाशीभव्यभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४७॥

वे कितने भी पुरुषार्थ करें, पर रत्नत्रय प्रकटा न सके।
वे हाय! जीव कैसे होंगे, जिनको करुणा पिघला न सके॥
है चित्र विचित्र यही घटना, पर दुख से भव्यातम रोती।
नित जीव अभव्य सहें भव दुख, ऐसी भी क्या परिणति होती॥
पीर अभव्यों की हरो, शम्भव प्रभु भगवान्।
सुखी रहें जग जीव सब, ऐसा दो वरदान॥

ॐ ह्रीं अभव्यभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४८॥

पूर्णार्घ्य

हम शुद्ध-बुद्ध चैतन्य पिण्ड हैं, चिदानन्द आनन्द-कंद।
पर भाव विभाव हुआ चेतन, तो राग-द्वेष जग द्वन्द्व-फंद॥
अब दया करो या प्रभु करुणा, हे नाथ! आपका हाथ मिले।
बस शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, बनने मुक्ति का साथ मिले॥
परभावों का नाश हो, मिले शुद्ध निज भाव।
अतः अर्घ्य अर्पण करें, शम्भव प्रभु की छाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

जो पर्याएँ मिल रही, वो परभाव विभाव।
शम्भवप्रभु को हो नमन, चित भावाय स्वभाव॥
शुद्ध भाव में रमण को, गाएँ हम गुणमाल।
हो परभाव विभाव क्षय, जय-जय हो जयमाल॥

(सुविद्या) (लय- बारह भावना)

जय शम्भवप्रभु जय शम्भवप्रभु, जय शम्भवप्रभु नाथ।
जिनवर में चैतन्य झलकता, अतः झुकाया माथ॥
कृपा चाहिए बस इतनी सी, सुनते रहना बात।
साथ मिले या नहीं मिले बस, सिर पर रख दो हाथ॥१॥
अगर आप ने हाथ रखा तो, होगा तुम से राग।
होता प्रभु से राग वही तो, कहलाता वैराग्य॥
अगर हमें वैराग्य हुआ तो, आग राग को नाश।
भक्त आपके पास विराजें, ऐसा है विश्वास॥२॥
हाथ साथ पर मिला न इससे, हुआ स्वभाव विभाव।
हाय-हाय! फिर राग कथाएँ, क्षण-भंगुर उलझाव॥
कभी क्षायोपशम उपशम आदिक, जो चैतन्य विभाव।
इनमें फँसना सुन लो भक्तो, है दुख का प्रस्ताव॥३॥
यह तो सब मन जाने समझे, फिर क्यों करता राग।
अब तक हम यह समझ न पाए, खिला न चेतन बाग॥

राग जलाने बाग खिलाने, लेकर आए आश।
अपने जैसा हमें बना लो, करना नहीं उदास ॥४॥
नहीं भेंट में हम कुछ लाए, पर यह है विश्वास।
खाली हाथ नहीं लौटेगा, भक्त आपका दास॥
जिनवर! आप नहीं कुछ दें पर, हो अर्जी मंजूर।
फिर भी खाली लौटाने का, नहीं यहाँ दस्तूर ॥५॥
या तो मन में प्रभु आओ या, हमें बुला लो पास।
मात्र प्रयोजन यही भक्त का, टूटे ना विश्वास॥
अच्छा बुरा बने या बिगड़े, सबमें तेरा नाम।
शुद्ध बनें ना जब-तक तब-तक, 'सुव्रत' करें प्रणाम ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री शम्भवनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, शम्भवनाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, शुक्र दसक तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

आरती

(लय : दिल के अरमां...)

पूजकर शम्भवप्रभु की मूर्ति।
सिर झुका, हम कर रहे हैं आरती॥

माँ सुसेना जित - अरि के पुत्र हो।
त्याग कर दुनियाँ धरे चारित्र हो॥
हम सभी के जिन दिगम्बर भारती।
सिर झुका.... ॥१॥

देखकर बादल दलों की फिरकियाँ।
खोल दी तुमने चिदातम खिड़कियाँ॥
मोह की जिससे घटाएँ हारतीं।
सिर झुका.... ॥२॥

देह-घट मरघट सा जिसमें विष भरा।
ज्ञान अमृत आपने तप से भरा॥
अब करो हमको अमर शिव सारथी।
सिर झुका.... ॥३॥

जिस पै हो करुणा कृपा जिनदेव की।
बाल न बांका उसका हो स्वयमेव ही॥
अब कृपा की धार दो जो तारती।
सिर झुका.... ॥४॥

नाथ! तेरी आरती सुबह शाम हो।
घी-दीया बाती न दूजा काम हो॥
आत्मा 'सुव्रतमुनि' की पुकारती।
सिर झुका.... ॥५॥

❑ ❑ ❑

श्री अभिनन्दननाथ विधान

जय बोलिए

हम सबके दर्शनीय, हम सबके वन्दनीय, हम सबके अर्चनीय, हम सबके पूजनीय, हम सबके अभिनन्दनीय, परमपूज्य

श्री अभिनन्दननाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥
तुमने गुण वन्दन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥
हम हैं संसारी प्राणी, भव-आक्रन्दन में चीखें।
क्या वन्दन नन्दन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचाएँ पूजा, बस भक्त आपके होके॥
कर्मों के बन्धन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

(दोहा)

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाए चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥
यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुए पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षणभंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥
अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमाएँ।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जाएँ॥
हैं भक्ति-पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुए हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति-दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान-ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन-रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥
हमें अपने पास बुलाकर, निज परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न ना समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल चौदस मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

सत्य वचन से सिद्ध जो, अभिनन्दन जिनराज।
आनंदित नत हो कहें, जयमाला हम आज॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाए मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोऽस्तु हो अविराम॥१॥
एक महाबल सुन्दर राजा, धन-वैभव जिसका भारी।
चारों वर्णों का भी रक्षक, न्याय पुण्य गुण यश धारी॥
बहुत काल भोगों में गुजरा, किन्तु तृप्त जब नहीं हुआ।
तो वैराग्य धार मुनि बनकर, शाश्वत आतम रूप छुआ॥२॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बन्ध किया।
अगले भव में अभिनन्दन प्रभु, बनने का अनुबन्ध किया॥
तजकर देह अनुत्तर पहुँचा, जहाँ भोग स्वीकार किए।
फिर जिन-भक्ति सहित सुर तजकर, धरती पर अवतार लिए॥३॥
माँ ने सोलह स्वप्न देखकर, जिनवर को सिर टेक दिया।
जन्म त्रिलोकीनाथ लिए जब, इन्द्रों ने अभिषेक किया॥
नाम आपका अभिनन्दन रख, लगा टक टकी ताक रहे।
बना हजारों, नयन भुजाएँ, करके ताण्डव नाँच रहे॥४॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, राज्य तुम्हीं को पिता दिए।
तुम्हीं राज्य उपभोग करो फिर, पिता स्वयं वैराग्य लिए॥
राजा बनकर राज्य प्रजा को, सुखी गुणी सम्पन्न किया।
तभी आपको बनते मिटते, मेघ महल ने खिन्न किया॥५॥

विनाशीक भोगों का वैभव, नष्ट हमें भी कर देगा।
पला-पुसा यह शरीर हमको, नगर-नारि सम तज देगा॥
हुए विरागी तो लौकान्तिक, देवों ने आ पूजा की।
बैठ हस्तचित्रा शिविका में, वन में जा जिन-दीक्षा ली॥६॥

ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, गए अयोध्या अगले दिन।
इन्द्रदत्त राजा ने विधिवत्, किया भक्ति से पड़गाहन॥
निरंतराय आहार हुए तो, नभ में जय-जय देव कहें।
अहो! दान यह अहो! पात्र यह, दाता को भी धन्य कहें॥७॥

मन्द-मन्द महकी वायु फिर, रत्न पुष्प नभ से बरसे।
ढोल नगाड़े नभ में गूँजे, जिससे भू-अम्बर हर्षे॥
खाद्य वस्तु अक्षीण यही तो, पंचाश्चर्य कहे जय-जय।
वर्ष अठारह मौन धारकर, बिता दिया छद्मस्थ समय॥८॥

दीक्षावन में असन वृक्ष के, नीचे आतम ध्यान हुआ।
बेला लेकर साँयकाल में, प्रभु को केवलज्ञान हुआ॥
दिव्य अर्चना कर देवों ने, समवसरण फिर सजा दिया।
जिस पर कमलासीन आपने, बिगुल धर्म का बजा दिया॥९॥

धर्मवृष्टि कर आर्यखण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किया॥
प्रातःकाल बहुत मुनियों के, साथ परमपद प्राप्त किया।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, जीवन मरण समाप्त किया॥१०॥

भक्ति सहित अभिनन्दन प्रभु का, इन्द्रों ने गुणगान किया।
मना मोक्षकल्याणक सादर, स्वर्ग लोक प्रस्थान किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥११॥

ऐसे अभिनन्दन जिनवर जी, भव का वैभव हरण करें।
खुद निर्भय भय हरें हमारा, हम तो सादर चरण पड़ें॥
इनको गुरुग्रह तक सीमित कर, हो जाता है पाप महान्।
जिनका केवल सुमरण करना, ऋद्धि-सिद्धि दे हर वरदान॥१२॥

अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥
अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अविनाशी कर, 'सुव्रत' की झोली भर दो॥१३॥

(दोहा)

शोभित बन्दर चिह्नमय, प्रभु अभिनन्दननाथ।
दिव्य भव्य गुण पा सकें, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(श्रावक की ११ प्रतिमा वर्णन) (नरेन्द्र)

सभी व्यसन सब शहद त्याग कर, अष्ट मूलगुण धारें।
निशि भोजन तज मर्यादित कर, भव तन भोग निवारें॥
शुद्ध बनें सम्यग्दर्शन से, शरण पंचगुरु की लें।
दर्शन प्रतिमा का स्वरूप यह, सम्यग्दृष्टि भी लें॥

(दोहा)

अभिनन्दनप्रभु दीजिये, निष्ठा भरा मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं प्रतिमादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

पाँचों अणुव्रत तीनों गुणव्रत शिक्षाव्रत भी चारों।
बारह व्रत ये व्रत-प्रतिमा के, सल्लेखनमय धारो॥
निरतिचार सल्लेखन करके, मृत्यु महोत्सव कीजे।
सात-आठ भव में फिर जल्दी, मोक्ष लक्ष्मी लीजे॥

अभिनन्दनप्रभु दीजिये, सु-व्रत भरा मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मृत्युभयविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

आर्त्त-रौद्र का ध्यान त्यागकर, संयम भाव बनाना।
बिम्ब पंचपरमेष्ठी, आतम, बारह भावन भाना॥
तीन संधि में समता धरकर, विधिवत् ध्यान लगाना।
ये सामायिक प्रतिमा जिससे, अपना वैभव पाना॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, स्वानुभूति मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मनोविकारविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

पर्व अष्टमी चतुर्दशी को, प्रोषध धर्म कहेगा।
इनमें अपना बल न छिपाकर, जो उपवास करेगा॥
प्रोषधोपवास वह प्रतिमा, आरम्भादिक टाले।
तत्त्वज्ञान कर आत्मध्यान कर, जिनवर के गुण गाले॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, आतम ध्यान मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं संधिदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

जल फल आदिक जीव रहित कर, प्रासुक कर जो खाले।
प्राणी संयम पले न लेकिन, इन्द्रिय संयम पाले॥
यही सचित्तत्याग प्रतिमा जो, करे साधना ऐसी।
वो ही शीघ्र सकल संयम ले, उसे झिझक फिर कैसी॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, प्रासुक देह मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं यम-नियमदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

कृत-कारित-अनुमोदन करके, चार तरह का भोजन।
करना नहीं कराना निशि में, तजना दिन में मैथुन॥
रात्रिभुक्तित्याग प्रतिमा इससे, चेतन भोग मिलेंगे।
शील-स्वभाव मिलेंगे अपने, आतम बाग खिलेंगे॥

अभिनन्दनप्रभु दीजिये, प्रासुक देह मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आहार मैथुनदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

कृत-कारित-अनुमोदन एवं, मनो वचन काया से।
नव कोटी से मैथुन तजना, निज-नारी छाया से॥
ब्रह्मचर्य प्रतिमा यह सप्तम, अपनी सैर कराये।
मोक्षनगर बारात चले फिर, मुक्ति विवाह कराये॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, आतम शील मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं समस्तविधस्त्री उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

जिसमें षट्कायों की हिंसा, कह आरम्भ उसे तो।
षट् कर्मों व्यापार नौकरी, में आरम्भ तजे जो॥
तज न सके पूजन भोजन की, जो आरम्भी हिंसा।
वह आरम्भत्याग प्रतिमा जो, ब्याज बैंक बैलेंस ना॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, हिंसा रहित मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं विश्वहिंसादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

पूजन के बर्तन कपड़े या, शौच-उपकरण जो हैं।
इन्हें बचा सब परिग्रह छोड़े, परिग्रह त्यागी वो हैं॥
ये परिग्रहत्याग प्रतिमा जो, संतोषामृत दे दे।
हे! प्राणी क्यों जग में उलझे, प्रतिमा व्रत तू ले ले॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, विकसित उच्च मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं नवग्रह विभ्रम विनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

सांसारिक कार्यों की अनुमति, जिस जन की ना होती।
घर में रहकर हुई परीक्षा, जंगल में क्या होती॥
यही अनुमतित्याग प्रतिमा जो, घर में भी रह पाले।
आगे वह मुनि या आर्या बन, भव से पिण्ड छुड़ा ले॥

अभिनन्दनप्रभु दीजिये, शिव लोकाग्र मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आज्ञा ऐश्वर्यदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

पूर्ण रूप से जो घर तजकर, मुनि समूह में जाए।
अणुव्रत को ले करे तपस्या, भिक्षा भोजन खाए॥
ऐलक क्षुल्लक और क्षुल्लिका, पिछी कमण्डलधारी।
वो उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा जो, बनवा दे अनगारी॥
अभिनन्दनप्रभु दीजिये, अपना मोक्ष मुकाम।
मिले स्वरूपाचरण सो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं यात्रादोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

(श्रमण के तेरह प्रकार का चारित्र वर्णन)

कृत कारित अनुमोदन एवं, मन-वच-तन नव कोटी।
षट्-कायों पर जीव दया कर, क्रिया त्यागना खोटी॥
पर की पीड़ा अपनी पीड़ा, मान चले जो स्वामी।
वही अहिंसा महा महाव्रत, धर्म नींव शिवधामी॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
मिले अहिंसा महाव्रत, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं द्रव्य भावहिंसाविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

क्रोध लोभ भय हास्य आदि से, झूठ वचन नर बोले।
ऐसी वाणी कभी न बोलें, जिससे प्राणी रोले॥
नव कोटी से झूठ त्यागना, मौन धरे या साँचा।
सत्यमहाव्रत धरकर अपना, चेतन सुख से नाँचा॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
सत्य महाव्रत धर चलें, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं कलहमूल-असत्यदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

बिन स्वामी की गिरी पड़ी या, वस्तु रही जो भूली।
उसे न लेना चाहे अपनी, लग भी जाए शूली॥

मिली वस्तु में खुश रहना यह, अचौर्य महाव्रत होता।
चिन्तामणि आतम का हीरा, पाकर पुद्गल खोता॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
पाएँ अचौर्य महाव्रत, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं चोर-चोरीभयविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

बाल-वृद्ध-युवती नारी से, कामुक मन को मोड़ा।
मन-वच-तन कृत कारित एवं, अनुमोदन से छोड़ा॥
नारीजन को माता पुत्री, अथवा बहना माना।
ब्रह्मचर्य ये महा महाव्रत, लोक पूज्य पहचाना॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
ब्रह्मचर्य महाव्रत मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं दुराचरणभावविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

अंतरंग के चौदह परिग्रह, बाहर के दस त्यागी।
संयम ज्ञान शौच उपकरणों, को धारें वैरागी॥
ममताहारी समताधारी, गुरु निर्ग्रन्थ महात्मा।
परिग्रहत्याग महाव्रत ऐसा, तत्त्वज्ञानमय आत्मा॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
अपरिग्रह महाव्रत मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं तृष्णादुःखविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

प्रासुक पथ पर चार हाथ भू, निरख-निरख कर दिन में।
जब आवश्यक तब ही चलना, जीव दया भर दिल में॥
बिना प्रयोजन प्रमाद करके, कभी न चलते स्वामी।
ऐसी ईर्यासमिति धरें जो, उनको हम प्रणमामि॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
हमें ईर्यासमिति मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं आवागमनदुर्घटनाविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

निन्दा चुगली आत्म प्रशंसा, ऐसी वाणी छोड़ें।
हितमितप्रिय आगममय बोलें, दिल न किसी का तोड़ें॥

अति आवश्यक तब ही मुख से, यों बरसे ज्यों मोती।
ऐसी भाषासमिति धरें जो, उनकी पूजा होती॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
हमें भाषासमिति मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं वचन-विवादविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

अंतराय बत्तीस टालना, छियालीस दोषों को।
उच्च वंश श्रावक का भोजन, लेना तज दोषों को॥
आतम विधि से सिंह वृत्ति से, धर्म देह रक्षा को।
यही येषणासमिति धार कर, धर्म-वृद्धि शिक्षा दो॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
पले येषणासमिति बस, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं शक्तिदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

पिछी कमण्डल शास्त्र आदि को, रखना और उठाना।
देख शोधकर जीव बचा कर, आवश्यक अपनाना॥
आदान-निक्षेपणसमिति जो, सावधान हो पाले।
दुनियाँ उसको पलकों पर रख, पलकें उसे झुका ले॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
हमें समिति चौथी मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं आलस-प्रमाददोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

दूर गूढ़ जो प्रासुक धरती, छिद्र रहित भी होवे।
उस पर मल-मूत्रों का तजना, मर्यादा नहिं खोवे॥
वही कही उत्सर्गसमिति जो, त्रयविध कर्म नशा दे।
करके यों उत्थान मोक्ष में, जल्दी हमें वसा दे॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
मिले समिति उत्सर्ग झट, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं आन्तरिकदोषविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

अपने मन को राग द्वेष से, सुन लो पूर्ण बचाना।
सिद्ध सरीखे शुद्धातम में, मन को पूर्ण लगाना॥

मनोगुप्ति उसको ही माना, जो बस मुनिजन पालें।
वही शुद्ध उपयोगी मुनि है, उनके गुण हम गा लें॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
मनो गुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमनोरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

निज वचनों को पूर्ण रूप से, निज-वश में कर डाला।
वचनों का व्यापार रोककर, आतम चित्त सँभाला॥
वचनगुप्ति बस यही कहाती, जिसको मुनिजन धारें।
ऐसे ज्ञानी ध्यानी मुनि के, आओ! पाँव पखारें॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
वचनगुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमुखवचनरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

अपनी काया पूर्ण रूप से, अपने वश में लाना।
अंगों के व्यापार रोककर, अपनी आतम ध्याना॥
कायगुप्ति यह जिससे लगती, मूरत जैसी काया।
ऐसे निश्चल सुथिर संत को, सबने शीश झुकाया॥
अभिनन्दनप्रभु कीजिये, हम पर अपनी छाँव।
कायगुप्ति हमको मिले, अतः पड़ें हम पाँव॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदेहरोगविनाशनसमर्थ श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य (घत्ता)

अभिनन्दन स्वामी, मोक्ष विरामी, केवलज्ञानी, जिनवर हो।
हम तुम्हें नमामि, नित प्रणमामि, नाथ हमें भी, तुम वर दो॥
प्रभु - चरण - शरण दो, ज्ञान किरण दो, पूजा का बस, अवसर दो।
अब समाधिमरण दो, जनम मरण को - हरो हाथ सिर पर धर दो॥
अभिनन्दनप्रभु का करें, नन्दन वन्दन आज।
दर्शन बस मिलता रहे, रखना इतनी लाज॥

ॐ ह्रीं आधि-व्याधि-उपाधिविनाशनाय समाधिप्राप्तये श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

अभिनन्दन जिननाथ, मोह नाशकर मोक्ष दें।
अतः विनत हम माथ, मात्र भक्ति का सौख्य दें॥

(लय : भव-वन में जी भर.....)

हे! अभिनन्दन स्वामी जिनवर, हे! वीतराग हे! संन्यासी।
हे! नाथ हितंकर क्षेमंकर, हे! लोक शिखर के अधिवासी॥
हे! दया कृपा करुणा धारी, हो आप स्वयं पूजित जग में।
जिनदेव तुम्हें क्या हम पूजें, बस आन पड़े तेरे पग में॥१॥

गुणगान तुम्हारा है ऐसा, ज्यों दीप दिखाना सूरज को।
ज्यों नीर चढ़ाना गंगा को, ज्यों गीत सुनाना आगम को॥
फिर भी इस मानव जीवन में, हम अपना फर्ज निभाते हैं।
भव-भव में कर्ज चढ़ाया जो, वह सारा आज चुकाते हैं॥२॥

यह कर्ज निगोद में चुक न सका, क्योंकि वहाँ कुछ ज्ञान ना था।
ना श्रद्धा भी अभिव्यक्त हुई, कुछ भी चारित्र विधान ना था॥
बस जनम-मरण की बाधाएँ हर एक श्वांस में पीड़ाएँ।
इतनी भी जिनको कहने में, अनन्त ज्ञानी भी थक जाएँ॥३॥

फिर दुर्लभ थावर तन में भी, चारित्र भक्ति भी धर न सके।
दुख भूख प्यास के धूप छाँव के, रहे किन्तु तब मर न सके॥
विकलत्रय में दुख घोर सहे पर, जिनवर का ना द्वार मिला।
तिर्यंच बने पंचेन्द्रिय तो दुख- गम का ही संसार मिला॥४॥

तन काटा गया करौतों से, भालों से छेदा भेदा था।
फिर हाय जाल में फँसा हमें, झट बूचड़खाने भेजा था॥
तब कथा वहाँ की पीड़ा की, ना झेल सके ना बोल सके।
बन मूक वहाँ बस रो-रोकर, अपना चेतन ना तोल सके॥५॥

जब नरक वास हम पहुँच पड़े, तो घात परस्पर हुए वहाँ।
गर्मी सर्दी की बाधाएँ, थे मल रक्तों के कुये वहाँ॥
तब तिलतिल में पलपल किलकिल, ना भूख मिटी ना प्यास मिटी।
ना भुक्ति मिली ना भक्ति हुई , आतम बस दुख गम तक सिमटी॥६॥

जब देव बने तो संयम की, थोड़ी भी गंध न मिली वहाँ।
बस भोग मिले जिन भोगों में, आतम की कली न खिली वहाँ॥
तब मानव जीवन पाने को, हम तरस पड़े नम बरस पड़े।
फिर आज कहीं, हे! स्वामीजी, जिन द्वार मिला हम हरस पड़े॥७॥

मानव भव की क्या व्यथा कथा, हे! नाथ तुम्हें हम कह पाएँ।
दुख सहे गर्भ में सिकुड़ सिकुड़, ना हिल पाएँ ना डुल पाएँ॥
नौ माह कटे मल मूत्रों में, उल्टे मटके जैसे लटके।
फिर बिलख - बिलख नर - जन्मों ने, उल्टे पटके तो हम भटके॥८॥

बचपन में कुछ न विवेक रहा, तो संयम बिन बहु कष्ट हुए।
यौवन में भोगों में इतने, हम मस्त हुए सब त्रस्त हुए॥
फिर हाय! बुढ़ापा दुखदायी, तन हाथ पाँव कुकरे - कुकरे।
न सुनाई दे न दिखाई दे, दुनियाँ बोले, डुकरी - डुकरे॥९॥

ऐसा लगता कि बुढ़ापे में, सब दूर हुए सब रूठ गए।
आधा जीना आधा मरना, क्या सपने सारे टूट गए॥
हम गए जहाँ भी इस जग में दुत्कार मिली फटकार मिली।
चारित्र मिला ना जिनदर्शन, बस पाप भरी सरकार मिली॥१०॥

दुख दर्द भरी इस दुनियाँ में, न सहारा है न किनारा है।
न हमारा है कोई अपना सो, तुमको आज पुकारा है॥
चारों गतियों के भ्रमण हरो, दुख-दर्दचक्र को नाश करो।
जिन दर्शन जिनचारित्र मिले, प्रभु दान हमें संन्यास करो॥११॥

बचपन में माँ की गोद मिले, यौवन में कृपा महात्मा की।
हो पिता लड़कपन के साथी, बूढ़े में सुध परमात्मा की॥

दो बोधि समाधी की धारा, हो जिससे पूरी जिनपूजा।
प्रभु इतना सा उपकार करो, 'सुव्रत' को समझो ना दूजा॥१२॥

मूरत की महिमा महा, किसने पाया पार।
द्रव्य भावमय भज मिले, विश्व तत्त्व का सार॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री अभिनन्दननाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, अभिनन्दननाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, सोम बीस तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

टन टनाटन घंटी बाजे, झन-झन बाजे झालरिया।
झूम-झूम के नाँच-नाँच के, भक्त उतारें आरतिया॥

थाल सजाए दीप जलाए, भाव बनाए वन्दन के[२]
प्रभु चरणों में आन पड़े हम, भूखे-प्यासे दर्शन के[२]
दर्शन करके बाज उठा मन, जैसे बाजे ढोलकिया[२] ॥१॥
झूम-झूम के.....॥

दिशा बदल दो, दशा बदल दो, दो आशीष हमें भगवान्[२]
स्वार्थ छोड़ के दौड़-दौड़ के, हम आए करने गुणगान[२]
तत्त्व ज्ञान का मिले उजाला, चमक उठे निज मूरतिया[२] ॥२॥
झूम-झूम के.....॥

ऋद्धि-सिद्धि सुख समृद्धि के, हैं दाता अभिनन्दननाथ[२]
कर्म शत्रु नश्वर माया पर, विजय दिला दो देकर साथ[२]
आत्म ध्यान में 'सुव्रत' डूबे, हटे राह की हर रतिया[२] ॥३॥
झूम-झूम के.....॥

❑ ❑ ❑

श्री सुमतिनाथ विधान

जय बोलिए

अज्ञान अंधकार के हर्त्ता, ज्ञान प्रकाश के कर्त्ता, भक्तों के भर्त्ता, निज के जिन में परिवर्ता, सुमति के दातार, कुमति के हर्त्तार, परमपूज्य

श्री सुमतिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (लय : माता तू दया करके...)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥
हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छू लेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो राग-द्वेष करके, दु:ख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥
संताप मिटाने को, जिन-चंदन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्मचक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुख पाने को आकुल, -व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह पुद्गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥
अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन-करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बन्ध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर-दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े॥
अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएँगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएँगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(सोरठा)

सुमतिनाथ भगवान्, जो अविनाशी धन दिए।
बुद्धि-वृद्धि दो दान, अतः नमन पूजन किए॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥१॥

जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥
दर्शन पूजन का क्या कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥२॥

इक राजा रतिषेण नाम का, कला तथा विद्या स्वामी।
काम भोग की कुछ न कमी थी, अरिहन्तों का अनुगामी॥
अर्जन रक्षण वर्धन व्यय से, धर्म अर्थ सेवन करता।
लीलापूर्वक राज्य पालकर, मन में यों चिन्तन करता॥३॥

पर्यायों की भव भँवरों में, अपना आतम फँसा रहा।
दुर्जन्मों के दुर्मरणों के, साँपों से यह डँसा गया॥
कौन करे कल्याण जीव का, कैसे पथ सुख-शान्ति मिले।
अर्थ काम संसार बढ़ाता, इनसे तो दुख दर्द मिले॥४॥

घर में रहकर धर्म कर्म में, होती रहती पाप कथा।
हिंसा सहित धर्म से फिर क्या?, मिट सकती है व्यथा कथा॥
पाप रहित मुनि धर्म मात्र ही, शाश्वत सुख दे आतम को।
ऐसा उत्तम फल का दाता, यही हुआ चिन्तन हमको॥५॥

राज्य सौंप अतिरथ बेटे को, खुद ने ले ली जिनदीक्षा।
ममता त्यागी समता धर ली, मोह-शत्रु जय की इच्छा॥
जीव मात्र का मंगल हो जब, ऐसे भावों को साधे।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद को बाँधे॥६॥
अंत समय संन्यासमरण कर, वैजयन्त अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग कर भरतक्षेत्र में, वृषभ वंश उत्पन्न हुए॥
नगर अयोध्या में जन्मोत्सव, करके सुमति नाम रक्खा।
इन्द्रों ने स्वर्णिम तन प्रभु को, पूज पुण्य पाया पक्का॥७॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, सुमतिनाथ को राज्य मिला।
आर्त्तध्यान बिन रौद्रध्यान बिन, सभी प्रजा का भाग्य खिला॥
दिव्य राज भोगों को भोगा, भव से शीघ्र विरक्त हुए।
सुमति नाम को सार्थक करने, निज हित में अनुरक्त हुए॥८॥
मैं तो ज्ञानी कहलाता हूँ, अहित क्रिया कैसे कर लूँ।
अल्प सुखों को त्याग आज ही, शुभ वैराग्य हृदय धर लूँ॥
यदि सम्यक् वैराग्य न हो तो, सम्यग्ज्ञान न मिल सकता।
जब तक सम्यग्ज्ञान न तब तक, निज स्वरूप न खिल सकता॥९॥
निज स्वरूप में लीन न जब तक, तब तक क्या सुख पाओगे।
अतः सुखार्थी बन वैरागी, वरना फिर पछताओगे॥
तब लौकान्तिक देवों ने आ, कर दी हाँ-हाँ अनुमोदन।
अभय पालकी में फिर बैठे, चले सहेतुक वन भगवन्॥१०॥
इक हजार राजाओं के सह, बेला मय मुनि दीक्षा ली।
ज्ञान-मनःपर्यय झट प्रकटा, पद्मराज के भिक्षा ली॥
बीस वर्ष छद्मस्थ बिताकर, बेला मय ध्यानस्थ हुए।
केवलज्ञानी संत हुए तो, ज्ञानोत्सव मय भक्त हुए॥११॥
आप अठारह क्षेत्रों में फिर, कर विहार कल्याण किए।
आत्मा को परमात्मा बनने, बनो महात्मा ज्ञान दिए॥
मासिक योगनिरोध किया फिर, प्रतिमायोग ध्यान ध्याया।
अविचल कूट सम्मेदशिखर से, संध्या मोक्ष महल पाया॥१२॥

ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
चारों धामों का सुख मिलता, सादर शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शान्ति कहाँ जो, शान्ति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥१३॥

जिनप्रभु को बस गुरु ग्रह नाशक, जो माने वे अज्ञानी।
सुमतिनाथ का नाम अकेला, हर ले सभी परेशानी॥
हर संकट के कंटक हर लो, खुशियों की दे दो कलियाँ।
'सुव्रत' तुम सम बनने माँगें, मोक्ष महल सुख की गलियाँ॥१४॥

(दोहा)

जिन का चकवा चिह्न है, पञ्चम जो जिनराज।
सुमति नाम जिनका उन्हें, नमस्कार हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(६ अनायतन) (१४ मात्रिक-हाकलिका)

अस्त्र-शस्त्र जो वस्त्र रखें, अपने पुत्र कलत्र रखें।
पाप व्यसन पथ पर चलके, भक्ष्याभक्ष्य सदैव भखें॥
यही कुगुरु है अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं कुगुरुमार्गविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

कुगुरु जनों के सेवक की, पूजक अर्चक वंदक की।
तन मन धन से सेवाएँ, कुगुरु सेवक कहलाएँ॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं ऊँचनीचभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

वीतराग सर्वज्ञ नहीं, हितोपदेशी विज्ञ नहीं।
दोष अठारह सहित रहे, मिथ्याजन से भजित रहे॥
वो कुदेव हैं अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं उच्चकोपविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

पूजक भक्त कुदेवों के, मोक्षमार्ग से जो भटके।
खुद भटके वो भटकाते, कुदेव सेवक कहलाते॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं नीचकोपविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

उल्टा सत्य अहिंसा का, पथ दे दुख का हिंसा का।
कपोल कल्पित एकान्ती, वो कुधर्म है बस भ्राँति॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं शत्रुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

जो कुधर्म सिर पर धरता, पक्षपात की कट्टरता।
स्वरूप का ना भान जिन्हें, कुधर्म सेवक कहो उन्हें॥
ये भी समझो अनायतन, इनसे बचने ओ! चेतन॥
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं पापोदयप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

(षट्काल वर्णन)

भोगभूमि सुख जो उत्तम, कल्पवृक्ष दे सर्वोत्तम।
धर्म कर्म का काम नहीं, सुखमा-सुखमा काल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन॥
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं काललब्धिविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

भोगभूमि जो है मध्यम, जहाँ भोग सुख थोड़े कम।
पले न संयम नियम जहाँ, होता सुखमा काल वहाँ॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं कालकुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

भोग भूमि जो रही जघन्य, यहाँ भोगसुख सबसे कम।
यहाँ पले चारित्र नहीं, सुखमा दुखमा काल यहीं॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं दुष्कालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

जिसको चौथा काल कहा, सुख कम ज्यादा दुक्ख यहाँ।
धर्म कर्म दे मोक्ष मही, दुखमा-सुखमा काल यही॥
दिलवाता यह परमातम, इसको पाने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं सुकालप्रभाववर्धनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

पंचमकाल जिसे माना, दुख का वह ताना-बाना।
मोक्षमार्ग दे मोक्ष नहीं, होता दुखमाकाल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं दुर्घटनाकालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

छठवा काल जिसे कहते, जिसमें दुख ही दुख सहते।
जहाँ हिताहित ज्ञान नहीं, दुखमा-दुखमा काल यही॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं अकालप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

(षट्कर्म वर्णन)

अस्त्र-शस्त्र तलवारों का, हिंसक सब हथियारों का।
शिक्षण रक्षण सिखलाता, असिकर्म-वह कहलाता॥

इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं अस्त्र-शस्त्रकुप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

लेखन स्याही कलम दवात, कागज ताड़पत्र की बात।
इनका ज्ञान दिलाता जो, मसि कर्म कहलाता वो॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं जालीदस्तावेजप्रभावविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

खेत कृषक कृषि यंत्रों की, रचना प्रयोग तंत्रों की।
इनका दिग्दर्शन दाता, कृषि कर्म वह कहलाता॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं कृषिकृषकसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

जो व्यापार रहा धंधा, पाप बुराईमय गंदा।
कर उद्योग अर्थ पाना, वो वाणिज्य कर्म माना॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं व्यापारसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

कला बहत्तर अपनाना, उच्च नौकरी पर जाना।
करना अथवा करवाना, विद्या कर्म वही माना॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं विद्याविवादविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

धातु रत्न भू पत्थर की, रचना भूषण प्रभु घर की।
इसकी शिक्षा रक्षाएँ, शिल्प कर्म वह कहलाएँ॥
इनसे मिले न परमातम, इनसे बचने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं वास्तुमूर्तिदोषविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

(गृहस्थ के षट्-आवश्यक)

श्री अरिहन्त जिनेश्वर की, अष्टद्रव्य से सादर ही।
कर अभिषेक करो पूजा, पहला कर्म देव पूजा॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं देवपूजाविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

जो निर्ग्रन्थ महन्त रहे, श्रमण वही गुरु संत कहे।
गुरु सेवा आज्ञा पालन, गुरूपास्ति श्रावक का धर्म॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं गुरुस्वरूपविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

पाठन पठन जिनागम का, व्रतमय तप है आतम का।
आत्म ज्ञान अध्याय सही, आवश्यक स्वाध्याय यही॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

हिंसा तज इन्द्रिय जय जो, प्राणी इन्द्रिय संयम वो।
श्रावक धरे नियम यम जो, वह आवश्यक संयम हो॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं संयमविरोधविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

इच्छा-निरोध तप उत्तम, यथा शक्ति धरले आतम।
कर्म निर्जरा तप से हो, डरते क्यों तुम तप से हो॥
इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं तपध्यानविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

चार तरह का दान करो, द्रव्य पात्र विधि ध्यान रखो।
मिले भोग सुख-मोक्ष मही, दान धर्म सिद्धान्त यही॥

इनसे मिलती परमातम, इनको करने ओ! चेतन।
सुमति, सुमति से ग्रहण करो, सुमति-सुमति भज नमन करो॥

ॐ ह्रीं दानत्यागविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(लय : भव-वन में .....)

हे! सुमतिनाथ खलु चिच्च देव, प्रभु तुमसा हमको मिला नहीं।
बस इसीलिए चैतन्य बाग, हे! नाथ हमारा खिला नहीं॥
अब कृपा दृष्टि हम पर करके, निज में निज का सौरभ भर दो।
कौरव जैसा रौरव हर के, जिनसा अपना गौरव कर दो॥
मजबूर बने मजदूर बने, मजबूत कभी ना बन पाए।
तब भूत भभूत रहे मलते, पर मुक्ति दूत ना बन पाए॥
सम्भव है जग की उलझन में, हम छोटे भले तुम्हें भूलें।
पर आप न भूलो छोटों को, क्या बड़े फर्ज अपना भूलें॥
यह अर्घ्य कीमती तब होता, जब प्रभु चरणों में चढ़ता है।
यह भक्त कीमती तब होता, जब प्रभु चरणों में झुकता है॥
लो शीश झुकाकर भक्त तुम्हें, यह सादर अर्घ्य भेंटते हैं।
अब नाथ! तुम्हारी बारी है, हम तो बस राह देखते हैं॥

(दोहा)

सुमतिनाथ की अर्चना, हरती कर्म समूल।
अतः नमन वन्दन करें, खिलें भक्ति के फूल॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

विश्व प्रसिद्ध महान् हैं, सुमतिनाथ भगवान्।
भाव सहित नत हो करें, जिनगुण का गुणगान॥

(लय : अनादिकाल से कर्मों से....)

अनादिकाल से अपनों के हम सताये हैं।
अपनों से मिला दर्द कष्ट घाव पाए हैं॥

अपनों से जन्म-जन्म की हमको मिली सजा।
अपनों की गूँज विश्व में अपनों से हर मजा॥१॥
अपनों में इतने चूर हैं कितने बताएँ हम।
अपनों से ये संसार है अपनों से हर करम॥
अपनों से राग-द्वेष मोह पाप की कथा।
अपनों ने दिए चेतना को कर्म की व्यथा॥२॥
अनायतन अपनों से सीखा हमने पूजना।
विभाव अपना सा हुआ ना मिली सूचना॥
हर बुराई या व्यसन अपने से ही मिले।
अपनत्व के उजाड़े हैं अपनों ने हौसले॥३॥
अपनों ने छहों काल चक्र में घुमाया है।
अपनों ने कष्ट विघ्न का चक्कर चलाया है॥
अपनों ने सिद्ध चक्र से मिलने से रोका है।
अपनों को फिर भी जान न सके जो धोखा है॥४॥
अपनों ने छहों कर्म में हमको फँसा दिया।
अपने ने हिंसा पाप का दलदल वसा दिया॥
अपने तो गसे कीच में हमको गसा दिया।
अपने तो डसे नाग से हमको डसा दिया॥५॥
संसार कैसे अपना जो अपनों को मारता।
जो अपना देख अपने को जल्दी दहाड़ता॥
पहचान हमको न हुई अपनों की आज तक।
इससे चले आए हम प्रभु के धाम तक॥६॥
पत्नी साथ देती है केवल मकान तक।
बन्धु मित्र साथी हैं केवल मसान तक॥
ये बेटा साथ देता है मुखाग्नि दान तक।
अब कौन साथ देगा हमें केवलज्ञान तक॥७॥
आँख खुली सपना, गया आँख झपी जपना भी।
आँख लगी अपना गया आँख मुँदी दफना भी॥

निर्वाण तक जो साथ दे वो साँचा अपना है।
ये विश्व सारा मोह का विस्तार सपना है ॥८॥
अपनों के मुखौटे जिन्होंने ओढ़ के रखे।
अपनों के रिश्ते नाते अब तो छोड़ दे सखे॥
ये अपने कभी हो ना सके ये तो पराये।
इनको छोड़ने की ललक साथ हम लाए॥९॥
अब आपको ही हमने अपना ईश कह दिया।
चरणों को पूज्य माना हमने शीश धर दिया॥
ना भेंट है ना द्रव्य है ना भाव भी भला।
ना भक्ति है ना शब्द है ना छन्द की कला॥१०॥
फिर भी तुम्हारे नाम से हो विश्व का भला।
हर कष्ट भी टला है शिखर मान का गला॥
हर कर्म भी जला है भक्त छाँव में पला।
इनसे जिनेन्द्र भक्त तेरी राह पर चला॥११॥
श्रावक बने तो आवश्यक षट् पाल के चलें।
तेरी कृपा से धर मुनिव्रत मोक्ष को चलें॥
यही हो पूरी प्रार्थना विश्वास न टले।
'सुव्रत' की ये ही कामना चरणों की रज मिले॥१२॥

(दोहा)

सुमति-सुमित में लीन है, सुमति-सुमति चित् धार।
हमें सुमति की धार दो, अतः नमोऽस्तु शत बार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री सुमतिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, सुमतिनाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, मंगल दिन अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शभम् भूयात्॥

आरती

(लय : जीवन है पानी की बूँद....)

सुमतिनाथ जिनवर का नाम, भजते जाओ रे।
दीपों से आरति हाँ-हाँ२, सब करते जाओ रे॥
सुमतिनाथ चैतन्य बने, पर भावों से अन्य बने।
मोक्षमार्ग के संचालक, मोक्ष प्राप्त कर धन्य बने॥
चरणों की धूलि हाँ-हाँ२, अब हमें दिलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर....... ॥१॥

मात मंगला के तारे, पिता मेघरथ के प्यारे।
नगर अयोध्या के स्वामी, भक्त लोक के उजयारे॥
भक्तों की ज्योति हाँ-हाँ२, अब आप जलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर....... ॥२॥

तुम बिन किसे पुकारें हम, जाएँ कहाँ निहारें हम।
किससे अपनी व्यथा कहें,कैसे आत्म निखारें हम॥
ज्ञानी ओ ध्यानी हाँ-हाँ२, निज दास बनाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर....... ॥३॥

सुनो! प्रार्थना आओ जी, अब ना देर लगाओ जी।
'सुव्रत' के मन मन्दिर में, आतम जोत जलाओ जी॥
हमको भी स्वामी हाँ-हाँ२, जिन गाँव बुलाओ रे।
सुमतिनाथ जिनवर....... ॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री पद्मप्रभ विधान

जय बोलिए

निस्पृहता के स्वामी, परमात्मा में विरामी, सर्वज्ञ केवलज्ञानी, जगत् के कल्याणी, कमल सम खिले हुए, शुद्धात्म में मिले हुए, सबके उपकारी मोक्ष के विहारी परमपूज्य

श्री पद्मप्रभ भगवान् की जय ॥

स्थापना (वसंततिलका)

हे! पद्मनाथ परमेश जिनेश स्वामी।
तीर्थेश षष्टम विभो कमलेश नामी ॥
संसार में कमल-सम बनके विरागी।
चैतन्य रूप चखते बन वीतरागी ॥

चारित्र के परम पूजित हो विहारी।
सारे विभाव दुख संकट के निवारी ॥
वैराग्य के सुरथ पै हमको बिठाओ।
संन्यास दे हृदय में जिनदेव आओ ॥

ये अर्चना हम करें प्रभु नाम लेके।
शुद्धात्म का वरण हो जिन जाप देके ॥
दे दो हमें चरण की बस धूल थोड़ी।
सम्बन्ध हो मुकति से बन जाए जोड़ी ॥

(दोहा)

पूज्य पद्मप्रभु देव जी, भक्त जनों के ईश।
सबको तो सब दो मगर, हमको दो आशीष ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

ये जन्म-मृत्यु भय चेतन को सताते।
डूबे स्वयं भव-समुद्र हमें डुबाते॥
श्रद्धान दो वरदहस्त समाधिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

संसार ताप तपते हमको तपाते।
चैतन्य के महल तो बिखरे हि जाते॥
दो जैन-तीर्थ सुधरे निज आत्म वास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

आज्ञा न देव गुरु शास्त्र जनों की मानी।
पाए न भोग जग के नहीं मोक्ष रानी॥
हो छत्र छाँव हम पै कह दो तथास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

तृष्णाएँ काम मृग की मिटतीं न स्वामी।
जो भोग भोग बनता दुठ और कामी॥
दुर्दर्प काम तज दो निज ब्रह्म वस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सारे हि रोग नशते जग औषधि से।
पै भूख रोग बढ़ता चरु औषधि से॥
ऐसी क्षुधा हरण को व्रत वृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

है मोह की हर किरण करती अँधेरे।
तो भी सभी जगह पै उसके वसेरे॥
वैराग्य ज्ञान मणि चेतन खोज ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

सर्वत्र कर्मफल जीव चखे अकेले।
देते न साथ जगबन्धु गुरु न चेले॥
दो कर्म के हरण को जप ध्यान अस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

संसार वृक्ष कड़वे फल वो खिलाते।
खाके जिन्हें हम सदा मरते हि जाते॥
सम्यक्त्व संयम सुधामृत स्वाद ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अध्यात्म की शिखर की सबसे ऊँचाई।
शुद्धात्म धाम जिससे बस दे दिखाई॥
वो देवशास्त्र गुरु ही बस दान देते।
पूजा विधान विधि सो हम ठान लेते॥

ये नीर चंदन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिये साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(वसंततिलका)

संसार में शरण हैं जिनदेव साँचे।
ध्या के सदाचरण भक्त मयूर नाँचे॥
सर्वस्य पाप विधि बन्धन को नशाते।
सो भक्त भक्तिमय हो गुणमाल गाते॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आए॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्याकर के, बोलो कौन कहाँ रोते॥१॥
आओ उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
नगर सुसीमा के अपराजित, राजा सार्थक नाम धरे।
अंतरंग बहिरंग शत्रु को, जीत दया के काम करे॥२॥
राजभोग को भोग बाद में, चिन्तन कर गंभीर हुए।
क्षण भंगुर नश्वर जग माया, पुद्गल कर्म शरीर हुए॥
चिदानन्द का वैभव पाने, राज्य पुत्र को सौंप दिया।
जिनदीक्षा को वन जा खुद को, प्रभु चरणों में सौंप दिया॥३॥

कठिन साधना तूफानी कर, जैनधर्म का नाद किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
अन्त समय में कर सल्लेखन, ग्रैवेयक अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग नृप अपराजित के, पुत्र कमल सम पद्म हुए॥४॥
जन्म हुआ ज्यों हर्ष हुआ त्यों, मोह शोक का अन्त हुआ।
वैर विरोध काँपकर भागें, घर-घर पर्व बसंत हुआ॥
इन्द्रों ने फिर न्हवन कराके, पूज्य पद्मप्रभ नाम रखा।
पर्व जन्म कल्याणक करके, पुण्य भक्ति को खूब चखा॥५॥
जिन बालक बन पालक ऐसे, कौन करे वर्णन उसका।
वो सौभाग्य नहीं पा सकता, अल्प भाग्य होगा जिसका॥
हाथी की दुर्दशा श्रवण कर, पूर्व भवों का ज्ञान हुआ।
तत्त्व स्वरूप जानकर खुद को, खुद पर खेद महान् हुआ॥६॥
यहाँ कौन-सा पदार्थ ऐसा, जिसको मैंने छुआ नहीं।
देखा सूँघा खाया ना हो, जिसको मैंने सुना नहीं॥
अभिलाषा के इस सागर को, पूर्ण कौन भर पाया है।
भोग सर्प ने तन वामी में, रहकर विष फैलाया है॥७॥
फिर भी मोह उसी से करके, आत्म धर्म को भुला दिया।
पापों को ही धर्म मानकर, शाश्वत चेतन सुला दिया॥
जिन्हें हुआ वैराग्य उन्हीं के, लौकान्तिक सुर में सुर गा।
बेला सहित लिए जिनदीक्षा, सजे मनोहर वन में जा॥८॥
ज्ञान मनःपर्यय फिर पाया, फिर चर्या की दिन अगले।
पाँच वृत्तियों से भोजन कर, सोमदत्त को पुण्य मिले॥
गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा करके, परिषहजय चारित्र धरा।
संवर तप से किए निर्जरा, छह माहों का मौन धरा॥९॥
जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी संत बने।
नर इन्द्रों ने सुर इन्द्रों ने, पूजा जब भगवन्त बने॥
सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥१०॥

दिव्य देशना देकर खुद को, साबित सच्चा आप्त किया।
मासिक योग निरोध धारकर, अहा! मोक्ष को प्राप्त किया॥
श्रीसम्मेदशिखर का पावन, पूजित मोहनकूट हुआ।
मना मोक्षकल्याणक प्रभु का, अपना दिल अभिभूत हुआ॥११॥

ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पाई है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आए वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥१२॥

पद्मनाथ परमेश्वर प्रभु ने, राग-द्वेष को लाँघ लिया।
किन्तु रागियों ने ही उनको, राहु-केतु तक बाँध दिया॥
करें निवारण मात्र सूर्य ग्रह, प्रभु कमजोर नहीं इतने।
'सुव्रत' जिनका नाम मात्र सुन, मुक्तिरमा टेके घुटने॥१३॥

(बसंततिलका)

हैं नष्ट-भ्रष्ट सुर छन्द सभी ऋचाएँ।
ऐसी दशा गुण कथा किस भाँति गाएँ॥
आशीष पा हम किए गुणगान थोड़ा।
दे दो क्षमा भगत् है अंजान मौंड़ा॥

(दोहा)

लाल कमल से शोभते, पद्मप्रभु जिनराज।
खिले कमल सम भक्त हम, अतः नमन हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(षट् कारक) (चौपाई)

कर्त्ता कारक हम ना समझें, हम ही करते इसमें उलझें।
उलझे कर्त्ता सुलझें स्वामी, पद्मप्रभु को सदा नमामि॥

(दोहा)

वन्दन का फल यह मिले, निज में निज का सार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं कर्त्ताविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

सदा शुभाशुभ कर्म करें हम, फल सहने में शर्म करें हम।
तजे कर्म कारक यदि प्राणी, उसे खोज ले मुक्ति रानी॥
वन्दन का फल यह मिले, कर्मों का परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं कर्मविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

जो साधन हर कार्य बनाता, जिस बिन कार्य नहीं बन पाता।
पर वो कार्य नहीं कहलाता, वही करण कारक विख्याता॥
वन्दन का फल यह मिले, सम्यक् करण बहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं साधनविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

नाम अन्य का कर्म हमारा, ऐसा है जग का व्यवहारा।
निज को निज का कर्म सिखा दो, सम्प्रदान कारक हटवा दो॥
वन्दन का फल यह मिले, निज का लक्ष्य निखार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं लक्ष्यविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

किससे हमें दूर जाना है, किसकी शरण हमें पाना है।
अपादान कारक समझा दो, निज से निज का मिलन करा दो॥
वन्दन का फल यह मिले, वीतरागता सार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं वियोगविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

इष्ट देवता कौन हमारा, स्वामी पालक कौन सहारा।
क्या कारक अधिकरण कहानी, निज का हमें बना दो स्वामी॥
वन्दन का फल यह मिले, निज का निज आधार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं आधारविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

(द्रव्य के छह सामान्य गुण)

जो अस्तित्व हमारा होता, उसका नाश कभी ना होता।
जग से वह अस्तित्व मिटा दो, अपने जैसा हमें बना लो॥
वन्दन का फल यह मिले, सिद्धों की सरकार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं अस्तित्वस्वाभिमानविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

अर्थ क्रिया द्रव्यों की रहती, ज्यों गागर खुद में जल भरती।
वह वस्तुत्व रहा गुण अपना, कब हो पूर्ण मोक्ष का सपना॥
वन्दन का फल यह मिले, आतम का उद्धार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं वस्तुत्वक्षमताविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

पल-पल में पर्याय बदलना, द्रव्य एक-सा कभी न रहना।
द्रव्य-गुणों पर्याय अशुद्धि, हर दो कर दो आतम शुद्धि॥
वन्दन का फल यह मिले, शुद्ध द्रव्य गुण द्वार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं द्रव्यत्व-अशुद्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

द्रव्य किसी ना किसी ज्ञान का, विषय बने चैतन्य ज्ञान का।
प्रमेयत्व गुण शक्ति बढ़ा दो, आतम ज्ञानी हमें बना दो॥
वन्दन का फल यह मिले, केवलज्ञान फुहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं प्रमेयत्व-ज्ञानविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

जिससे द्रव्य मिले ना पर में, गुण ना बिखरें रहते निज में।
वही अगुरुलघुत्व गुण माना, हमको तन से पृथक् बनाना॥

वन्दन का फल यह मिले, गुण अनन्त भण्डार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-देहविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

भले कोई भी द्रव्य किसी का, कुछ ना कुछ आकार उसी का।
प्रदेशत्व गुण शक्ति सजा दो, सिद्धों जैसा हमें बना दो॥
वन्दन का फल यह मिले, सिद्धों सम आकार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं प्रदेशत्व-संस्कारविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

(षट्-आहार)

कर्माहार नारकी करते, भूखे प्यासे रहें, न मरते।
कर्माहार सभी का हर लो, ज्ञानामृत आतम में भर दो॥
वन्दन का फल यह मिले, नशे कर्म आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं कर्माहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

जो नोकर्माहार रहा है, अरिहन्तों का वही कहा है।
पूर्व कोटि वर्षों तक जीते, कुछ ना खाते कुछ ना पीते॥
वन्दन का फल यह मिले, शुभ नोकर्माहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं नोकर्माहारदायकसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

एकेन्द्रिय जो भोजन करते, लेपाहार उसी को कहते।
लेप-लेप तन जिसका स्वादी, लेपाहार हरो वैरागी॥
वन्दन का फल यह मिले, हर लो लेपाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं लेपाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

भोजन मानव तिर्यंचों का, भ्रमण बढ़ाए परपंचों का।
कवल-कौर का भोजन करना, कवलाहार उसी को कहना॥
वन्दन का फल यह मिले, हर लो कवलाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं कवलाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

जो अण्डस्थ पक्षि का भोजन, जिससे हुआ पाप का अर्जन।
ओजाहार पाप नशवा दो, ओज तेजमय आत्म दिला दो॥
वन्दन का फल यह मिले, नाशो ओजाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं ओजाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

देवों का भोजन अमृत का, मन जब कहे कंठ से झरता।
जो आतम को नहीं सुहाता, वो मानसिक-आहार कहाता॥
वन्दन का फल यह मिले, तज मानसिक आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं मानसिकाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

(मुनि की आहारवृत्तियाँ)

जैसे भ्रमर पुष्प पर रमते, किन्तु पुष्प क्षतिग्रस्त न करते।
यही भ्रामरीवृत्ति मुनि की, श्रावक को बाधक ना बनती॥
वन्दन का फल यह मिले, बाधा का परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं समस्तविधबाधाविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

ज्यों गाड़ी की ग्रीसिंग करना, अपनी मंजिल पहुँच ठहरना।
पेट अक्ष-म्रक्षण सम भरते, तन-गाड़ी मुक्ति तक धरते॥
वन्दन का फल यह मिले, नशे देह संसार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं देह-क्रियाव्यापारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

ज्यों कचरे से गड्ढा भरते, उस पर फर्श मनोहर करते।
संत गर्तपूरण विधि करते, पेट अरस कण जल से भरते॥
वन्दन का फल यह मिले, मिले ठोस परिवार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं रिक्तताविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

कोई पानी कैसा भी हो, आग बुझाता जैसा भी हो।
मुनि आहार इसी विध करते, बस उदराग्नि-प्रशमन करते॥

वन्दन का फल यह मिले, उदराग्नि परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं अग्निदाहविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

गाय घास ज्यों खाए देखे, कौन डालता यह ना देखे।
वैसी संत गोचरी करते, कर-पात्रों पर दृष्टि रखते॥
वन्दन का फल यह मिले, दृष्टि बने मनुहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

जीवदया संन्यास मरण ना, ब्रह्मचर्य व्रत तप रक्षण ना।
जरा-रोग उपसर्ग जहाँ हो, मुनि भोजन का त्याग वहाँ हो॥
वन्दन का फल यह मिले, आत्म तजे आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं अनाहार-आत्मप्राप्तये श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(लय : भव-वन में...)

हे! नाथ पद्मप्रभु अविनश्वर, अध्यात्म शिखर के नायक हो।
हो पतित जनों के अवलम्बन, शिव मोक्षार्थी के पालक हो॥
संसार बीच में यूँ खिलते, ज्यों कमल कीच में खिलता है।
जो करे आपका पद वन्दन, वह मोक्षमहल में मिलता है॥
हम हृदय कलश लेकर आए, इसमें श्रद्धा जल गंध भरो।
अक्षय रत्नों सा पुष्प खिले, दो ज्ञानामृत भव अंध हरो॥
चिन्मय की धूप सुगंधी दो, फिर चिदानन्द को घन कर दो।
दो चरण शरण की धूल हमें, अपना आतम मधुवन कर दो॥

(दोहा)

रत्नत्रय की नाँव के, तुम हो खेवन हार।
नमन करें यह अर्घ्य ले, हमें उतारो पार॥

ॐ ह्रीं कर्त्ताभोक्तास्वामीविभ्रमविनाशनसमर्थ-श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

गाय दूध से शोभती, खिले पुष्प से बेलि।
नारी शोभे शील से, गुरु से चेला चेलि॥
कमल सूर्य से शोभते, कमलों से तालाब।
भव्य पद्मप्रभु पद्म से, यों ज्यों खिले गुलाब॥

(ज्ञानोदय)

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परम पूज्य परमातम जय।
श्रेष्ठ ज्योति पावन परमेष्ठी, चलते फिरते सिद्धालय॥
कष्टजयी हो, कालजयी हो, कामजयी हो कर्मजयी।
सिंहासन पर भव्यकमल के, पद्मसूर्य हो आत्मजयी॥१॥

पूज्य पद्मप्रभु जयजिनेन्द्र हो, प्रभु अर्हंत जिनेश्वर हो।
नग्न दिगम्बर तीर्थंकर हो, जिन भगवंत महेश्वर हो॥
लक्ष्यरूप शुद्धातम पाके, तुम तो माला-माल हुए।
स्वानुभूति में रमण-भ्रमणकर, स्वामी आप निहाल हुए॥२॥

चिदानन्द चैतन्यधाम को, पाने हम दर-दर भटके।
शुद्धातम तो मिली न लेकिन, भव-भव में खाए झटके॥
इसका कारण सिर्फ एक ही, हमें समझ में यह आया।
परमातम को विसरा करके, किसने शुद्धातम पाया॥३॥

अतः निजातम यदि पाना तो, प्रभु अर्हंत समझ लो रे।
प्रभु अर्हंत पूज के भैया, भव से शीघ्र सुलझ लो रे॥
क्योंकि द्रव्य गुण पर्यायों से, प्रभु अर्हंत जानता जो।
मोह उसी का ही बस नशता, निज शुद्धात्म जानता जो॥४॥

कर्म ज्ञान दर्शन आवरणी, अंतराय वा मोह हरे।
यही घातिया कर्म हरण कर, नन्त चतुष्टय प्राप्त करे॥
अनन्त दर्शन ज्ञान वीर्य सुख, अनन्त सम्यग्दर्शन पा।
समवसरण में दिखे चतुर्मुख, सुर-नर-यतिपति पूजें आ॥५॥

प्रकृति नशा कर्मों की त्रेषठ परमौदारिक तन पाया।
छियालीस गुण का वैभव पा, प्रातिहार्य का धन पाया॥

शुद्ध हुई पर्याय आपकी, सकल द्रव्य गुण शुद्ध रहा।
वीतराग विज्ञान शिरोमणि, चरण भेदविज्ञान अहा ॥६॥

भूख-प्यास भय रोग बुढ़ापा, जन्म-मरण विस्मय निन्द्रा।
खेद स्वेद मद शोक अरति या, राग-द्वेष मोह चिंता॥
यही अठारह दोष न प्रभु में, अतः वीतरागी साँचे।
साँचे ऐसे आप्त प्राप्तकर, झूम-झूमकर हम नाँचे ॥७॥

लोकालोक त्रिकाल जानते, या देखें युगपत ऐसे।
गुण पर्याय द्रव्य अनन्त सब, पहचाने गो-पद जैसे॥
तभी आप सर्वज्ञ कहाते, सबको हित का दो रास्ता।
इसीलिए हो हितोपदेशी, अतः आप पर है आस्था ॥८॥

द्वादशांग ओंकाररूप जो, अर्द्धमागधी भाषामय।
जो अष्टादश महा भाषमय, सात शतक लघु भाषामय॥
अनेकान्त स्याद्वाद अनिच्छुक, सप्तभंग जय जिनवाणी।
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, जो सर्वांग खिरे वाणी ॥९॥

लोक शिखर पर भले विराजे, पर सबका उपकार करो।
इतना वैभव कैसे पाया चेतन! तनिक विचार करो॥
तजे व्यसन फिर मिथ्यादर्शन, फिर पापों को छोड़ दिया।
ज्ञान प्राप्त कर रत्नत्रय धर, मोह चक्र फिर तोड़ दिया ॥१०॥

बिन वैराग्य त्याग हो कैसे, त्याग बिना चारित्र नहीं।
बिन चारित्र ध्यान हो कैसे, ध्यान बिना थिर चित्त नहीं॥
शुद्धोपयोग उसे हो कैसे, जिसने ना तो व्यसन तजे।
तजा न परिग्रह धरा न संयम, पूज्य पद्मप्रभ नहीं भजे ॥११॥

नाथ! हमारी सुन्दर आतम, रही बाँझ की बाँझ अहो।
रत्नत्रय के पुत्र दिलाकर, 'मुनिसुव्रत' की गोद भरो॥
आत्म महल में शुद्धातम की, किलकारी अब गूँज उठे।
सुन लो अर्जी पूज्य पद्मप्रभु, भक्तों से क्यों हो रूठे ॥१२॥

(सोरठा)

पूज्य पद्मप्रभु नाथ, उत्तम मंगल हैं शरण।
हमें मिले प्रभु साथ, सादर हम पड़ते चरण॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयअनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री पद्मप्रभविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, पद्मप्रभु विधान॥
दो हजार तेरह जून, मंगल चार तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : केसरिया केसरिया.....)

आरतियाऽऽ, आरतियाऽऽ[२],
आज उतारें हम आरतिया
पद्मप्रभु परमेश्वर जी की[२]
आज उतारें ......॥
पूज्य पद्मप्रभु जग से न्यारे।[२]
वीतरागता के उजयारे ॥[२]
शिव शिव-पथ के सारथिया-सारथिया।
आज उतारें ...... ॥१॥
धरण सुसीमा के सुत प्यारे।[२]
हम भक्तों के नाव किनारे ॥[२]
विखराते सुख भारतिया-भारतिया ॥
आज उतारें ...... ॥२॥
नाथ! आपने सब कुछ छोड़ा।[२]
मंत्र जाप निज से चित जोड़ा ॥[२]
पाए प्रभु की मूरतिया-मूरतिया।
आज उतारें ...... ॥३॥
हृदय हमारा तुम्हें खोजता।[२]
करे वन्दना चरण पूजता ॥[२]
भूल न पाए सूरतिया-सूरतिया।
आज उतारें ...... ॥४॥
भव से स्वामी हमें बचाओ।[२]
सिद्ध महल में शीघ्र बुलाओ ॥[२]
'सुव्रत' की सुन लो बतिया-सुन लो बतिया।
आज उतारें ...... ॥५॥

❑ ❑ ❑

श्री सुपार्श्वनाथ विधान

जय बोलिए

संसार में सबसे सुन्दर, सर्वश्रेष्ठ शिष्ट निरम्बर, सर्वोच्च पूज्य दिगम्बर, निजात्मलीन चिदम्बर, त्यागी तुष्ट निर्मोही, भक्तों के मनमोही, परमपूज्य

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

जिनवर नाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥

(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अरिहन्तेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।
भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥
होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥

(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइए।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाए उन्हीं से दगा॥

ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥
ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को, चरण का ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बीता काल अनन्त रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गई अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पाएँ ज्योति अनन्तज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥
कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूति फल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गाएँगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएँगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आएँगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥
आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

आत्म शक्ति की व्यक्ति को, करें भक्ति हम लोग।
सुपार्श्वप्रभु के गीत गा, बने मुक्ति के योग॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुखअम्बर हो।
सुख के सूरज-चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥१॥
सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानन्द तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पाएँ हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचाएँ हम॥२॥
राज्य क्षेमपुर का इक राजा, नंदिषेण जो राज्य करे।
धर्म अर्थ अरु काम पुण्य से, बुद्धि पराक्रम प्राप्त करे॥
मोक्षमार्ग पर चलकर निज पर, जय करना उसकी इच्छा।
अतः पुत्र को राज्य दानकर, उसने ले ली मुनिदीक्षा॥३॥
तीर्थंकर पद कर्म बाँधकर, सल्लेखन कर सुर पाए।
मध्यम ग्रैवेयक की आयु, भोगी फिर भू पर आए॥

नगर बनारस में फिर जन्मे, जिनका नाम सुपार्श्व पड़ा।
जिनकी सेवा में जग वैभव, तव चरणों में आन खड़ा॥४॥
राज्य प्राप्त कर आठ तरह के, सुख पाए थे स्पर्शन के।
पाँच तरह के रसना वाले, नासा नयन कर्ण मन के॥
पंचेन्द्रिय विषयों को पाकर, आत्म नियंत्रण ना छोड़ा।
जब देखा था ऋतु परिवर्तन, तब मुनि बनने मन मोड़ा॥५॥
लौकान्तिक सुर गुण गाए तब, बैठ मनोगति शिविका में।
पहुँच सहेतुक वन में प्रभु ने, जिनदीक्षा ली संध्या में॥
साथ एक हजार राजा थे, बेला का था नियम लिया।
अगले दिन महेन्द्रदत्त ने, पड़गाहन कर दान दिया॥६॥
नौ वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर बेलामय ध्यान लगा।
गर्भ तिथी में गर्व हमें है, केवलज्ञानी हुए अहा॥
ज्ञानोत्सव फिर समवसरण में, जिन-बगिया के फूल झड़े।
जिसकी माला से भक्तों के, बन्धन कर्म समूल झड़े॥७॥
विहार रुचा न तो विहार तज, लोक शिखर पाने मचले।
मासिक योगनिरोध धारकर, सम्मेदाचल धाम चले॥
प्रभास कूट से कर्म हटाकर, प्रभु ने महा प्रयाण किया।
सूर्योदय में तब इन्द्रों ने, महा मोक्षकल्याण किया॥८॥
नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥
समवसरण फिर मोक्षधाम पा, जैन धरम का मान रखा।
हम नजदीक आपके आएँ, हमने यह अरमान रखा॥९॥
जीव तत्त्व यह शुद्ध करा दो, अजीव हम से दूर करो।
हर लो आस्रव बन्ध द्वन्द्व सब, कर्म निर्जरा पूर्ण करो॥
द्रव्य भाव नो कर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥१०॥
पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।
आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥

श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन-श्रद्धा खुशबू॥११॥

(सोरठा)

सुपार्श्वप्रभु दुखहार, जग को सुख के धाम हो।
क्या गाएँ गुणमाल, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(हरिगीतिका)

जिनवर सुपारसनाथ हम पर भी, दया अब कीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

(सप्त व्यसन त्याग वर्णन)

जो भी बिना पुरुषार्थ करके, धन कमाना चाहते।
वो ही जुआ लत लाटरी से वित्त इज्जत नाशते॥
पाण्डव समान बने न जग सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

जो यज्ञ भूमि पेट अपना, कब्रभूमि बना रहे।
जो मांस खाके पेट भरते, धर्म जन्म गवाँ रहे॥
बक नृप समान बने न जग सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं मांसव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

जो धर्म पैसा स्वास्थ्य इज्जत, सब खराब करा रहे।
फिर भी नशा नहिं तज सके तो, शुभ शराब बता रहे॥
जग द्वारिका सा ना जले सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं मद्यव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

जो दूसरों का धन हड़प अपनी, तिजोरी भर रहे।
वो प्राणियों का दिल दुखा के, पाप चोरी कर रहे॥
शिवभूत ब्राह्मण जग न हो सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं स्तेयव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

निर्दोष जीवों को सताकर, शौक अपना जो करें।
बनके शिकारी धर्म नाशें, तज दया हिंसा करें॥
जग ब्रह्मदत्त यथा न हो सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं शिकारव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

जो नारि तन-व्यापार करके, शील धर्म नशाएगी।
सम्बन्ध उनसे जो रखे तो, लाज उसकी जाएगी॥
जग चारुदत्त यथा न हो, वेश्यागमन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं वेश्यागमनव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

जो अन्य जन की नारियों पर, डालता नजरें बुरी।
हो हाल रावण सा उसी का, मारता खुद पर छुरी॥
दुनियाँ न रावण सी बने सो, ये व्यसन हर लीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं परस्त्रीव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

(सप्त तत्त्व वर्णन)

हम जीव समझें और जाने, शुद्ध करके पा सकें।
यह हो सके सम्भव प्रभु जो, आपके गुण गा सकें॥

शुद्धात्म तुम सम पा सकें, ऐसी दया अब कीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं निजशुद्धजीवतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

जो तत्त्व पुद्गल जड़ अचेतन, वो अजीव कहा रहा।
वह जीव से ज्यों ही मिले त्यों, कर्म कष्ट दिला रहा॥
हो जीव से पुद्गल जुदा, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं अजीवतत्त्वपृथक्कर्त्ता श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

जिससे शुभाशुभ कर्म आते, है वही आस्रव कहा।
वह ही हमें संसार दुख दे, ज्ञानियों ने वह तजा॥
हम भी निरास्रव बन सकें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण आस्रवतत्त्वविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

इस जीव से मिलना करम का, बन्ध तत्त्व कहा गया।
यह बन्ध जग दुख-द्वन्द्व दे सो, यत्न कर छोड़ा गया॥
निर्बन्ध हम निर्ग्रन्थ हों, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णबन्धतत्त्वविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

जो रोकता है कर्म आना, तत्त्व संवर जान लो।
दो भेद का हर कर्म रोके, अटल श्रद्धा मान लो॥
सम्पूर्ण संवर हम करें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णसंवरतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

जब कर्म आंशिक झड़ रहे तो, निर्जरा शुभ तत्त्व वो।
नित मोक्ष राही चाहता दो-दो धरे वह भेद को॥
हो निर्जरा सब कर्म की, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णनिर्जरातत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

जब निर्जरा सम्पूर्ण हो तो, तत्त्व वो ही मोक्ष है।
सारे मुमुक्षू सज्जनों को, प्राप्त करना लक्ष्य है॥
हम मोक्ष पाएँ शीघ्र प्रभु, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं मोक्षतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

(सप्त भय वर्णन)

हो इस जगत् में क्या हमारा, भय इसी से ग्रस्त जो।
इहलोक-भय इसको कहा, ज्ञानी इसी से मुक्त हो॥
हम मुक्त हो इससे तुरत, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं इहलोकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

क्या मृत्यु के उपरान्त होगा, नरक हो या स्वर्ग हो।
परलोक-भय ज्ञानी तजे, चैतन्य में अनुरक्त हो॥
परलोक-भय हम हर सकें, ऐसी दया कर कीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं परलोकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

सुख में सुखी दुख में दुखी जो, हो वही बहिर्मुखी।
आकुल-निराकुल भाव की, दुर्वेदना करती दुखी॥
हम वेदना-भय हर सकें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं वेदनाभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

सत्ता हमारी नश न जाए, हो सुरक्षित ज्ञान भी।
ऐसी अरक्षा से डरे जो, वह रहा अज्ञान ही॥
हम भय अरक्षा का हरें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं अरक्षाभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

जिसमें प्रवेश न हो किसी का, नाम उसका गुप्ति जय।
जो है खुला भय का जनक, तो कष्टदान अगुप्ति भय॥

हम भय अगुप्ति का हरें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं अगुप्तिभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

सम्पूर्ण प्राणों का निकलना, देह का ही है मरण।
ज्ञानी कहें आतम हमारी, है शरण कैसा मरण॥
हम भी मरण का भय हरें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं मरणभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

कुछ भी नहीं आश्चर्य जग में, भेद के विज्ञान में।
लेकिन अचानक क्यों डरें, हम मूढ़मत अज्ञान में॥
भय दूर आकस्मिक करें, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं आकस्मिकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

जो राग आग विभाव दहके, तत्त्व को झुलसा रहा।
संसार को निज चक्र में वह, राग ही उलझा रहा॥
वैराग्य पाएँ राग तज, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं रागभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

है द्वेष की पीड़ा भयंकर, नित करे बेचैन जो।
जिसने यहाँ न विभाव जीता, है कहाँ जिन-जैन वो॥
समता मिले जय द्वेष हो, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं द्वेषभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

जिस मोह ने गाफिल किया, डेरा जमाकर विश्व को।
वह मोह जय उसने किया, जो तत्त्व समझे शिष्य हो॥
शिष्यत्व का जय मोह हो, ऐसी दया कर दीजिये।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिये॥

ॐ ह्रीं मोहभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

अस्त हो रहे भक्त जगत् ने, तुमको आज पुकारा है।
हमको दे दो नाथ सहारा, तुम बिन कौन हमारा है॥
नाँव हमारी क्यों ना थामी, बीच भँवर में क्यों छोड़ा।
भूल हुई क्या हमसे भगवन्, हमसे क्यों मुख भी मोड़ा॥
या तो हमको पूर्ण डुबा दो, या फिर नैया पार करो।
या तो हमसे नाता तोड़ो, या जल्दी उद्धार करो॥
हमको आप डुबा नहिं सकते, अतः शीघ्र उद्धार करो।
अर्घ्य रूप में भक्त भावना, नमो नमो स्वीकार करो॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु के द्वार का, देखा अद्भुत नाम।
अतः विनय से हम करें, सादर नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

आस्था से आराध्य का, हम भी करते ध्यान।
सुपार्श्व प्रभु का इसलिए, अब करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

सारी दुनियाँ घूम चुके हम, जगह-जगह भी छान चुके।
नाथ! आप सम कोई न दूजा, ऐसा हम पहचान चुके॥
सुन्दरता की अद्भुत मूरत, चमत्कार आकर्षण है।
अतः भक्ति से खिचे आए हम, नमस्कार भी क्षण-क्षण है ॥१॥
एक चेतना को ना पाया, समझे मुक्त न संसारी।
रत्नत्रय को धार सके ना, चउ आराधन ना धारी॥
पंच पाप में लीन रहे पर, पंच परमपद ध्या न सके।
षट्-कायों की हिंसा की पर, षट्-आवश्यक पा न सके॥२॥
सात व्यसन में सात भयों में, सात नरक में हम उलझे।
सात तत्त्व को समझ सके ना, सात भंग भी ना सुलझे॥

सात भयों से डर-डरकर हम, आठ कर्म को हर न सके।
आठ मूलगुण धार सके ना, अष्टम वसुधा पा न सके॥३॥
नवमल द्वारों में फँस करके, नौ पदार्थ को लख न सके।
नव देवों को पूज सके ना, नो-कर्मों से बच न सके॥
दस प्राणों को त्याग सके ना, सम्यग्दर्शन दस न धरे।
दस धर्मों को पाल सके ना, कैसे हो कल्याण अरे ॥४॥
हो कल्याण सभी का स्वामी, ऐसा भाव हमारा है।
तभी आपके गुणगाने को, खोजा द्वार तुम्हारा है॥
चरणों में हम करें प्रार्थना, अर्घ्य चढ़ाएँ हाथों से।
क्या? मंतव्य हमारा है प्रभु, कह न सकें हम बातों से॥५॥
फिर भी कर गुणगान आपका, हमें बहुत उल्लास हुआ।
रागद्वेष कुछ नाश हुआ है, सम्यक् ज्ञान प्रकाश हुआ॥
स्वाभाविक जिनरूप झलकता, मिथ्या चक्र उदास हुआ।
विकसित आत्मिक भक्ति हुई है, धन्य! धन्य! जिनदास हुआ॥६॥
वैभाविक जो कर्म-आवरण, भक्तातम के क्षीण करो।
विषयासक्ती माया ममता, जग-आकर्षण शीर्ण करो॥
आतम परमातम का अन्तर, हे सुपार्श्वप्रभु! जीर्ण करो।
भक्तों की लो खूब परीक्षा, पर जल्दी उत्तीर्ण करो॥७॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, अंतरमुखी भरो गंगा।
जिससे भक्तों का यह आतम, हो शुद्धातम हो चंगा॥
चरण शरण जिनभक्ति सदा हो, जिससे साँचे भक्त बनें।
फिर 'सुव्रत' प्रभु की करुणा से, शुद्ध बने, फिर मुक्त बनें॥८॥

(दोहा)

नाथ! आपके पुण्य से, जागा अपना पुण्य।
दर्श मिला सान्निध्य तो, गुण गाएँ हों धन्य॥
अल्प बुद्धि हम क्या कहें, हे प्रभु! तव बड़भाग्य।
थोड़ा भी जो छू लिया, वही भक्त सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति सुपार्श्वनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

रहे मूलनायक जहाँ, पार्श्वनाथ भगवान्।
पूर्ण 'बबीना' में हुआ, सुपार्श्वनाथ विधान॥
दो हजार तेरह सितम्बर रवि दिन, उन्नीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : रंगमा-रंगमा......)

आरती.... आरती..... आरती.... रे।
प्रभु तेरी उतारें, हम आरती...रे॥

सुपार्श्व प्रभुजी जिनवर हमारे[२] ,
जिनवर हमारे स्वामी जिनवर हमारे[२]
मोक्षमहल के सारथी रे-सारथी रे॥
प्रभु तेरी उतारें....॥१ ॥

सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वी के नन्दा[२],
पृथ्वी के नन्दा-स्वामी, पृथ्वी के नन्दा[२],
दुनियाँ तुम्हीं को निहारती रे-निहारती रे॥
प्रभु तेरी उतारें....॥२ ॥

जिसने भी पाई कृपा तुम्हारी[२],
कृपा तुम्हारी स्वामी कृपा तुम्हारी[२]
उसको तो मुक्ति पुकारती रे-पुकारती रे॥
प्रभु तेरी उतारें....॥३ ॥

हमको भी तारो जल्दी निहारो[२],
जल्दी निहारो, स्वामी जल्दी निहारो[२]
शरणा तुम्हारी तो तारती रे - तारती रे॥
प्रभु तेरी उतारें....॥४ ॥

'सुव्रत' को जिनवर तुम न भुलाना[२],
तुम न भुलाना, स्वामी तुम न भुलाना[२]।
भक्तों को दूरी अब मारती रे - मारती रे॥
प्रभु तेरी उतारें....॥५ ॥

❑ ❑ ❑

श्री चन्द्रप्रभ विधान

जय बोलिए

चन्द्रपुरी के छोरे, सकल परिग्रह छोड़े, चैतन्य चन्द्रोदय के चाँद चकोरे, प्रभु जी गोरे-गोरे, चाँद सितारे जिन्हें देखकर शर्माएँ, जिनकी भक्ति को सब सिर झुकाएँ ऐसे परमपूज्य

श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्‌भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

अंध-बन्धमय लोक को, दिए दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥१॥
पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥२॥
फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिए।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बन्ध किए॥३॥
अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥४॥
घातिकर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥५॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥६॥

सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥
चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे ॥७॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय) (कषाय-मद)

जब औरों पर जोर चले ना, तभी क्रोध हम कर बैठे।
गैर जले या नहीं जले पर, आप स्वयं हम जल बैठे॥
क्रोध आग को क्षमा नीर दो, क्रूर क्रोध परिणाम हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं परस्परक्रोध-वैरविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

गुणियों का सम्मान न करना, यही मान का लक्षण है।
वंश कंश रावण कौरव के, मिटे इसी से तत्क्षण हैं॥
मान विजय को विनय सिखाओ,अक्कड़पन अभिमान हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं मानसिकरोग-मानविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

वेद-पुराणों-शास्त्रों के यदि, ज्ञानी बनकर कुपथ चले।
पढ़े-लिखे वे मूरख जैसे, करें ज्ञानमद फूल चले॥
भले रहें अज्ञानी लेकिन, हमें भक्ति का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं बुद्धिविकार-ज्ञानमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

अपनी जय-जयकार प्रशंसा, मान प्रतिष्ठा पूजाएँ।
सुनकर फूले भरे जोश से, पूजा मद वो कहलाएँ॥
पूजा-मद को जीत सकें हम, अपयश मद अपमान हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं अपयश-पूजामदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

वंश पिता दादा का वैभव, बढ़ा-चढ़ा जो कुल पाना।
सुना-सुनाकर उसकी बातें, अहंकार से भर जाना॥
यही जीतने कुल-मद हमको, जिन-कुल का वरदान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं क्लेशदायक-कुलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

नाना मामा माँ का कुल जो, उच्च जाति को पा फूले।
मोक्षमार्ग में नहीं लगा के, दर्प भरे मद में झूले॥
यही जाति-मद जीत सकें हम, ऐसा सम्यग्ज्ञान भरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं भेदभावजनक-जातिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

शौर्य पराक्रम ऐसा जिससे, कर्म शैल भी हर सकते।
पर उससे आतंक किया तो, नरक सैर भी कर सकते॥
नश्वर ऐसा बल-मद तजने, आत्मशक्ति का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं शक्तिहारक-बलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

कठिन साधना तूफानी कर, ऋद्धि प्राप्त कर मद करना।
तंत्र-मंत्र जादू-टोना कर, पाखंडी शिवपथ करना॥

यही ऋद्धि-मद त्याग सकें हम, मोक्षमार्ग का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं कुमंत्रप्रभावहारक-ऋद्धिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

घोर तपस्या भाँति-भाँति की, करके खुद को बड़े कहें।
मुझ जैसा है कौन तपस्वी, तन शोषण कर खड़े रहें॥
पतन द्वार ये तप-मद हरने, हमरा भी कुछ ध्यान धरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं पतनद्वार-तपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

अतिशय सुन्दर कामदेव सा, तन पाकर अभिमान करें।
हँसी उड़ाएँ कुरूप जन की, खुद को श्रेष्ठ महान कहें॥
यही रूप-मद त्याग सकें यों, दान भेद विज्ञान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं भेदविज्ञानहारक-रूपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

कपट करें विश्वास त्याग कर, कथनी करनी एक नहीं।
तन के उजले मन के काले, बगुला भक्ति नेक नहीं॥
मुँह में राम बगल में छुर्री, जग माया के काम हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं कलंक-मायाविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

तज संतोष लोभ लालच में, जीवन कितने गवाँ दिए।
लोभ पाप का बाप रहा ये, गुरु की वाणी भुला दिए॥
तृष्णा तृप्त हुई ना अपनी, संतोषामृत दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥

ॐ ह्रीं शान्तिहारक-लोभविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

(१२ अविरित त्याग)

पृथ्वीकायिक जीवों को हम, रोज रात-दिन सता रहे।
सोना चाँदी हीरा पत्थर, इनसे खुद को सजा रहे॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीसम्बन्धी-दुःखविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

ओस बर्फ जल-ओला कुहरा, इन्हें मारकर हम जीते।
जल जीवन है ऐसा कहके, इन्हें कष्ट दे जल पीते॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं जलसम्बन्धी-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

दीप ज्योति ज्वाला अंगारे, आग-अग्निकायिक हैं जो।
स्वार्थ सिद्धि को इन्हें मारते, निर्बल दीन हीन हैं वो॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं अग्निसम्बन्धी-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

पवन हवा कूलर पंखे से, मरें वायुकायिक सारे।
श्वासों को लेने वाले सब, इन पर चला रहे आरे॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं वायुसम्बन्धी-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

पेड़ लता फल पत्ते पौधे, यही वनस्पतिकायिक हैं।
अपने-सुख आसक्त इन्हीं के, बेदर्दी से मारक हैं॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिसम्बन्धी-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

जो होते दो-तीन-चार या, पंचेन्द्री को त्रस कहते।
गैरों की खातिर ये प्राणी, पग-पग पल-पल दुख सहते॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं प्राणिमात्रसम्बन्धी-समस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

एक परस इन्द्री में फँसकर, हाथी प्राण गँवाते हैं।
यश सम्मान इसी से घटते, जय करके सुख पाते हैं॥

आठ तरह परसन जीतें यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

पाँच तरह के भोजन के रस, सरगम के रस चखे सदा।
लाज नशाए युद्ध कराये, मछली इसमें फँसे सदा॥
ऐसी रसना विजय करें यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं रसनादोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

जो दुर्गंध सुगंध को सूँघे, वही घ्राण इन्द्रिय होती।
इसमें जो आसक्त हुए तो, भौंरे जैसी गति होती॥
ऐसी इन्द्रिय घ्राण विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं नासिकादोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

नीला पीला श्याम श्वेत या, लाल रंग जो बतलाती।
मरे पतंगा जिससे वो ही, चक्षु इन्द्री कहलाती॥
ऐसी इन्द्री चक्षु जय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

सा रे गा मा पा धा नी जो, सुने सात सुर कान वही।
साँप हिरण इसमें फँस मरते, आत्म गीत का ज्ञान नहीं॥
ऐसी इन्द्री श्रोत्र विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं श्रुतदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

सीधी-सादी सभी इन्द्रियाँ, टेढ़े-मेढ़े मन-दादा।
राग-द्वेष कर जग भटकाते, करते दुखी बहुत ज्यादा॥
करें नपुंसक मन पर जय यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी, भवसागर से पार करो॥

ॐ ह्रीं समस्तहृदयरोगविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

नाथ! आप सब कुछ जानो पर, तुम्हें कोई न जान सके।
सबके रक्षक पालन कर्त्ता, तुम्हें कौन पहचान सके॥
फिर भी उत्तम वे बनते जो, शीश झुका सम्मान करें।
पूज्य गुणों के गौरव बनते, जो तेरा गुणगान करें॥

(दोहा)

चन्द्रपुरी के चन्द्र को, सविनय टेकें शीश।
अर्घ्य समर्पण हम करें, मिले शान्ति आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

चन्द्रप्रभु भगवान् के, गुण-गण जग विख्यात।
जयमाला के नाम हम, कहते अपनी बात॥

(ज्ञानोदय)

महासेन नृप लक्ष्मणा के, राज कुँवर चंदा स्वामी।
चन्द्रपुरी के चन्द्र चकोरे, चित्त चोर अंतर्यामी॥
चाँदी-चाँदी सबकी करते, चाँदी जैसे चमक रहे।
तभी भक्त चाँदी सोना ले, चन्द्र चरण में चहक रहे ॥१॥
चारु चन्द्र की चमक चाँदनी, चंदन उनको रुचते क्या?।
जिनने दर्शन किए आपके, सूर्य चाँद वे भजते क्या?॥
चकनाचूर हुई चंचलता, चन्द्रप्रभु की चर्चा से।
चूर-चूर अभिमान हुआ फिर, नाथ! आपकी अर्चा से॥२॥
अर्चा करना भूल गए हम, फँसकर दुनियाँदारी में।
तभी हमारी किस्मत फूटी, यारी रिश्तेदारी में॥
हमने जिसको सगा समझ के, अपना सब कुछ सौंपा है।
दगाबाज बन उस प्राणी ने, छुरा पीठ में घौंपा है ॥३॥
समझ हितैषी जिस मानव को, भगवन् जैसा पूजा है।
मतलब निकला तो उसका मुँह, हमें देखकर सूजा है॥

जिन्हें बात करना सिखलाए, वही हमें फटकार रहे।
जिन्हें पिलाया अमृत हमने, वही जहर दे मार रहे ॥४॥
फूल माल जिनको पहनायी, बने गले का वे फंदा।
जिनको रत्नों सा चमकाये, वे हमको कहते गंदा॥
नाथ! बात हम कहें कहाँ तक, अपनी करुण कहानी की।
हुआ हमारा जीवन ऐसा, ओस बूँद ज्यों पानी की॥५॥
ये नशने से बच जाता है, नाम आपका सुनकर के।
फिर भी चन्दा ग्रह में बाँधे, लोग सोम दिन चुनकर के॥
समंतभद्र की सुनकर भक्ति, हुए प्रकट तो शोर हुआ।
जैनधर्म का बिगुल बजा तो, अतिशय चारों ओर हुआ॥६॥
ऐसा अतिशय अब दिखला दो, विघ्न कष्ट दुख नाश करो।
दुनियाँ मोक्ष महल बन जाए, सबके दिल तुम वास करो॥
व्यसन बुराई पाप मिटें सब, दया अहिंसा महक उठें।
'सुव्रत' अपना धर्म समझ के, चंदा जैसे चमक उठें॥७॥

(दोहा)

छन्द शब्द का ज्ञान ना, फिर भी भक्ति अथाह।
चन्द्रप्रभु को पूज हम, चलें मुक्ति की राह॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, चन्द्रप्रभ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री चन्द्रप्रभविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

नगर 'बिलहरा' में हुआ, पावन पावस पर्व।
जहाँ मूलनायक रहे, चन्द्रप्रभु पद-सर्व॥
चन्द्रप्रभु की छाँव में, चन्द्रप्रभु विधान।
'विद्यागुरु' पद ध्यान कर, पद्मसिन्धु सम्मान॥
दो हजार सन् दस रहा, शरद पूर्णिमा योग।
'मुनिसुव्रत सागर' रचे, भूल तजें भवि लोग॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(तर्ज : करें भगत् हो आरती......)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम-झूम के[2]
झूम-झूम के.....[4]
महासेन माँ - लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती........॥
ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम-घूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
जगह-जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन-सुन के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

❑ ❑ ❑

श्री सुविधिनाथ विधान

जय बोलिए

सुविधि के विधायक, अनन्तज्ञ आत्मज्ञायक, मोक्षमार्ग प्रदायक,
तीर्थ के महानायक, ग्रह-परिग्रह विघ्न विनाशक,
भक्त हृदय के महाशासक, परमपूज्य
श्री सुविधिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदंत अरिहन्ता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥
सर्वत्र आपका यश है, है महिमा खूब तुम्हारी।
तुम अतिशय खूब दिखाते, जय-जय हो नाथ तुम्हारी॥
जो जय-जय करे तुम्हारी, उसका हर बन्ध विलय हो।
फिर उसको क्या भय संकट, उसकी भी फिर जय-जय हो॥
बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाये।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म-मृत्यु दुख पाए॥

अब जन्म-मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग-द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥
अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाए, नहिं पूजन पाठ रचाई॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ्य बनाके।
कई बार चढ़ाके लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आए हैं घबराके, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥
अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुकाकर शीश।
धर्म-धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

सुविधि प्रभु अनुपम रहे, दें इच्छित वरदान।
शाश्वत गुण पाने करें, नमन भजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को पाने भक्ति करें ॥१॥

फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥२॥

जिनका तन अशान्त रहता हो, वाणी आकुल-व्याकुल हो।
सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥
उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥३॥

महापद्म नामक राजा जो, गुणी प्रजा को सुखी किया।
जिनको देकर ज्ञान भूत हित, प्रभु ने अंतर्मुखी किया॥

जिनके उपदेशामृत को पी, राजा चिन्तन मग्न हुआ।
भव-भोगों से विरक्त होकर, मोक्षमार्ग संलग्न हुआ॥४॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधी।
और अन्त में समाधि धर कर, प्राणत सुर पदवी साधी॥
चले स्वर्ग से काकंदीपुर, राजा थे सुग्रीव जहाँ।
रही पट्टरानी जयरामा, हुआ आपका जन्म वहाँ॥५॥
इन्द्रों ने जन्मोत्सव करके, पुष्पदंत यह नाम रखा।
राज्य प्रेम पूर्वक भोगा फिर, जिनको उल्कापात दिखा॥
राजा को वैराग्य हुआ तो, लौकान्तिक ने पद पूजे।
सुमति पुत्र को राज्य सौंपकर, सूर्य प्रभा से वन पहुँचे॥६॥
पुष्पक वन में पुष्पदंत ने, पुष्पवृष्टिमय तप ओढ़ा।
पंचमुष्टि केशलौंच किए फिर, पंच पाप परिग्रह छोड़ा॥
पंच महाव्रत धार लिए तो, रूप दिगम्बर संत हुए।
पुष्पमित्र आहारदान से, जिनशासन जयवंत हुए॥७॥
चार वर्ष छद्मस्थ बिताकर, नागवृक्ष के नीचे जा।
केवलज्ञान प्राप्त कर डाला, सुरनर पर्व करें गा-गा॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर के गुण, क्या इससे सुन्दर होगा॥८॥
विहार कर सम्मेदशिखर के, उच्च कूट सुप्रभ पर जा।
हजार मुनि के साथ शाम को, मोक्षमहल में वसे अहा!
किन्तु कठिन यह मोक्ष महापथ, हमको सरल बना डाला।
अंतरंग-बहिरंग नमन कर, जिनको शीश झुका डाला॥९॥
जय ऐसे प्रभु पुष्पदंत की, जय-जय से रज कर्म गली।
भूत डाकिनी ग्रह बाधा फिर, क्यों ना भागें ढूँढ गली॥
किन्तु शुक्र ग्रह शुक्र दिवस में, इन्हें बाँधते कुछ पागल।
सुनो! इन्हीं के नाम मात्र से, क्षण में हो मंगल-मंगल॥१०॥
अब इतनी सी विनय आपसे, संकट उलझन दूर करो।
इतना अगर न कर सकते तो, हममें साहस धैर्य भरो॥

लाभ हानि सुख दुख सब सहके, लीन रहें प्रभु चरणों में।
पूजन पाठ तभी सार्थक जब, 'सुव्रत' हों शिव शरणों में॥११॥

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान्, मगर चिह्नमय शोभते।
हम करने कल्याण, सादर गुण गा पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, पुष्पदंत जिनराज॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(नवग्रह वर्णन)

नवग्रह से होकर दुखी, कर बैठे अन्याय।
सुविधिप्रभु को कर नमन, होंगे दोष पलाय॥

(जोगीरासा)

सूरज-ग्रह की शान्ति हेतु जो, पद्मप्रभु की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

चन्दा-ग्रह के शान्ति हेतु जो, चन्द्रप्रभ की पूजा।
सोमवार में जिन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

मंगल-ग्रह की शान्ति हेतु जो, वासुपूज्य की पूजा।
मंगल दिन में उन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मंगलग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

अरिष्ट बुध-ग्रह शान्ति हेतु जो, आठों प्रभु की पूजा।
दिन बुधवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

अरिष्ट गुरु-ग्रह शान्ति हेतु जो, आठों प्रभु की पूजा।
दिन गुरुवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

शुक्र-ग्रह की शान्ति हेतु जो, पुष्पदन्त की पूजा।
शुक्र दिवस में उन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

अरिष्ट शनि-ग्रह शान्ति हेतु जो, मुनिसुव्रत की पूजा।
दिन शनिवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

राहु-ग्रह की शान्ति हेतु जो, नेमिनाथ की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

केतु-ग्रह के शान्ति हेतु जो, मल्लि पार्श्व की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहबाधाविभ्रम-निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

(नवधा भक्ति)

श्रावक बनकर व्रत पालन कर, गुरु आह्वानन करना।
भाव भक्ति से गद्-गद् होकर, परिक्रमा भी करना॥
'पड़गाहन' इस प्रथम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं पड़गाहनभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

पड़गाहन कर सद्गुरुओं को, चौके में ले आना।
फिर प्रासुक शुद्धासन देकर, सादर उन्हें बिठाना॥
'उच्चासन' इस दूजि भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं उच्चासनभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

खुशी-खुशी फिर प्रासुक जल से, गुरु के चरण पखारो।
घृणा त्यागकर चरणोदक ले, अपना भाग्य सँवारो॥
'पद-प्रक्षालन' तीजी भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं पदप्रक्षालनभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

अष्ट द्रव्य से झूम-झूम के, गुरुओं के गुण गाओ।
निज घर में गुरुवर को पाके, पूजन पाठ रचाओ॥
'गुरु-पूजन' इस चतुर भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं गुरुपूजनभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

पूजन कर फिर बैठ गवासन, गुरु को टेको माथा।
नमोऽस्तु को आशीष गुरु दें, उच्च उठा के हाथा॥

'प्रणाम' इस पंचम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं प्रणामभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

रागद्वेष भय मोह मान की, सारी गाँठें खोलो।
फिर आहार दान के पहले, मन की शुद्धि बोलो॥
'मन-शुद्धि' षष्ठम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मनःशुद्धिभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

कलह-विरह के शब्द न बोलो, हित-मित आगम-वाणी।
मिश्री मिश्रित कोयल जैसी, कर्णप्रिय कल्याणी॥
'वचन-शुद्धि' सप्तम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं वचनशुद्धिभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

प्रासुक जल से स्नान करके, तन को शुद्ध बनाना।
जैनों का परिधान पहनकर, अनुशासित हो जाना॥
'काय-शुद्धि' अष्टम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कायशुद्धिभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

हो प्रासुक भोजन सामग्री, जो मर्यादा वाली।
नव कोटि से शुद्ध बनाना, धर्मवृद्धि तप वाली॥
नवमी 'जल-आहार-शुद्धि' के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं आहारजलशुद्धिभक्ति-उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

(नव देवता)

घातिकर्म हर बने केवली, निर्दोषी भगवंता।
जगनायक पथ निर्देशक को, पूजें संत महंता॥
नवदेवों में श्री अरिहन्ता, प्रथम देव जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शत्रुभयविनाशनसमर्थ-अरिहन्तदेव श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

सकलकर्म हर लोक शिखर पर, वसे निकल परमातम।
मुक्ति वधू के अनन्त गुण के, निज रसिया शुद्धातम॥
नवदेवों में चिच्च देव प्रभु, सिद्ध दूसरे स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं कर्मोपद्रवभयविनाशनसमर्थ-सिद्धदेव श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

जो छत्तीस गुणों के धारी, चतुस्संघ के स्वामी।
शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, आगम के अनुगामी॥
नवदेवों में आचारज के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं दिशाशूलभयविनाशनसमर्थ-आचार्यदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

जो पच्चीस गुणों के धारी, आत्म तत्त्व विज्ञानी।
आगम के रहस्य उद्‌घाटक, भक्तों के वरदानी॥
नवदेवों में उपाध्याय के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं षडयन्त्रभयविनाशनसमर्थ-उपाध्यायदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

जिनशासन की पता पताका, सब जग में फहराये।
जो अट्ठाईस मूलगुणधारी, ज्ञानी ध्यानी भाए॥
नवदेवों में साधु देव के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मोहविभ्रमविनाशनसमर्थ-साधुदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

सत्य अहिंसा दया भाव का, अंतर बाह्य धरम जो।
अनेकान्त निश्चय व्यवहारी, सातों भंग वचन जो॥
नवदेवों में छटवे हैं जिन, धर्म देव के स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं धर्मविभ्रमविनाशनसमर्थ-जिनधर्मदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

दिव्य वचन अरिहन्त देव के, गणधर गुरु जो गूँथे।
जिन आगम के शास्त्र ग्रन्थ जो, दुनियाँ जिसको पूजे॥

नवदेवों में जिन आगम वह, पूज्य देव के स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं साहित्यविभ्रमविनाशनसमर्थ-जिनागमदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२५॥

नवदेवों की जिन प्रतिमाएँ, कृत्रिम अकृत्रिम जो।
रत्न धातु पाषाण आदि की, देती पूज्य धरम जो॥
नवदेवों में चैत्य देव जिन, बतलाते कल्याणी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं मुद्राभयविनाशनसमर्थ-जिनचैत्यदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.॥२६॥

देव शास्त्र गुरु के आलय जो, जिन मंदिर कहलाते।
जिनमें आकर भक्त लोग सब, आत्म शान्ति भी पाते॥
नवदेवों में जिन चैत्यालय, देव रहे जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं विभावछायाभयविनाशनसमर्थ-जिनचैत्यालयदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

पूर्णार्घ्य

पुष्पदन्त प्रभु सुविधिनाथ जी, दुनियाँ में हैं ऐसे।
जैसे तारों में है चँदा, कमल कीच में जैसे॥
ज्ञान शब्द सुर छन्द पंगु है, फिर गुण गाएँ कैसे।
अतः अर्घ्य से करें नमोऽस्तु, नदी सिन्धु को जैसे॥

(सोरठा)

शीघ्र करो स्वीकार, द्रव्य भाव वचनावली।
सुविधिनाथ कर्त्तार, खिलवा दो चेतनकली॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भक्ति भरी जिन अर्चना, करने का अरमान।
सही गलत का ज्ञान ना, फिर भी गाएँ गान॥

(पद्धरी)

जय सुविधिनाथ जिनवर महान्, जय पुष्पदंत तीर्थेश धाम।
जय कर्म विजेता जगन्नाथ, अब रखो भक्त के शीश हाथ॥१॥
जय त्याग मूर्ति करुणा निधान, हम को दे दो तुम वरद दान।
जो भी तुमको करते प्रणाम, वे स्वयं बने हैं तुम समान॥२॥
ऐसी करुणा की मिले छाँव, जो हमको देवें सिद्ध गाँव।
अब सुनो हमारी भी पुकार, हम क्यों भटके अब द्वार-द्वार ॥३॥
भयभीत रहें क्यों नवग्रह से, जब नाता अपना जिनगृह से।
परिग्रह जिसका है मूलस्रोत, यह प्रभु कहते हो ओत-प्रोत॥४॥
हो जाए त्याग परिग्रह जिसका, क्या कर लेंगे नवग्रह उसका।
अतः परिग्रह का त्याग भाव, अब कृपा करो दो, जिनस्वभाव॥५॥
जो वीतराग विज्ञान देत, प्रारम्भ करो भक्ति समेत।
जिसमें नवधाभक्ति महान्, जो श्रावक के धार्मिक निशान॥६॥
फिर साथ-साथ नवदेव गान, जो जिनशासन में हैं महान्।
जो सुविधिनाथ से हुए प्राप्त, जिनमें झलके चैतन्य आप्त॥७॥
व्यवहार रहे साधन स्वरूप, जो निश्चय देता आत्मरूप।
हे! सुविधिनाथ तुम हो दयाल,अब मालामाल करो निहाल॥८॥
है 'सुव्रत' की निष्ठा अपार, सो किए भक्ति हो भव सुधार।
बस यही कृपा दो भक्तनाथ, छूटे न आपका कभी साथ॥९॥

(सोरठा)

सुविधि-सुविधि दातार, हमको भी विश्राम दो।
बस श्रद्धा उरधार, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पुष्पदंत जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री सुविधिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, सुविधिनाथ विधान॥
दो हजार तेरह नवम्बर, गुरु अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

झूम[२], झूम[२] जिनवर
उतारें हम आरतिया, निहारें हम मूरतिया....
पुष्पदंत प्रभु आप हो, तीन लोक के नाथ हो।[२]
नवमें तीर्थंकर न्यारे, जिन्हें झुकाएँ माथ हो ॥[२]
झूम........ ॥१॥
सुग्रीव के लाड़ले, जयरामा के प्यारे हो।[२]
काकंदी जग के राजा, सबके नयन सितारे हो ॥[२]
झूम........ ॥२॥
पर की धूल नशायी है, आतम कली खिलाई है।[२]
निज रस के रसिया बनकर, धर्म ध्वजा फहराई है ॥[२]
झूम........ ॥३॥
पर के हर काँटे हर लो, नजर दया की भी कर दो।[२]
'सुव्रत' की अर्जी सुनके, अपने सम हमको कर लो ॥[२]
झूम........ ॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री शीतलनाथ विधान

जय बोलिए

मनसंताप के हारी, मंगल प्रतापकारी, सुख-शान्तिकारी, मोक्षमहल निहारी, शुद्धात्म विहारी, निर्दोष निर्विकारी, जिनशासन के अधिकारी, भक्तों को शीतलकारी, शीतल परिणामी-शीतलधाम के स्वामी परमपूज्य

श्री शीतलनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥

नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

आरण नामक स्वर्ग लोक तज, चैत्र अष्टमी कृष्ण रही।
गर्भ सुनन्दा माँ का पाया, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस जब आई, नगर भद्रपुर जन्म लिया।
दृढ़रथ महाराज का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन - भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तप कल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण चौदस की तिथि को, घातिकर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥

अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ल अष्टमी संध्या, पद्मासन से कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्टकर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्याएँ शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥१॥
वन विहार को कभी गए तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥
क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बन्ध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥२॥
दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥
विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।
किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥३॥
विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥
देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥४॥

उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घातिकर्म रज हर डाली॥५॥
दोष अठारह नशा दिए तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥६॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(दस करण) (चौपाई)

कर्म बन्ध से हम अज्ञानी, दर-दर ठोकर खाते स्वामी।
तजें आप सम हम हर बन्धा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

उत्कर्षण से कर्म अवस्था, बढ़ जाए दे दुख का रस्ता।
तुम सम तज उत्कर्षण धंधा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उत्कर्षण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

आतम में जो कर्म ठहरते, पीड़ादायक सत्ता कहते।
तुम सम सत्ता करें भंगा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-सत्ता विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

कर्म करें जब सुखिया-दुखिया, कर्म-उदय वह कहते मुखिया।
तुम सम तजें उदय की गंगा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उदय विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

कर्म उदय जब ना आ पाते, उसको उपशम ग्रन्थ बताते।
तुम सम तज लें उपशम संगा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उपशम विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

समय पूर्व जो उदय कराती, उदीरणा जिनवाणी गाती।
उदीरणा तुम सम तज द्वन्द्वा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उदीरणा विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

कर्म संक्रमण अंतर वाले, खा जाते हैं आत्म उजाले।
करें संक्रमण तुम सम ठंडा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-संक्रमण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

अपकर्षण से कर्म उमरिया, कम होती ये नहीं खबरिया।
तुम सम तज अपकर्षण रंगा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-अपकर्षण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

उत्कर्षण अपकर्षण ना हो, वही निधत्ति कर्म कहा हो।
तुम सम तजें निधत्ति जंगा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-निधत्ति विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

कर्म निकाचित वो कहलाते, चार करण हो जहाँ न पाते।
तुम सम तजें निकाचित फंदा, नमोऽस्तु! शीतलनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

कर्मों के ये दस करण, त्यागे शीतलनाथ।
करें नमोऽस्तु भज चरण, सादर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं कर्म-निकाचित विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

(देवों के दस भेदों से पूजित) (लय—आनन्द अपार है...)

आनन्द आपर है, शीतल प्रभु का द्वार है।
सुख शान्तिदायक स्वामी की, हो रही जय-जयकार है॥

इन्द्रों के परिवार पूजते, शीतलनाथ जिनन्दा जी।
भक्तों का क्या कहना भैया, पाते परमानन्दा जी॥आनन्द...

ॐ ह्रीं इन्द्रपूज्य सर्व-वैभवदायी श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

इन्द्रों सम सामानिक पूजें, शीतलप्रभु की पगतलियाँ।
जिससे होते दिवस दशहरा, रातें हों दीपावलियाँ॥आनन्द...

ॐ ह्रीं सामानिकपूज्य-निजसमकर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

त्रायस्त्रिंश रहे संख्या में, बस तेतीस निराले से।
पिता गुरु मंत्री के जैसे, प्रभु को भजने वाले से॥आनन्द...

ॐ ह्रीं त्रायश्त्रिंशपूज्य-सर्वबन्धनहर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

प्रेमी मित्र सभासद जैसे, वही पारिषद कहलाते।
सिद्ध सभा में प्रवेश पाने, भक्ति अर्चना दिखलाते॥आनन्द...

ॐ ह्रीं पारिषदपूज्य-मनोकामनापूरक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

आत्मरक्ष वे कहलाते जो, रहे अंगरक्षक जैसे।
प्रभु की पूजा करके कहते, रहें नाथ! बिन हम कैसे॥आनन्द...

ॐ ह्रीं आत्मरक्षपूज्य-चैतन्यविधायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

करें लोक का पालन जो सुर, लोकपाल वे कहलाते।
कोषाध्यक्ष अर्थचर जैसे, आतमधन पर ललचाते॥आनन्द...

ॐ ह्रीं लोकपालपूज्य-निजधनप्रदायकश्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

पदाति सेना सात तरह की, वही अनीक नाम धारें।
कर्म शत्रु पर विजय प्राप्ति को, लें श्रद्धा की तलवारें ॥आनन्द...

ॐ ह्रीं अनीकपूज्य-शत्रुविजयप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

गाँव शहर के जैसे वासी, देव प्रकीर्णक कहलाते।
सिद्ध शहर में वसने हेतु, अरिहन्तों के गुण गाते॥आनन्द...

ॐ ह्रीं प्रकीर्णकपूज्य-निजनिवासप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

आभियोग्य सुर दासों जैसे, वाहन आदिक बन सेवें।
लेकिन जिनवर की सेवा कर, जीवन सफल बना लेवें ॥आनन्द...

ॐ ह्रीं आभियोग्यपूज्य-लोकपूज्यताप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

बहु पापी किल्विषिक कहाते, सीमा तट जैसे वासी।
फिर भी पुण्यात्मा बनने को, जिन-पूजा के अभिलाषी॥आनन्द...

(दोहा)

देव भजें दस भेद के, शतेन्द्र के परिवार।
ऐसे शीतलनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं किल्विषिकपूज्य-संकटपापहर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

जग कर्मों की आशाओं से, हम जी न सके मर भी न सके।
आनन्द भरी परमातम को, हम भज न सके पा भी न सके॥
पर जब से नाथ! तुम्हें पूजा, यह आश जगा डाली हमने।
सो नमोऽस्तु का फल यह चाहें, जो पदवी पाई है तुमने॥

ॐ ह्रीं जगत्पूज्य-सर्वकर्मबन्धरहित श्रीशीतलनाथजिनेद्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

मनमानी मन ना करे, तजने मनस्-तरंग।
जयमाला से गीत का, शीतल बनें अनंग॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

पद्म गुल्म जो वत्स देश का, न्यायी राज्य नरेश।
बसंत ऋतु का हुआ समागम, तो क्रीड़ामय देश॥
किन्तु कहीं ऋतु विला गयी तो, व्याकुल दुखी अपार।
राजा को वैराग्य हुआ तब, दिया पुत्र को भार ॥१॥
पद्मगुल्म आनन्द नाम के, मुनि के जाकर पास।
सकल परिग्रह त्याग देह से, विमुख धरे संन्यास॥
रत्नत्रयमय ज्ञान ध्यान तक, सोलहकारण भाव।
तीर्थंकर के नामकर्म का, किया बन्ध सद्भाव॥२॥
तथा आयु के अन्त समय में, समाधि-मरण सँभाल।
आरण नामक स्वर्ग भोग को, भोगे इन्द्र विशाल॥
आयु इन्द्र की पूर्ण भोग कर, लिया भद्रपुर जन्म।
भद्दलपुर या नगर विदिशा, हुआ आज का धन्य॥३॥

गर्भ जन्म तप और ज्ञान के, चार हुए कल्याण।
नेमिनाथ का समवसरण भी, लगा यहीं पर आन॥
इसी विदिशा की धरती पर, पावन वर्षायोग।
महावीर प्रभु किए तभी जो, कण-कण वन्दन योग्य॥४॥
गुरुवर समंतभद्र यहीं पर, बजा गए जिन ढोल।
लिए समाधि इसी धरा पर, भट्टारक अनमोल॥
यहीं उदयगिरि जहाँ गुफाएँ, चरण चिह्न अवशेष।
जहाँ एक मंदिर में शोभित, पारसनाथ जिनेश॥५॥
शिलालेख भी वहीं गुफा में, दिए पुरातन ज्ञान।
तपश्चरण के योग्य धरा यह, कण-कण में भगवान्॥
तभी दिए विद्यागुरुवर जी, भक्तों को आशीष।
समवसरण की अद्‌भुत रचना, जिसके शीतल ईश॥६॥
चौथा काल यहाँ पर था तब, किए सुरों ने पर्व।
गुरु-कृपा से अब भक्तों ने, उत्सव पाए सर्व॥
क्योंकि यहाँ शीतल भगवन् ने, की थी क्रीड़ा बाल।
अर्थ-काम पुरुषार्थ साधकर, त्यागे जग जंजाल॥७॥
धर्म-मोक्ष पुरुषार्थ साधकर, धारा था वैराग्य।
वाह! वाह! क्या राज्य त्यागना केशलौंच सौभाग्य॥
यथाजात बन बने निरम्बर, तीर्थंकर जिनरूप।
समवसरण को छोड़ मोक्ष को, पा बैठे चिद्रूप॥८॥
नाथ! आपकी महिमा गाने, सुरपति नहीं समर्थ।
सुर-छंदों के ज्ञान बिना हम, किए भक्ति बिन शर्त॥
हमें भक्ति फल इतना दे दो, सदा रहे प्रभु ध्यान।
पद चिह्नों पर चलकर होवे, 'सुव्रत' का कल्याण॥९॥

(दोहा)

जयमाला के नाम से, गाए प्रभु के गीत।
समवसरण सा सुख मिले, यही भक्ति की रीत॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा....)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥
(पुष्पांजलिं.....)

॥ इति श्री शीतलनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

पार्श्वनाथ पदधाम में, 'सिलवानी' के ग्राम।
शीतलनाथ विधान का, शुरू किया शुभ काम॥
शान्तिनाथ की छाँव में, 'विद्यागुरु' वरदान।
'रामटेक' में पूर्ण यह, 'सुव्रत' लिखे विधान॥
मंगल पाँच अगस्त को, दो हजार सन आठ।
पूर्ण हुआ कर्तव्य यह, बढ़े धर्म का ठाठ ॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

शीतल जिनवर के गुण गाओ, होऽऽऽ
शीतल जिनवर के गुण गाओ, सादर करो प्रणाम हो।
झूम-झूम के करो आरती, तन-मन शीतलधाम हो॥

दसवें तीर्थंकर कहलाते, शीतल करते दशों दिशा[२]
दसों धर्म-ध्यानों के साधन, बदलो दशा-दिशा विदिशा[२]
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, होऽऽऽ
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, गम की निशा विराम हो।
झूम-झूम के..... ॥१॥

दीप-ज्योति ज्यों हरे अँधेरा, राह उजाला भी देती[२]
वैसे नाथ! आरती तुमरी, पाप-अंध गम हर लेती[२]
जलें दीप से दीप हृदय के, होऽऽऽ
जलें दीप से दीप हृदय के, नहीं वैर का नाम हो।
झूम-झूम के..... ॥२॥

पूजक पर तुम खुश ना होते, ना निन्दक पर रोष करो[२]
फिर भी सुन लो अरज हमारी 'सुव्रत' के सब दोष हरो[२]
हमें भक्ति फल बस यह दे दो, होऽऽऽ
हमें भक्ति फल बस ये दे दो, होठों पर प्रभु नाम हो।
झूम-झूम के..... ॥३॥

❑ ❑ ❑

श्री श्रेयांसनाथ विधान

जय बोलिए

हित के उपदेष्टा, परमात्मा के सृष्टा, आत्मसुख के अभिलाषी, परमात्म गुण के विकासी, वैराग्यमयी संन्यासी, जिनसम्पत्ति के वासी, श्रेयस-निःश्रेयस भगवान्, परमपूज्य

श्री श्रेयांसनाथ भगवान् की जय॥

स्थापना (दोहा)

ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोऽस्तु हो धर ध्यान॥

(मात्रिक सवैया)

प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।
जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करें विराम॥
वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥

(दोहा)

निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(लय : पाँचों मेरु असी...)

श्रद्धा-जल की देकर धार, मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शान्ति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिन सम निज का हो आहार, क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥

प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार ॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आए प्रभु श्रेयांस जी, माँ नन्दा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुर-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिनके आश्रय से हुए, भक्तों के कल्याण।
ऐसे प्रभु श्रेयांस का, नमन सहित गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छाएँ।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पाएँ॥१॥
ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥
परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥२॥
एक नलिनप्रभ राजा था जो, ऋद्धि-सिद्धि मय धर्मात्मा।
जिनवर का सान्निध्य प्राप्तकर, बना संत उसका आत्मा॥
फिर तीर्थंकरप्रकृति बाँधकर, मृत्यु महोत्सव किया अहा।
सोलहवें सुर के पुष्पोत्तर, विमान में जा इन्द्र हुआ॥३॥
भोग-भोगकर नगर सिंहपुर, विष्णु-नन्दा पुत्र हुए।
तीन ज्ञान के धारी प्रभु के, जन्म समय आश्चर्य हुए॥
रोग-शोक-भय कष्ट मिटे सब, पापी जीव बने धर्मी।
पुष्पवृष्टि हो देव नृत्य हों, संतोषी हों षट्-कर्मी॥४॥
देवों ने जन्मोत्सव करके, पूज्य नाम श्रेयांस रखा।
तन के अवयव ऐसे बढ़ते, ज्यों चंदा हो बाल सखा॥
राज भोगकर इक दिन देखा, बसंत ऋतु का परिवर्तन।
भव भोगों से विरक्त होकर, श्रेयस्कर को सौंपा धन॥५॥
चले मनोहर वन तो शिविका, विमलप्रभा पर हुए सवार।
इक हजार राजाओं के सह, तप धारा हुई जय-जयकार॥

ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, दिए नन्द राजा आहार।
पंच-पंच आश्चर्य हुए तो, प्रथमदान मंगल उपहार ॥६॥

दो वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर दीक्षा वन को पहुँचे।
बेला करके बने केवली, देव पर्व को आ पहुँचे॥
समवसरण फिर लगा जहाँ थे, सतहत्तर गणधर धारी।
कुल चौरासी हजार मुनि थे, बीस लाख आर्या न्यारी॥७॥

सुर-नर से उस भरी सभा को, ज्ञान दिया फिर वह छोड़े।
फिर सम्मेदशिखर पर मासिक, ध्यान किया बन्धन तोड़े॥
संकुलकूट हुआ पावन तब, प्रभु श्रेयांस मोक्ष पाए।
उसी तीर्थ में त्रिपृष्ठ नामक पहले नारायण आए॥८॥

अश्वग्रीव प्रतिनारायण भी, हुए विजय बलभद्र तभी।
इस प्रकार श्रेयांसनाथ को, भूल सके ना जगत् कभी॥
जिनके ज्ञान ध्यान यश वैभव, सब सीमाएँ लाँघ रहे।
फिर भी भगत उन्हें गुरु ग्रह के, परिहारों से बाँध रहे ॥९॥

जिनके जन्म समय से अब तक, धर्म ध्वजा की हुई विजय।
"श्रेयांसि बहु विघ्नानि" भी, सुन श्रेयांस नाम से क्षय॥
देख चराचर जग को भी जो, निज स्वरूप का स्वाद चखे।
जिनकी चरण धूल सिर धरकर, झट कर ले कल्याण सखे॥१०॥

हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥
यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥११॥

द्रव्य-भाव-नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥१२॥

(सोरठा)

गेंड़ा जिनका चिह्न, श्रेयांसनाथ प्रभु नाम है।
हम पर रहो प्रसन्न, प्रभु को सदा प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(पुरुषार्थ वर्णन)

(चौपाई)

प्रथम धर्मपुरुषार्थ कहा है, सब का जो आधार रहा है।
सब कुछ कर लो धर्म न भूलो, तो झट अपनी मंजिल छू लो॥

(दोहा)

चलो भाग्य पुरुषार्थ से, धर्म चक्र के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं धर्मपुरुषार्थ-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

सब पूछेंगे आप हो कैसे, जब तक आपके जेब में पैसे।
धार्मिक अर्थ न व्यर्थ गंवाओ, सात क्षेत्र में दान लगाओ॥
चलो भाग्य पुरुषार्थ से, चक्र रत्न के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्थपुरुषार्थ-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

आगम विधि से व्याह रचाना, सीमित काम विषय कर पाना।
दो उत्तम संतान धर्म को, शेष रही वह निजी कर्म को॥
भाग्य और पुरुषार्थ से, पुत्र रत्न के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कामपुरुषार्थ-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

श्रेष्ठ मोक्षपुरुषार्थ विश्व में, जल्दी हो वह हमें भविष्य में।
भाग्य भरोसे मोक्ष न पाओ, सुख से रहो न लौट के आओ॥
चलो भाग्य पुरुषार्थ से, मोक्ष महल के धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थ-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

(दस प्राण वर्णन)

प्रथम इन्द्रिय स्पर्शन द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
आठ तरह का अनुभव करना, वह स्पर्शन दुख का झरना॥
स्पर्शन के प्राण मिटें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनइन्द्रियसम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

दूजी इन्द्रिय रसना द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
षट्रस छन्दों के रस ले के, रसना प्राण बड़े दुख देते॥
नाशें रसना प्राण को, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं रसनाइन्द्रियसम्बन्धि-विकारविनाशन समर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

घ्राण तीसरी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
जो दुर्गन्ध सुगंध स्वरूपी, घ्राण प्राण, है भव दुखकूपी॥
घ्राण प्राण का दुख हरें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं घ्राणइन्द्रियसम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

चक्षु चौथी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
पाँच वर्ण जो दुख के दाता, चक्षु प्राण भव रोग बढ़ाता॥
चक्षु प्राण का त्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रियसम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

कर्ण पाँचवी इन्द्रिय द्वारा, जीना मरना हुआ गुजारा।
सात स्वरों से हुए कष्ट जो, हमें करें नित धर्म भ्रष्ट वो॥

कर्ण प्राण काँटे हरें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कर्णइन्द्रियसम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

पुण्य योग से जो मन पाया, स्वर्ग नर्क की दे वह माया।
यदि उससे सद् ध्यान लगाया, कर्म हरे, दे मुक्ति छाया॥
वीर्यरूप मन प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मनोबल-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

वीर्य तथा स्वर नाम कर्म से, शक्ति वचन बल मिले धर्म से।
उससे कलह विरह भी होती, या कर लो रोशन निज ज्योति॥
वीर्यरूप वच प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वचनबल-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

वीर्य तथा तन कर्मोदय से, शक्ति विशेष मिले प्रभु जय से।
तहस-नहस त्रय जग भी उससे, त्याग तपस्या भी हो जिससे॥
कायरूप बल प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कायबल-विभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

श्वास वायु लेना या तजना, यह है हर प्राणी का गहना।
इस बिन कैसे जीवन चलता, अगर सधे तो मिले सफलता॥
श्वासोच्छ्वासी प्राण हर, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वाससम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

आयु कर्म से नर नारकादि, पर्यायों की मिले उपाधि।
इस बिन ना संसार चलेगा, पूर्ण नष्ट कर मोक्ष मिलेगा॥
आयु प्राण कब हर सकें, छू लें आतम प्राण।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आयुसम्बन्धि-विकारविनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

(दसधर्म वर्णन)

क्रोध जलाए चेतन कलियाँ, नहीं मोक्ष की मिलती गलियाँ।
क्रोध महाभारत की भाषा, समता रामायण की आशा॥
क्रोध तजें धारें क्षमा, मुक्ति सखी का धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं क्रोधकषाय-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

मान महा विष जैसे होते, इससे प्राणी भव-भव रोते।
विनय समर्पण सुख के सेतु, बनो सुकोमल निज-रस हेतु॥
मान तजे धारें विनय, पंचम गति का धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मानकषाय-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

मायाचारी है दुखकारी, दुनियाँ दुश्मन बने कटारी।
बिना सरलता कुछ ना मिलता, सरल पंथ है मोक्षमहल का॥
कपट तजें होवें सरल, यात्रा करें विराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मायाकषाय-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

लोभ पाप का बाप कहाता, जो संतोष धर्म को खाता।
तृष्णा इसकी सखी सहेली, आतम को जो करती मैली॥
लोभ तजें शुचिता धरें, शुद्धातम का ध्यान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं लोभकषाय-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

जूठ-झूठ द्वय राह पतन की, ये दुर्गति करते चेतन की।
अतः झूठ पर पर्दे पड़ते, सत्य दिगम्बर जैसे रहते॥
झूठ तजें फिर सत्य धर, पाएँ शाश्वत धाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं असत्यविकार-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

जल जैसा मन नीचे जाता, संयम से ऊपर को आता।
षट् कायों की रक्षा करना, संयम नैया से भव तरना॥

पाप तजें संयम धरें, मिले शान्ति आराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं असंयमविकार-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

तृष्णा आशा के दल-दल से, जीवन वंचित हो मंगल से।
तप बिन कहीं न मंगल होता, तप ही कर्म कालिमा धोता॥
भोग तजें तप से सजें, वीतराग विज्ञान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं भोगोपभोगविकार-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

आतम को क्या लेना देना, किन्तु त्याग बिन काम बने ना।
त्याग दान आगम विधि करना, झरे चेतना का फिर झरना॥
परभावों का त्याग कर, निज रस मिले महान।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कृपणताभाव-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

आतम बिन कुछ नहीं हमारा, आतम छोड़ झूठ व्यवहारा।
अतः परिग्रह पूरा छोड़ो, चिदानन्द से नाता जोड़ो॥
संग त्याग निस्संग बन, पाएँ आतमराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कुमंत्रमूर्च्छाविकार-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

सभी योनियों सब गतियों में, दर-दर भटके दुर्गतियों में।
किन्तु ब्रह्म में रम ना पाए, ब्रह्मचर्य व्रत धर ना पाए॥
भ्रमण तजें निज में रमें, पाएँ शील मुकाम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अब्रह्मविकार-विनाशनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

नाथ! आपका और हमारा, पता नहीं कैसा नाता।
जब तक तुम्हें न देखें पूजें, तब तक चैन नहीं आता॥
भक्त और भगवन् की दूरी, कैसे हम सह पाएँगे।
सचमुच आप बिना हम स्वामी, रो-रोकर मर जाएँगे॥

या तो दूरी पूर्ण मिटा दो, या फिर दूर चले जाओ।
या फिर हमको दूर भगा दो, किन्तु हमें ना तड़फाओ॥
आप दूर तो जा नहिं सकते, ना ही हमें भगा सकते।
अतः दूरियाँ कम करने को, 'सुव्रत' अर्घ्य चढ़ा हँसते॥
'जिन' से 'निज' की दूरियाँ, पाए पूर्ण विराम।
अतः प्रभु श्रेयांस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अन्तरङ्गबहिरङ्ग-एकतास्थापनसमर्थ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

टूटे फूटे भाग्य को, प्रभु देते हैं जोड़।
प्रभु भी उसका क्या करें, जो लेते मुख मोड़॥
मोड़ सकें हम मुख नहीं, कर पाएँ गठ जोड़।
अतः कहें जयमालिका, शीश मोड़ कर जोड़॥

(विद्योदय)

भाग्य भरोसे बैठे हो तो, फल क्या होगा?
सम्यक् ना पुरुषार्थ किया तो, कल क्या होगा?
प्यास लगी पर कुआँ नहीं तो, जल क्या होगा?
मिले न जल तो अपना अगला, पल क्या होगा?॥१॥

इन्हीं बिन्दुओं को अब तक तो, सुना नहीं क्यों?
सुनकर प्यारे-चेतन अब तक, गुना नहीं क्यों?
गुनकर सम्यक् ताना-बाना, बुना नहीं क्यों?
ताना-बाना बुनकर शिवपथ, चुना नहीं क्यों?॥२॥

इसीलिए तो दस प्राणों की, पीड़ा पाई।
तभी आयु बल पंचेन्द्री में, नींद न आई॥
व्यवहारी प्राणों के कारण, प्राण गँवाते।
निश्चय चेतन प्राण कभी हम, पा नहिं पाते॥३॥

"चारित्तं खलु धम्मो" जो "दस, लक्खण धम्मो"।
"वत्थु सहावो धम्मो", "धम्मो दया विसुद्धो"॥
ऐसा प्यारा धर्म कभी हम, पाल न पाए।
मात्र क्रोध में जले क्षमा को, धार न पाए॥४॥

मान किया, ना किया समर्पण, तभी दुखी हैं।
मायाचारी करने वाले, कहाँ सुखी हैं॥
अतः सरल बन शुचिता धारें, तजें लोभ को।
छोड़े झूठ, सत्य बोलें तो, कहाँ क्षोभ हो॥५॥

तजें असंयम पालें संयम, जगकल्याणी।
तप से आतम निर्मल होती, ये जिनवाणी॥
पर में तत्पर कभी न होकर, निज-रस पीवें।
ब्रह्मचर्य में रमण करें तो, सुख से जीवें॥६॥

ऐसा है उद्देश्य हमारा, मंगल-पावन।
जिसको पूरा करें आपके, करके दर्शन॥
दर्शन करके करें अर्चना, फिर जयमाला।
दो ऐसा आशीष खुले अब, मोक्ष का ताला॥७॥

'सुव्रत' कर पुरुषार्थ, मिटे प्राणों की पीड़ा।
निज स्वरूप में लीन रहें, पाएँ भव तीरा॥
अतः आपकी शरण ग्रहण कर, चरण पड़ें हम।
महामहोत्सव पण्डित-पण्डित, मरण करें हम॥८॥

(सोरठा)

अज्ञानी संसार, दुखिया सदा अनाथ हैं।
अतः किया सत्कार, चरणों में नत माथ हैं॥
चरणों की जयमाल, पढ़ें सुनें गाएँ लिखें।
होवे मालामाल, मोक्ष मार्ग में झट दिखें॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री श्रेयांसनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, श्रेयांसनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्, मंगल त्रय तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

(इति शुभम् भूयात्)

आरती

(सखी)

अब दीप थाल भर लाए, सिर झुका करें प्रणमामि।
हम करें आरती तेरी, ओ! श्रेयांसनाथ जी स्वामी॥
हम करें आरती .... ॥

तुम विष्णु नन्दा के नन्दा, हम भक्तों के आनन्दा।
काटो भव दुख द्वंदा फंदा, प्रभु श्रेयांसनाथ जिनन्दा॥
झट थामो अंगुली हमारी, हे! जिनवर अन्तर्यामी-
हम करें आरती .... ॥१॥

हम द्वार आपके आके, अब करें आपकी पूजा।
जब तुमको अपना माना, तो रुचे न कोई दूजा॥
यों अपनाओ हमको ज्यों, अपनाई मुक्ति रानी-
हम करें आरती .... ॥२॥

बाहर में ज्ञान की ज्योति, अंतर में ध्यान के मोती।
जिन-धन वह पाता जिस पर, सद्-कृपा आपकी होती॥
अब कृपा करो हम पर भी, हम बनें भेद विज्ञानी-
हम करें आरती .... ॥३॥

ज्यों सूर्य कमल का रिश्ता, ज्यों माता शिशु की लोरी।
ज्यों सिंधु नदी की धारा, ज्यों बाल पतंग की डोरी॥
ज्यों दीप ज्योति की बाती, त्यों 'सुव्रत' के तुम स्वामी-
हम करें आरती .... ॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री वासुपूज्य विधान

जय बोलिए

देवों के देव, नाथों के नाथ, पूज्यों के पूज्य, महापूज्य, सर्वपूज्य, विश्वपूज्य, जगत्-पूज्य, त्रिलोक पूज्य, आत्म पूज्य, परमपूज्य श्री वासुपूज्य भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥

अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥

क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
"पुण्य फला अरिहन्ता" से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म-द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥

तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव[२], कि स्वर्गों से देव आए[२],वासुपूज्यजी।
माँ ने सोलह सपने देखे[२], कि त्रिलोकीनाथ आए[२], वासु....
माँ जयावती हर्षायी[२], कि गर्भ में पूज्य आए[२], वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई[२], कि सुर नर गीत गाए[२] वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बाजे चम्पापुर में बधाई[२], कि नगरी में पूज्य जन्मे[२], वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई[२], कि त्रिलोक में आनन्द छाए[२], वासु....
अभिषेक हुआ मेरु पर[२], कि देव क्षीर जल लाए[२], वासु....
फागुन वदि चौदस आई[२], कि शचि सुर नर झूमें[२], वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदि चौदस आई[२], कि प्रभु हुए वैरागी[२], वासु....
लौकान्तिक देव पधारे[२], कि बने तप सहभागी[२], वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से[२], कि वन मनोहर पहुँचे[२], वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर[२], कि केशलौंच किए त्यागी[२], वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब दूज माघ सुदि आई[२], कि घातिकर्म सब नाशे[२], वासु....
तब बने केवली स्वामी[२], कि लगा समवसरण प्यारा[२], वासु....

फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल[२],कि गूँजे जय-जयकारे[२], वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा[२], कि धर्म ध्वजा फहराई[२], वासु....
दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों सुदि चौदस आई[२], कि कर्म सारे हर डाले[२], वासु....
हुई मुक्ति वधू नत नयना[२], कि वरमाला तुम्हें डाली[२], वासु....
हुई चम्पापुर से मुक्ति[२], कि पाँचों कल्याण हुए[२], वासु....
बाजे चम्पापुर शहनाई[२], कि प्रभु को मोक्ष हुआ[२], वासु....
भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनाएँ भा करके, बारह विधि के बजा दिए।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिए॥१॥

जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हर ले, संकट महाभयंकर जो॥२॥

एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।
राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥३॥

तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।
भोग स्वर्गसुख सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥४॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥५॥
एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥६॥
आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।
एक हजार वर्ष तक रहकर, चम्पापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बन्धन हर वंदित होकर ॥७॥
ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चम्पापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥८॥
जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥
ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥९॥
अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
राग-द्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥१०॥

मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी-व्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी-कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥११॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाएं मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(बारह भावना)

(विद्योदय)

जग तृष्णा पर्याएँ सपने, सभी सत्य हैं।
हैं ये क्षणिक, नहीं हैं अपने, अतः अनित्य हैं॥
हम भी त्यागें इन्हें आपने, त्यागा जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं नित्यसम्पत्तिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

कुछ भी करो मरण निश्चित है, कहाँ सुरक्षा?
अतः शरण के योग्य चरण में, धारो दीक्षा॥
निज को पाएँ, निज को तुमने, पाया जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं आश्रयदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

सुख चाहें, दुख जहाँ मिले, संसार वही है।
क्यों फँसते हे! प्राणी जिसमें, सार नहीं है॥
भव को छोड़ें हम भी तुमने, छोड़ा जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं दुःखविनाशकसुखदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

चलो! अकेले, चलो! अकेले, कोई न साथी।
अतः प्रभु ने घर न वसाया, की नहिं शादी॥
एक बने हम अंदर बाहर, तुम हो जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं एकत्वविरहवेदनानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

हम वो हैं जो दृश्य जगत् से, भिन्न अन्य हैं।
ये न हमारे हम नहिं इनके, सो प्रसन्न हैं॥
इनसे हों हम मुक्त हुए हो, तुम भी जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं परवस्तु-आसक्तिनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

अशुचि देह से शुद्ध विदेही, क्या मिल पाते।
फिर भी तन-शृंगारों से हम, कष्ट बढ़ाते॥
करें भेदविज्ञान ध्यान भी, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं देह-अशुद्धि-भावनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

अच्छे बुरे विचार हमारे, भाग्य-विधाता।
तभी मोह से निज में निज का, चित्र न आता॥
तजें अशुभ सब भाव आपने, त्यागे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं वैमनस्यभावनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

रोको, रोको उनको जो नित, हमें सुलाते।
जागो चेतन संयम धारो, संत बताते॥

आस्रव रोकें संवर धारें, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सदाचारदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

ज्यों-ज्यों भार हुआ कम त्यों-त्यों, पहुँचो ऊपर।
सम्यक् जप-तप झट पहुँचाये, अष्टम भूपर॥
करें निर्जरा का प्रयत्न हम, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं पुरुषार्थहीनतानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

हमें लोक में परवश निजवश, फिरना होगा।
पर निज लोक वसे तो फिरना, फिर ना होगा॥
लोकशिखर को हम पाएँ तुम, पाए जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं व्यर्थभ्रमणनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

निःसंतान सुलभ आत्मा कब, माँ बन जाए।
रत्नत्रय संतान कठिन की, झट मिल जाए॥
हम अर्हंत सिद्ध बन जाएँ, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं दुर्लभवस्तुदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

धर्म "अहिंसा परमो धर्मः", निज का दाता।
मालामाल करे ना तो फिर, कैसा नाता?
निज स्वभाव में लीन रहें हम, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं अविनश्वरसाथीदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

(बारह तप वर्णन)

खान-पान से खान-दान भी, बिगड़े सुधरे।
अतः करो उपवास जभी प्रभु, मूरत उभरे॥
अनशन करें रमें निज में हम, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं निज-निवासदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

इच्छा से कम खाना-पीना, ऊनोदर है।
हम अपने में स्वयं पूर्ण यह, ध्यान किधर है॥
ऊनोदर से इच्छा त्यागें, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं निज-इच्छापूरक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

तरह-तरह के कठिन नियम ले, चर्या करना।
पुण्य परीक्षा हरे समस्या, दे निज-झरना॥
वृत्तिपरिसंख्यान करें हम, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं भिक्षावृत्तिदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

षट्रस तजकर नीरस लेकर, पेट भरो तो।
निज से निज का निज रस लेकर, श्रेष्ठ बनो तो॥
रस परित्याग करें हम स्वामी, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं रसविकारनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

एकान्त वासा झगड़ा न झाँसा, हरे समस्या।
अतः गुफा एकान्त वास में, करो तपस्या॥
विविक्त शैय्यासन अब करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं निद्रा-आसनविकारनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

तरह-तरह के तप कर अपनी, देह सुखाना।
काय क्लेश से जैन भेष से, निज सुख पाना॥
धरें सदा हम कायक्लेश तप, तुमरे जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं कायवेदनानाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

प्रमाद या अज्ञान दशा से, दोष लगें जो।
तप आदिक से शुद्ध बनाकर, पूर्ण भगें वो॥

प्रायश्चित्त हमें भी करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं दोषशुद्धिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

पूज्य जनों का आदर करना, विनय कहाता।
विनय मोक्ष का महाद्वार हर, कार्य बनाता॥
विनयशील हमको भी बनना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं मानसम्मानवर्धक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

तन-मन-धन से संत जनों की, सेवा करना।
सेवा से ही आत्म गुणों का, झरता झरना॥
वैयावृत्य हमें भी करना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं परस्परसेवाभावदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

आलस तज कर ज्ञान भावना, में रत रहना।
ज्ञान भावना करने आलस, कभी न करना॥
ऐसा हो स्वाध्याय हमें भी, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं आलस्य-अज्ञाननाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

अहंकार ममकार त्याग कर, परिग्रह तजना।
बाहर अंदर तन-मूर्च्छा तज, ज्ञानी बनना॥
हमें यही व्युत्सर्ग प्राप्त हो, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं परिग्रहदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

मन की चंचलता को तज कर, ध्यान लगाना।
चिंतन मंथन से आगम का, मक्खन खाना॥
ज्ञानी ध्यानी हमको बनना, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं ध्यानदोषनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

(रोहणी अर्घ्य)

दुर्गन्धा जब बनी रोहणी, किया रोहणी।
वणिक बना अशोक राजा जब, किया रोहणी॥
वह राजा प्रभु वासुपूज्य के, समवसरण में।
संन्यासी बन जा पहुँचा वह, मोक्षशरण में॥
बनी रोहणी रानी आर्या, स्वर्ग सिधारी।
स्वर्ग त्याग जल्दी पाएगी, मोक्ष सवारी॥
सम्यग्दर्शन सहित रोहणी, हो प्रभु जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं देहदुर्गन्धिनाशक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

(मुक्तावली अर्घ्य)

मुक्तावलि व्रतकर दुर्गंधा, स्वर्ग भोगकर।
तथा पद्मरथ पुत्र बनी फिर, प्रभु का गणधर॥
गणधर जैसे हमें मोक्ष हो, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं आत्मसुगन्धिदायक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

पूर्णार्घ्य

कभी द्रव्य से कभी भाव से, कभी न दोनों।
कभी बाह्य से कभी आंतरिक, कभी न दोनों॥
ऐसे कितनी बार अर्घ्य हम, चढ़ा चुके हैं।
किन्तु लक्ष्य तो हुआ न हासिल, अतः थके हैं॥
भव-भव की ये थकान स्वामी, कब मिट जाएँ।
अतः द्रव्य ले भाव बना कर, अर्घ्य चढ़ाएँ॥
ज्ञाता दृष्टा रह जाएँ बस, प्रभु के जैसे।
वासुपूज्य प्रभु हमें बना लो, अपने जैसे॥

(सोरठा)

विनय भक्ति से आज, वासुपूज्य प्रभु को नमन।
पाएँ निज साम्राज्य, मोक्ष महल में हो भ्रमण॥

ॐ ह्रीं वैराग्यतपवर्धक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

भाव सहित गुणगान को, मन-भौंरा बेचैन।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, वन्दन दे सुख चैन॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! वासुपूज्य जी, जय हो! पहले बालयति।
श्रद्धा-सुमन चढ़ाएँ हम सब, आप पूज्य हो जगत्पति॥
नाथ! आपके गुण गाने को, आज भक्त हम उद्यत हैं।
देख विशाल महायश वैभव, हाथ जोड़ हम तो नत हैं॥१॥
गुण-गण तो क्या? हम कह सकते, अतः शरण की आशा है।
भक्त और भगवन् की जोड़ी, अजब-गजब परिभाषा है॥
तुम ज्ञानी हो हम अज्ञानी, आप मृदुल हम मानी हैं।
आप रहे हो ठोस ज्ञानघन, हम तो बहते पानी हैं॥२॥
तुम पालक हो हम बालक हैं, तुम योगी हो हम भोगी।
तुम दाता हम रहे भिखारी, आप स्वस्थ हम हैं रोगी॥
तुम शंकर हो हम कंकर हैं, तुम धर्मी हो हम पापी।
आप पूज्य हो पतित रहे हम, तुम दयालु हम अभिशापी॥३॥
हम तो अणु तुम विराट हो प्रभु, तुम सिंधु हम हैं बिंदु।
तुम सूरज हो, हम तो रज हैं, हम जुगनू तुम हो इंदु॥
तुम अनन्त हम शून्य रहे हैं, आप शिखर हम तो धूलि।
महा-महा तुम और कहाँ हम, तुम सक्षम हम मामूली॥४॥
तुम सुखिया हो, हम दुखिया हैं, आप निराकुल हम आकुल।
क्षमाशील तुम हम क्रोधी हैं, आप तृप्त हैं हम व्याकुल॥
ज्ञान ज्योति तुम हम अँधयारे, हम कुरूप तुम सुन्दर हो।
हम हैं रागी तुम वैरागी, पूर्ण दिगम्बर मंदिर हो॥५॥
फिर कैसे हो मिलन हमारा, सत्पथ कब दिखलाओगे।
आप फूल हो हम शूलों को, कैसे गले लगाओगे॥

कुछ - कुछ हमको करना होगा, कुछ - कुछ आप करो स्वामी।
पूज्य बनें हम सुखी रहें हम, सिद्ध बनें हम आगामी॥६॥
लेकिन हमको पिछली यादें, तजनी होगीं सब बातें।
वर्तमान यदि सुधर गया तो, सुप्रभातमय हों रातें॥
तभी मोह मद राग द्वेष को, मंद - मंदतम करना है।
भावनाएँ बारह भाकर के, बारह तप उर धरना है॥७॥
हर प्रयास हो सफल हमारा, कृपा आप की पाकर के।
कथा रोहणी मुक्तावली सम, सिद्ध करें गुण गाकर के॥
ब्रह्मानन्द स्वरूपी हम हों, वासुपूज्य की कर पूजा।
अद्वितीय बनने को 'सुव्रत', पूज्य शरण में झट तू जा॥८॥

(सोरठा)

वासुपूज्य जिनदेव, तुम्हें सदा जो पूजते।
मुक्त हुए स्वयमेव, मोक्ष महल में पहुँचते॥
अतः बनाकर भाव, की पूजा नत शीश हो।
पाएँ ब्रह्मस्वभाव, बस ऐसा आशीष हो॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री वासुपूज्यविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, वासुपूज्य विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर बुध दो कम बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : रंगमा-रंगमा....)

आरती - आरती - आरती रे।[२] प्रभु तेरी उतारें हम आरती रे ॥[२]
वासुपूज्य प्रभु हैं अंतर्यामी।[२] जिनको करें हम सदा ही नमामि ॥[२]
जिनकी कृपा हमको तारती रे।[२] प्रभु.....

वसुपूज्य राजा के राज दुलारे।[२] जयावती माता के नयन सितारे ॥[२]
हम भक्तों के शिव सारथी रे।[२] प्रभु.....

न की सगाई न शादी रचाई।[२] मुक्तिवधू संग प्रीति बढ़ाई ॥[२]
हुए पहले बालयति महारथी रे।[२] प्रभु.....

पाँचों कल्याणक चम्पापुरी में।[२] कर डाले तुमने (प्रभु) आतम धुरी में[२]
भक्तातम तुम को निहारती रे।[२] प्रभु.....

ज्योति जलाके, हमने पुकारा।[२] नैया सँभालो (प्रभु) दे दो सहारा ॥[२]
'सुव्रत' की भक्ति पुकारती रे।[२] प्रभु.....

❑ ❑ ❑

श्री विमलनाथ विधान

जय बोलिए

त्रिलोक चूड़ामणि, अध्यात्म शिरोमणि, सदा स्मरणीय, जगज्ज्येष्ठ, सर्वश्रेष्ठ, परमेष्ठी, विद्वान्, वक्ता विशेष्ट, विश्वव्यापी, विश्वलोचन, विश्वज्योति, आत्ममोती, अत्यन्त निर्मल, अक्षय विमल, परमपूज्य

श्री विमलनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

विमलनाथ प्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(शंभु)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।
कर्मों के बन्धन टूट पड़े, जिन-रस की धार बहे झर-झर॥
हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर, हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पाई है।
इसलिए आज हे विमलराज!, यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिये कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(लय : नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भवसागर क्षार अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर-ज्योति आप्त, भागे मोह-खली॥

जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, शीश झुका के गुण गाएँ॥
अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज शृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अर्हंत को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विगत दोष गुण कोष हैं, विमलनाथ जिनदेव।
शिव नेता को भक्त के, शीश झुके स्वयमेव॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल-पल के॥
ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥१॥
विमलप्रभु जैसे बनने को, विनय सुनो हे! विमलेश्वर!
नाथ! आपके पद पर चलने, कहें कहानी चित देकर॥
पद्मसेन इक धर्मी राजा, एक छत्र जो राज्य करे।
कल्पवृक्ष सम प्रजा जनों के, न्याय नीति से काज करे॥२॥
तथा प्रजा भी राजाज्ञा को, पाल-पालकर पली-पुषी।
राजा को प्रभु मिले केवली, तब नमोऽस्तु की खुशी-खुशी॥
प्रभु से धर्म स्वरूप जानकर, अगली पर्याएँ जानी।

केवल दो भव जग में हैं सो, उसने तप की भी ठानी ॥३॥
ऐसा पर्व मनाया उसने, जैसे कि तीर्थंकर हो।
पद्मनाभ को राज्य सौंपकर, निकला स्वयं दिगम्बर हो॥
ग्यारह अंगों का अध्ययन कर, प्रभु ने की चाँदी-चाँदी।
नामकर्म के योग्य पुण्यकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी ॥४॥
चार-चार आराधन करके, अंत समय में मरण किए।
सहस्रार में सहस्रार की, इन्द्र विभूति वरण किए॥
जहाँ अठारह सागर उसकी, पूर्ण आयु थी भोगमयी।
चार हाथ ऊँचा तन उसका, जघन्य लेश्या शुक्लमयी ॥५॥
वह आहार मानसिक करता, अणिमा-महिमा गुणवाला।
भोग-भोग चिरकाल स्वर्ग को, भूपर था आने वाला॥
तो काम्पिल्य नगर के राजा, कृतवर्मा की पटरानी।
जयश्यामा ने सोलह सपने, देख उन्हीं का फल जानी ॥६॥
हुआ गर्भ कल्याणक तब ही, लहर खुशी की दौड़ी थी।
जयश्यामा ने पुत्र जन्म दे, अपनी राहें मोड़ीं थीं॥
देव जन्म-अभिषेक पूर्ण कर, नाम विमलवाहन रक्खे।
ताण्डव नृत्य इन्द्र ने करके, भक्ति रंग डाले पक्के ॥७॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु का, पर्व राज्य अभिषेक हुआ।
बर्फ-नगीना, देख विलीना, प्रभु को झट वैराग्य हुआ॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, प्रभु की हाँ में हाँ-हाँ की।
चले देवदत्ता शिविका से, बेलामय जिनदीक्षा ली ॥८॥
नन्दनपुर के कनक-प्रभु तब, राजा ने पड़गाहन कर।
दे आहार दान सुख पाया, पंचाश्चर्य पुण्य पाकर॥
तीन वर्ष छद्मस्थ बिताकर, दीक्षावन में ध्यानी हो।
पूर्ण घातिया कर्म नशाए, पुजते केवलज्ञानी हो ॥९॥
समवसरण में गंधकुटी में, सिंहासन कमलासन पर।
हुए विराजित जहाँ मेरु अरु, थे मंदर पचपन गणधर॥

विहार करके भव्य धान्य को, तुष्ट पुष्ट संतुष्ट किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, योग निरोध स्वरूप किया॥१०॥
आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥
फिर सौधर्म इन्द्र ने आकर, अंतिम शुभ संस्कार किया।
ऐसे विमलनाथ को हमने, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥११॥

बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥१२॥

(सोरठा)

सूकर जिनका चिह्न, विमलनाथ प्रभु नाम है।
सिद्ध बने हर काम, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(चौबीस ठाणा वर्णन) (मद अवलिप्त कपोल)

जब तक है संसार, चार गति नाम कर्म हैं।
देव नरक तिर्यंच, मनुज को सदा भर्म हैं॥
नशे चार गति चक्र, मिले गति पंचम न्यारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं गति-चक्रवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

पाँचों इन्द्री नाम, हमें दुख ही दुख देते।
निज सम्पत्ति सुगंध, चुरा वो हम से लेते॥
हो इन्द्री दुख दूर, बने सुखिया परिवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय-कष्टवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

षट् कायों में जीव, फँसे हैं कैदी जैसे।
भूले निज चिन्रूप, स्वयं वैदेही जैसे॥
देह जेल हो मुक्त, मुक्ति की मिले सवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं काय-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

मनो वचन तन योग, रोग पंद्रह आतम को।
कर्मों के संयोग, योग वियोग दें हमको॥
नाशें योग वियोग, बनें हम निज अधिकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं योग-वियोगवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

द्रव्य भाव दो भेद, नपुंसक नर-नारी को।
दिए वेदना वेद-खेद, हर संसारी को॥
वेद खेद हो नाश, बनें हम ब्रह्म-विहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं वेद-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

हमको कसे कषाय, सदा पच्चीस तरह की।
आतम को दे राह, विरह की तथा कलह की॥
होंये हम निष्कषाय, तजें हम बैर-विकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं कषाय-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

आतम का गुण ज्ञान, जानता स्वपर कथा को।
अगर बना अज्ञान, गर्व दे महा व्यथा को॥

पाएँ केवलज्ञान, बनें सर्वज्ञ, सुखारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं ज्ञानाज्ञान-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

हिंसादिक हर पाप, दया करुणा को छीने।
बिना अहिंसा आप, चले हो कैसे जीने॥
दो संयम चारित्र, बनें हम सत्-आचारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं असंयम-हिंसादिकवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

दर्शन चार प्रकार, दिखाए देखे निज-पर।
आतम का सुख-द्वार, दिलाए अपना निज-घर॥
युगपत्-दर्शन होये, सु-लोकालोक निहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं दर्शन-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

मिलकर योग कषाय, जीव षट्-रंगा कर दे।
सुख-दुख वाले रंग, लेप कर लेश्या भर दे॥
लेश्या हर चित् पाँय, आइने जैसी प्यारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं लेश्या-रंगवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

प्राणी भव्य अभव्य, बिना कर्मों के होते।
मोक्ष पाएँगे भव्य, अभव्य दुखी हो रोते॥
रत्नत्रय हो प्राप्त, बनें हम पर-उपकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं भव्याभव्य-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

जो श्रद्धा पर्याय, देव गुरु शास्त्र धरम दे।
तत्त्वों का दे ज्ञान, निजी चैतन्य रतन दे॥
पाएँ वह सम्यक्त्व, मुक्त हों हर संसारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

ज्ञान क्रिया उपदेश, समझने वाले संज्ञी।
बिन मन वाले जीव, सदा हैं दुखी असंज्ञी॥
समझें सार असार, तजें मन की बीमारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं संज्ञीअसंज्ञी-मनोवेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

आहारक भी जीव, अनाहारक भी बनते।
किन्तु कर्म के कार्य, स्वप्न में कभी न टलते॥
त्यागें दोनों भाव, बनें निज-गुण आहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं आहारक-अनाहारक-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

मिलें मोह अरु योग, वही गुणस्थान कहाते।
दिलवाते नहिं मोक्ष, हमारा सौख्य नशाते॥
गुणस्थान कर नाश, बनें अनन्त गुणधारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

चौदह जीव समास, नहीं शुद्धातम पाएँ।
इनमें फँस कर जीव, रोंये गाएँ चिल्लाएँ॥
हर कर जीव समास, शुद्ध हों अतिशयकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं जीवसमास-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

छहों-छहों पर्याप्ति, तथा अपर्याप्ति इतनी।
हरें हमारा चैन, वेदना कैसी कितनी॥
हरें सभी पर्याप्ति, मिटे आकुलता सारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति-अपर्याप्ति-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

व्यवहारी दस प्राण, जन्म देते अरु मारें।
जिनसे जीव सदैव, पाँय सुख-दुख की धारें॥
निश्चय दर्शन ज्ञान, पाँय, नाशें व्यवहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं प्राण-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

दारुण दुख दे दान, हमें संक्लेशित करते।
संज्ञा चारों भेद, सदा अपमानित करते॥
हो संज्ञा दुख नाश, बनें इच्छा हर्त्तारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं संज्ञा-इच्छावेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

आतम के परिणाम, रहे चैतन्य विधायी।
दो के बारह भेद, उन्हीं में दस दुखदायी॥
युगपत् हों उपयोग, कही जिनकी बलिहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं उपयोग-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

आर्त्त रौद्र फिर धर्म, शुक्ल जो ध्यान कहाते।
दो हेतु संसार, तथा दो मोक्ष दिलाते॥
मिले भेदविज्ञान, बनें शिशु सम अविकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं ध्यान-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

जिनसे आते कर्म, वही आस्रव कहलाते।
कुल सत्तावन भेद, असाता-साता लाते॥
बने निरास्रव संत, प्राणियों के उद्धारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं आस्रव-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

चौरासी लख जाति, हमें मिल जाती यों ही।
जहाँ न आत्म समाति, कहाँ रह पाओ क्यों जी?
हरें जाति बन सिद्ध, सभी दुख विघ्न निवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं जाति-योनि-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

जो पुद्गल परमाणु, बनाते अपनी काया।
जाति भेद कुल लाख-करोड़ों की सब माया॥
शाश्वत बनें कुलीन, विश्व को मंगलकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं कुल-लिङ्ग-वेदनाहर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

नहिं भय खाएँ, नहिं घबराएँ, हम तीरों या तलवारों से।
मुडें न पीछे, चलें न पीछे, इन दर्द भरी सरकारों से॥
हम तो अपनी, धुन के पक्के, जो ठान लिया कर छोड़ेंगे।
नाच बजा के, अर्घ्य चढ़ाके, श्री विमलप्रभु को पूजेंगे॥
दक्ष नहीं पर, लक्ष्य यही कर, हम भजन गीत गुण गाएँगे।
आज नहीं कल, पा के संबल, सब दर्द कष्ट सह जाएँगे॥
चरण प्राप्तकर, मरण साधकर, निज शुद्ध-आत्म प्रकटाएँगे।
लोक शिखर पर, प्रभु से सटकर, निजधर्म ध्वजा फहराएँगे॥

(सोरठा)

अर्घ नहीं बस अर्घ्य, विमलप्रभु को खोजकर।
देता पदक अनर्घ, पद-पंकज को पूजकर॥

ॐ ह्रीं संसारस्थान वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

विमलनाथ निर्मल करें, भक्तों का चैतन्य।
इसीलिए गुण गान कर, तन मन जीवन धन्य॥

(लक्ष्मीधरा)

पूज्य अरिहन्त जो सिद्ध हैं बुद्ध हैं।
पूर्ण संसार में अक्षयी शुद्ध हैं॥
अर्चना है उन्हीं विम्मलेश की सदा।
जो हरें शीघ्र भक्तावली की व्यथा॥१॥
नाथ का भक्त पै क्यों नहीं ध्यान है।
भक्त को क्यों नहीं प्राप्त निर्वाण है॥
साथ में शोक बाधा बड़े कष्ट हैं।
स्थान ना मोक्ष में क्यों यहाँ त्रस्त हैं॥२॥

दुर्गति चार में आतमा घूमती।
इन्द्रियों की महा दासता झेलती॥
आय में, हाय में खाय में जाय में।
चेतना है दुखी पुद्‌गली काय में॥३॥
रोग में भोग में योग में है फँसी।
वेद की वेदना से हुई है हँसी॥
ज्यों कषाएँ चिदानन्द को बाँधती।
तो घटा ज्ञान के सूर्य को ढाँकतीं॥४॥
कौन चारित्र धारे महा संयमी।
दर्शनों की कथा जानता उद्यमी॥
द्रव्य से भाव से मैल लेश्या भरे।
कोई भव्यत्व की याद भी क्यों करे?॥५॥
रत्न सम्यक्त्व का खो चुका है कहीं।
फर्क सैनी-असैनी दिखे है नहीं॥
रोज आहारकों की कमी है नहीं।
है गुणस्थान की तत्त्व चर्चा नहीं॥६॥
जीव-सम्मास, है किन्तु ना मेल है।
व्यर्थ पर्याप्तियों की भरी जेल है॥
प्राण की त्राण दे प्राणियों को सजा।
कौन संज्ञा भरी धार में ना बहा॥७॥
उप्पयोगों भरी सम्पदा लापता।
ध्यान वाली अवस्था बनी आपदा॥
आस्रवों के हुए कार्य कैसे यहाँ।
जाति या संकुलों से बँधे हैं यहाँ॥८॥
रोज चौबीस ठाणा हमें आपकी।
याद दे रोक ले वेदना पाप की॥
है यही प्रार्थना आपसे भक्त की।
मात्र स्वीकार हो भावना व्यक्त की॥९॥

हो हमारा नहीं जन्म चौ-बीच में।
हो हमारा कभी जन्म चौबीस में॥
कार्य आसान हो नाथ! आशीष से।
वन्दना है तुम्हें टेक के शीश से॥१०॥
भक्त का माँगना एक दस्तूर है।
प्राप्त जो भी हमें सर्व मंजूर है॥
कष्ट ना कर्म-संसार दे पाओगे।
'सुव्रती' भक्त चौबीस सा-बनाओगे॥११॥

(सोरठा)

किसे हुआ क्या प्राप्त, अपनी-अपनी बात है।
विमलप्रभु को नत माथ, मिलती हर सौगात है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री विमलनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

नगर 'तालबेहट' जहाँ, मूल पार्श्वभगवान्।
पूर्ण हुआ जिनचरण में, विमलनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर, सोम दिवस तेबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : तीर्थ विहारी गुरुराज....)

श्री विमलनाथ! जिनराज, आज तेरी आरती उतारें।[२]
आरती उतारें... तेरी मूरत निहारें...[२]
भक्ति का पाने साम्राज्य, आज तेरी....॥
कब से हैं अखियाँ दर्शन को चाहें।
वीतरागी मुद्रा भक्तों को भाएँ॥
बस जाओ हृदय में जिनराज, आज तेरी...॥
माता जयश्यामा के प्यारे से नन्दा।
राजा कृतवर्मा के न्यारे आनन्दा॥
भक्तों की भक्ति के ताज, आज तेरी...॥
जिसने भी तुमको मन से पुकारा।
संसार-सिन्धु का पाए किनारा॥
तारण तरण हो जहाज, आज तेरी...॥
कर्मों से मैले 'सुव्रत' अकेले।
हमको बना लो अलबेले चेले॥
ऋद्धि-सिद्धि में हों विराज, आज तेरी...॥

❑ ❑ ❑

श्री अनन्तनाथ विधान

जय बोलिए

अनन्त पापों के हर्त्तारी, अनन्त गुणों के भण्डारी, अनन्त दर्शी, अनन्त ज्ञानी, अनन्त सुखी, अनन्त ध्यानी, अनन्त शक्ति सम्पन्न अनन्त अन्तर्मुखी, प्रसन्न, अनन्त आत्मा में लीन, अनन्त ज्ञान में प्रवीण, अनन्त ज्ञायक, अनन्त दायक, अनन्त होकर एक-एक होकर अनन्त, परमपूज्य

श्री अनन्तनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

अनन्तगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनन्तप्रभु उसके प्रभु, नमोऽस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें, पदवी मिले अरिहन्त की।
इससे रचाई अर्चना प्रभु, परमपूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी, भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनन्त स्वामी को नमन, करें वन्दना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि, मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या, मिली नहीं यहाँ दवा॥
करें निजात्म को निरोग, नीर को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अनादि से जले तपे, मिली सदा अशान्ति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव, आत्म रूप शान्ति है॥
करें निजात्म को सुशीत, शीत को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

विनाशवान ही हमें, मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी, सुपुंज को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जिसे स्व-वीतरागता, जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम, तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील, पुष्प को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शरीर है नहीं शरीफ, भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान, के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त, कामना चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

महान् मोह की घटाएँ, आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की, महान् मोह नाशती॥

भरें निजात्म ज्ञान से, सुदीप ये जलाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

लकीर हाथ की भरी, विभाव गंध कीच से।
निकालिए हमें अनन्त, कर्म-बन्ध बीच से॥
भरें निजात्म गंध से, सुगंध को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अनन्त जन्म लक्ष्य के, अभाव में गँवा दिए।
फलों भरी चिदात्म को, कषाय से जला दिए॥
मिले निजात्म आत्म को, फलात्म के चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥
अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्त नाथ जी, बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिये, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ्य महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

अनन्त गुण भण्डार हैं, प्रभु अनन्त भगवान।
अनन्त गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्रपौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोक शिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाए, क्या हमसे तुम हो रूठे?॥१॥

सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥२॥

समझा दो जयश्यामा नन्दन!, सिंहसेन सुत समझा दो।
एक पद्मरथ राजा वाली, पुण्य-कथा भी बतला दो॥
एक दिवस वह सुने स्वयं प्रभ, जिनवर जी के दिव्य वचन।
जिनको सुनकर मन में गुनकर, छोड़ा राज्य पाठ यश धन॥३॥

राज्य पुत्र धनरथ को देकर, संयम धर आगम ध्याया।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सल्लेखन कर सुर पाया॥
स्वर्ग त्याग कर नगर अयोध्या, सिंहसेन जयश्यामा के।
गर्भ जन्म कल्याणक उत्सव, सुर-रत्नों को वर्षा के॥४॥

बचपन गया बनें फिर राजा, देखा उल्कापात तभी।
बनें विरागी तो लौकांतिक, सुर अनुमोदन करे तभी॥
दीक्षा का आहार दान दे, विशाल राजा सुखी हुए।
दो छद्मस्थ वर्ष के गुजरे, केवलज्ञानी आत्म छुए॥५॥

जय आदिक पचास गणधर से, समवसरण की सभा भरी।
द्रव्य तत्त्व अध्यात्म शिखर की, प्यारी दिव्य-ध्वनि बिखरी॥
भव्य जनों को ज्ञान मार्ग दे, विहार करना छोड़ दिया।
तीर्थ स्वयंभूकूट शिखर पर, मासिक योग निरोध किया॥६॥

इकसठ सौ मुनियों को साथी, बना मोक्ष को पाया था।
शुभ अंतिम संस्कार सुरों ने, कर कल्याण मनाया था॥
जिनके नाम मात्र सुमरण से, अनन्त गुण यूँ ही मिलते।
उनको बुधग्रह तक सीमित कर, किसके खुशी बाग खिलते॥७॥

तब ही पुरुषोत्तम नारायण, फिर सुप्रभ बलभद्र हुए।
मधुसूदन प्रतिनारायण भी, इसी काल में हुए हुए॥
ऐसी श्री अनन्त जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥८॥

कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥९॥

(सोरठा)

सेही जिनका चिह्न, जो प्रभु अनन्तनाथ हैं।
वैभव मिले अनन्त, जिन चरणों में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(सुविद्या)

भू नभ सागर से भी ज्यादा, तुम हो पूज्य विशाल।
वैरागी गुणवान हमें भी, कर दो मालामाल॥

(९ योनि वर्णन)

जीव सहित जो जन्म स्थान है, वो ही योनि सचित्त।
जो दे साधारण शरीर को, भव-भव जन्म विचित्र॥
सम्मूर्च्छन जन्मों की पीड़ा, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं सचित्तयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

देव नारकी जन्म स्थान जो, कहलाता उपपाद।
वो कहलाती अचित्त योनि, जो दे कष्ट विवाद॥
जन्म विक्रिया तन मन पीड़ा, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं अचित्तयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

सचित्ताचित्त योनियों द्वारा, गर्भजन्म के स्थान।
उन गर्भों की पीड़ा से तो, बच न सके भगवान्॥
प्रभो! हमारी गर्भज पीड़ा, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं सचित्ताचित्तयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

देव नारकी तेजस कायिक, के बिन जन्म स्थान।
शीत योनियों के द्वारा जो, पापों भरी खदान॥

शीत जन्म के कष्ट हमारे, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं शीतयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

उष्ण योनि से तेजस कायिक, जीवों का हो जन्म।
जल जल कर जो जल ना पाते, रहे सदा जो खिन्न॥
उष्ण जन्म के कष्ट हमारे, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं उष्णयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

जन्म धरें शीतोष्ण योनि से, देव नारकी लोग।
शीत उष्ण की पीड़ा सहते, हुआ न आतम भोग॥
पीड़ाएँ शीतोष्ण हमारी, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं शीतोष्णयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

जीव दिखे ना फिर भी जन्में, तो है संवृत योनि।
देव नारकी एकेन्द्रिय की, दुख उत्पत्ति होनी॥
दर्द रोग अनकहे हमारे, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं संवृतयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

विवृत योनि से जन्म धारते, दो इन्द्री त्रय चार।
विकलेन्द्रिय का देख न सकते, दुख पूरित संसार॥
दुख पूरित संसार हमारा, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं विवृतयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

मिश्र योनियों से जो जन्में, गर्भज तन के जीव।
जिनके दुख कहने में सक्षम, नहीं करोड़ों जीभ॥
मल-मूत्रों से भरी वेदना, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं संवृतविवृतयोनि-जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

(१७ मरण वर्णन)

पल-पल आयु झरे हमारी, प्रतिपल मरना होय।
वही अवीचिमरण कहाता, उससे कोई न रोय॥
पल-पल घुटना पल-पल मरना, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं अवीचिमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

वर्तमान जीवन की आयु, जब हो पूर्ण समाप्त।
उसे मरण जग कहता तद्‌भव, मरण बोलते आप्त॥
हे! मृत्युंजय मृत्युवेदना, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं तद्भवमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

वर्तमान सम भविष्य में भी, मरना जो तन धार।
अवधिमरण वह कहा जिसे हो, बार-बार धिक्कार॥
हे! अनन्तगुण अवधिमरण दुख, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं अवधिमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

अज्ञानी मिथ्यादृष्टी सम, आगे मरण न बाल।
वही कहा आद्यंतमरण जो, कुछ तो हरे मलाल॥
हे! अपराजित मरने का भय, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं आद्यंतमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

अज्ञानी मिथ्यादृष्टी को, जब यम करे हलाल।
बालमरण वह आगम कहता, बुरा करे जो हाल॥
हे! 'सव्वण्हू' बालमरण दुख, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं बालमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

सम्यग्दर्शन मय मुनियों का, वीतराग धर रूप।
पण्डितमरण वही मिल जाए, जो देता चिद्रूप॥

मृत्यु-विजेता मृत्युमहोत्सव, दे दो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं पण्डितमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

संयम से च्युत होकर मरना, अपयश दे अपमान।
आवसन्न वह मरण जीव का, छीने सुख सम्मान॥
हे! प्रसन्न प्रभु अपयश मरना, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं आवसन्नमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

सम्यग्दृष्टी अणुव्रती का, मरना समता धार।
वो ही बालपण्डितमरण दे, स्वर्गों का संसार॥
हे! सुव्रतेश्वर निजसम सुव्रत, दे दो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं बालपण्डितमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

मिथ्या माया निदान या फिर, धर कर शल्यँ अन्य।
मरना सशल्यमरण कहाता, तो कैसे हो धन्य॥
हे! निःशल्य शल्य की शूली, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं सशल्यमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

प्रमाद सहित अगर हो मरना, वो है मरण पलाय।
तो कैसे शुद्धातम वाली, यात्रा सुखद कराये॥
वीतराग हे! प्रलय पलायन, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं पलायमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

तड़प-तड़प कर आर्त्तध्यान से, मरना मरण वशार्त्त।
वही भेद-विज्ञान ध्यान बिन, पाता दुर्गति गर्त॥
हे! अनन्तसुखी आर्त्तरौद्र दुख, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं वशार्त्तमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

चार तरह उपसर्ग आए तो, मरना कर संक्लेश।
वो विप्राण मरण दुखदायी, नाशे अपना भेष॥
हे! प्राणेश्वर क्लेश-कष्ट सब, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं विप्राणमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

जब उपसर्ग अचानक होकर, निकले जाते प्राण।
गृद्धपृष्ठ वह मरण कभी भी, नहीं शरण कल्याण॥
हे! परमेष्ठी आकस्मिक दुख, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं गृद्धपृष्ठमरण-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

क्रम क्रम से आहार त्याग कर, नश्वर तजें शरीर।
भक्तप्रत्याख्यानमरण वो, जयवंतो हो वीर॥
हे! निज रसिक भक्त को निजरस, दे दो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं भक्तप्रत्याख्यानमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

तन सेवा पर से न करा के, खुद कर तजना देह।
वही इंगिनीमरण, मरण दुख, हर ले निःसंदेह॥
हे! निर्लोभी तृष्णा-मृत्यु, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं इंगिनीमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

तज आहार बिना वैयावृत, तजें अचल कर काय।
प्रायोपगमनमरण वही जो, मोह छोड़ वन जाए॥
हे! निर्मोही मोह मरण दुख, हर लो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं प्रायोपगमनमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

जनम-मरण का मरण करे जो, करते हैं अरिहन्त।
पण्डितपण्डितमरण पूज्य कर, हुए सिद्ध जयवंत॥
हे! वरदानी इसी मरण को, दे दो अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रीं पण्डितपण्डितमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

पूर्णार्घ्य

कहीं जनम तो मरण कहीं है, कहीं उदय या अस्त।
कहीं पतन उत्थान कहीं है, कहीं खुशी या कष्ट ॥
तीन लोक में तीन काल में, इच्छा रही अनन्त।
पेट सिंधु मरघट सम पूरी, कर न सके भगवंत॥

तभी सभी इच्छाएँ तजकर, प्रभु से नाता जोड़।
भाव-भक्ति से अर्घ्य चढ़ाएँ, शीश मोड़ कर जोड़॥
इक-इच्छा बस दे दो दीक्षा, प्यारे अनन्तनाथ।
हमें नमोऽस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

(सोरठा)

प्रभु अनन्त भगवान्, चिदानन्त चित्राम हैं।
जिनका कर गुणगान, सादर जिन्हें प्रणाम हैं॥

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनि-जन्ममरणचक्र-वेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

अनन्तप्रभु के पदकमल, श्रद्धा से उर धार।
गाएँ अब जयमालिका, कर वन्दन शतबार॥

(लोलतरंग)

पूज्य अनन्त महंत जिनन्दा, घोर किए तप आतम चंदा।
आत्म समाधि जहाँ मन भायी, जन्म महा दुख मृत्यु नशायी॥
मोक्ष विशाल महालय स्वामी, मुक्ति वधू परमेश्वर नामी।
लाख चुरासहि से डरते जो, जन्म तथा मृतु से बचते जो॥१॥

भक्त वही प्रभु नाम पुकारें, दर्शन को प्रभु राह निहारें।
द्रव्य सँजोकर भाव बनाएँ, भाव बनाकर पाठ रचाएँ॥
पाठ रचाकर के गुण गाते, और यही बस लक्ष्य बनाते।
लो कर लो हमको निज जैसे, लो हर लो भव चक्र सरीखे॥२॥

लाख चुरासहि योनि नशा दो, पण्डित-पण्डित मरण करा दो।
हो न सके यह आश दिला दो, मृत्यु महोत्सव पर्व करा दो॥
आतम एक मिले अविकारी, दर्शन ज्ञान बने अधिकारी।
तीन स्वरत्न मिले निजभूति, चार अराधन हो अनुभूति॥३॥
पाँच महाव्रत को अपनाएँ, पाँच महापद को सिर नाएँ।
षट् अपने कर्तव्य निभाएँ, षट् निज द्रव्य धरें उर ध्याएँ॥
सात सुतत्त्व जिनागम द्वारा, चिंतन मंथन आतम धारा।
आठ हरें विधि अष्टम भूपा, नौ सुपदार्थ धरे निज रूपा॥४॥
ग्यारह श्रावक की प्रतिमाएँ, बारह अंग भरी जिन माँएँ।
संयम तेरह रूप निराला, चौदह हैं गुणस्थानक माला॥
चौदहवें जिन आप निराले, हो सबके तुम ही रखवाले।
एक कृपा हम पै तुम कीजे, आतम के सब शूल हरीजे॥५॥
मोक्ष हमें प्रभु आप दिलाओ, राह हमें सुख की बतलाओ।
हो न सके यदि कार्य यही तो, भक्ति महा सुख शान्ति दिलाओ॥
आतम का पथ ध्यान कराके, भक्त जनों पर छाँव बना दो।
पंचम काल न मोक्ष मिले सो, मृत्यु महोत्सव पाठ सिखा दो॥६॥
खूब कृपा हम पै प्रभु तेरी, दास बने हम भक्त तुम्हारे।
अंतर-आतम को पहचानें, आ पहुँचे अब द्वार तुम्हारे॥
शीघ्र उबारो भाग्य सँवारो, किंतु नहीं जग में तुम आना।
'सुव्रत' की विनती सुन स्वामी, योग्य बना के मोक्ष बुलाना॥७॥

(सोरठा)

मोक्ष मिले ना आज, कर्म निर्जरा ना दिखे।
भज अनन्त जिनराज, मृत्यु महोत्सव कर सखे॥
अतः भक्त अनुराग, करता है भगवान् से।
मिलता झट वैराग्य, अनन्त भक्ति प्रणाम से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री अनन्तनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

नगर 'तालबेहट' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण हुआ जिन चरण में, अनन्तनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर, शनि अट्ठाबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु-प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : भक्ति बेकरार है....)

श्रद्धा अपरम्पार है, भक्ति बेशुमार है।
अनन्तप्रभु के चरणों में, आरती बारम्बार है ॥
चौदहवे तीर्थंकर तुम हो, अनन्तनाथ प्रभु नाम है। अनन्त...
सिद्धसेन जयश्यामा माँ के, नन्दन तुम्हें प्रणाम है ॥नन्दन....
श्रद्धा अपरम्पार है..... ॥ १ ॥
अनन्तगुणी आतम को पाने, नगर अयोध्या त्याग दिया। नगर....
तभी बने आतम के रसिया, रूप दिगम्बर धार लिया ॥रूप....
श्रद्धा अपरम्पार है..... ॥ २ ॥
समवसरण में हुए पूज्य तो, धरती अम्बर गूँज गए। धरती....
चमत्कार आतम अतिशय को, भक्त सुरासुर पूज गए ॥रूप..
श्रद्धा अपरम्पार है..... ॥ ३ ॥
नाम आपका सुनकर स्वामी, राग-द्वेष विधि बन्ध झड़े। राग....
हमको निज की सुध आई तो, चरणों में हम आन पड़े ॥
श्रद्धा अपरम्पार है..... ॥ ४ ॥
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हमको भी अपना लेना। हमको..
सुख शान्ति दे साथ निभाना,निज सम शीघ्र बना लेना ॥निज..
श्रद्धा अपरम्पार है..... ॥५ ॥

❑ ❑ ❑

श्री धर्मनाथ विधान

जय बोलिए

धर्म के महास्तम्भ, धर्म धुरंधर, धर्मात्माओं के प्राण हितंकर, धर्म ध्वजा के धारी, धर्मचक्र के अधिकारी, धर्म तीर्थ प्रवर्तनकारी, अनेक धर्म संस्कारी, धर्म के मूल आधार, धर्मोपदेश दातार, धर्म के परमानन्द, धर्म के शंखनाद, धर्म के ब्रह्मास्त्र, सर्वथा प्रशस्त, परमपूज्य

श्री धर्मनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइए, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥
आतमा की शान्ति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ाएँ जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुए।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुए॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मण्डप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मण्डप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ाएँ, धर्म से हर काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुए कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घातिकर्म संसार।
धर्म संत अरिहन्त को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्षधर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

अधर्म से ऊँचे उठे, छुए धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिए धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्मप्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्मधुरंधर धीरा, धर्म धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्मतीर्थ के पालक, अपना कैसा है नाता॥१॥

जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥२॥

एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजापालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥३॥

बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थसिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुए॥४॥
कुमारकाल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया-माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥५॥
हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥
पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुए।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुए॥६॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥
धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर ॥७॥
धर्मदेशना धर्मध्वजा दे, किए विहार बंद स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गए।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे ॥८॥
दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥९॥
तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धारकर पाप नाशकर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥१०॥

उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोहपंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में, 'सुव्रत' को बुलवालो ना॥११॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हरकर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(तीन आत्म अवस्थाओं का वर्णन) (विष्णु)

अनादिकाल से तन चेतन को, हमने एक गिना।
ये बहिरातम सुखी रहें क्या?, भेदविज्ञान बिना॥
नर-तन से पुद्गल के नर्तन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं बहिर्मुखी-बहिरात्मभावविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

जघन्य सम्यग्दृष्टी, मध्यम,-देशव्रती मुनिजन।
संत शुद्ध उपयोगी उत्तम, हैं अंतरआतम॥
अंदर बाहर के सारे भ्रम, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं अंतर्मुखी-अंतरात्माभावदायक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

संसारी अरिहन्त सकर्मा, सकल-परम-आतम।
द्रव्य भाव नौ कर्म रहित शिव, निकल-परम-आतम॥
कष्ट जाल जंजाल जगत् के, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं निजरसलीन-परमात्माभावदायक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

(१० प्रकार के कल्पवृक्षों का वर्णन)

तुष्टि-पुष्टि कर मधुर पेय की, जो बत्तीसी दे।
कल्पवृक्ष पानांग जाति के, धर्म भक्ति ही दे॥
स्वानुभूति से पुद्गल के रस, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं विषाक्त-पररसनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

उत्तम वीणा झालर आदिक, जो वादित्र दिए।
कल्पवृक्ष तूर्यांग जाति के, साँचे धर्म दिए॥
निज-यन्त्रों से इन यन्त्रों को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं ध्वनिप्रदूषणनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

हार मुकुट कुण्डल आदिक जो, आभूषण देते।
कल्पवृक्ष वो भूषणांग हैं, धर्म भक्त लेते॥
निजभूषण से ये आभूषण, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं आभूषण-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

ऊनी सूती तरह-तरह के, जो वस्त्रों को दें।
कल्पवृक्ष वस्त्रांग जाति के, धर्मी प्राप्त करें॥
बने दिगम्बर, वस्त्राडम्बर, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वस्त्राडम्बर-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

सुनो! पाँच सौ अस्सी विध का, जो देते भोजन।
कल्पवृक्ष वो भोजनांग हैं, पाते धर्मात्मन्॥

ज्ञानामृत से पुद्गल भोजन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं आहार-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

स्वस्तिक नंद्यावर्त भवन जो, सोलह विध होवें।
कल्पवृक्ष वो आलयांग हैं, धार्मिक जन भोगें॥
निज मोक्षालय से भव-आलय, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं भवन-आवास-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

भवनों में फल फूलों जैसे, दीप दान जो दें।
कल्पवृक्ष दीपांग जाति के, धर्म शरण वो हैं॥
आत्म दीप से, जड़-ज्योति को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं प्रकाश-दृष्टि-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

रत्न स्वर्ण के बर्तन आसन, आदि दान करते।
कल्पवृक्ष वो भाजनांग हैं, धर्माश्रित रहते॥
निज में रमकर, बर्तन आसन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं बर्तन-आसन-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

सोलह हजार विध पुष्पों की, जो दे मालाएँ।
कल्पवृक्ष मालांग जाति के, धर्म-दास पाएँ॥
मुक्ति-माल से ये मालाएँ, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं पुष्पमाल-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

मध्यदिवस के कोटि सूर्यसम, सूर्य कान्ति हरते।
कल्पवृक्ष तेजांग जाति के, भक्त प्राप्त करते॥
निज स्वभाव से धूप छाँव को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं धूपछाँव-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

(१७ प्रकार का अयोग्य व्यापार त्याग)

चमड़ा हड्डी आदि वस्तु के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे, तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं पशुहिंसा-अत्याचार-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

चमड़ादिक जूते चप्पल के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे, तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं गमनागमन-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

रेशम ऊनादिक वस्त्रों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वस्त्रविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

गाँजा अफीम आदि वस्तु के , जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं व्यसनविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

मद्य मांस मधु आदि वस्तु के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं समाजविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

ईंट-कबेलू के भट्टों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥

जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं अग्निविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

जंगल वृक्ष जलाने वाले, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वन उपवनविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

खड्ग छुरी बंदूकादिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं आत्मरक्षाविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

नाट्य सिनेमा नट आदिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं मनोरंजनविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

इत्र सेंट पुष्पादिक हिंसक, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं शृंगारविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

लाख मोम के लेन देन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं प्रदर्शनविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

हलवाई होटल आदिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं भोजनान्नविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

मील कारखाने यंत्रों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं यंत्रमीलविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

पशु-बन्धन पीडन ताडन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वधबन्धनविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

जंगल वृक्ष काटने वाले, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं वृक्षविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

कुआ-ताल भू-खान खनन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं प्राकृतिकविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२९॥

सड़े घुने फल अन्नादिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं कृषिविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३०॥

पूर्णार्घ्य

बहिरातम तज, अंतर आतम, तत्त्व ज्ञान पाएँ।
ज्ञाता दृष्टा चिन्मूरत बन, परमातम ध्याएँ॥
किन्तु कल्पतरुओं के लालच, हमें न बहकाएँ।
वैभाविक व्यापार तजें सब, धर्म-गीत गाएँ॥

ये सब कार्य तभी होंगे जब, कृपा धर्म की हो।
क्षण में लोक शिखर छू लें जब, हानि कर्म की हो॥
मोक्ष महल तक बिन पंखों के, हम उड़ जाएँगे।
धर्म ढाल असि ले पापों से, हम लड़ जाएँगे॥

निज की निज में शक्ति प्रकट हो, कुछ ऐसा कर दो।
धर्म धर्म बस धर्म धर्म हो, बस ऐसा वर दो॥
धर्म भाव से ओत-प्रोत हो, करें अर्घ्य अर्पण।
धर्म सिद्धि को धर्म नाथ को, करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं धर्मविकृति-विकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

धर्म बड़ा संसार में, ऋद्धि-सिद्धि दे दान।
धर्म पंथ को त्याग के, बनता कौन महान्॥
अतः धर्म की छाँव में, गुजरे सुबहो-शाम।
तभी समुच्चय गीत के, पहले करें प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! धर्मनाथ की, धर्मतीर्थ की जय-जय हो।
कुछ भी कर लो किन्तु धर्म बिन, कभी न पापों का क्षय हो॥
मोहमार्ग या मोक्षमार्ग हो, अथवा कैसी मुश्किल हो।
धर्म रहित कुछ भी हल ना हो, ना ही कुछ भी हासिल हो॥१॥

ऐसा कोई द्रव्य नहीं जो, धर्म बिना परिणमन करे।
ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जो, धर्म बिना अवगहन करे॥
ऐसा कोई काल नहीं जो, धर्म बिना परिवर्तित हो।
ऐसा कोई भाव नहीं जो, धर्म बिना ही भावित हो॥२॥
तीन लोक में तीन काल में, सभी द्रव्य गुण पर्याएँ।
बिना धर्म के रह ना सकतीं, कैसे धर्म भुला पाए॥
अब तक जितने सिद्ध बने या, पंच परमपद पाए हैं।
शुद्ध बुद्ध प्रतिबुद्ध बने जो, धर्म शरण में आए हैं॥३॥
तो फिर बोलो धर्म भक्ति बिन, क्या अपना मंगल होगा?
अतः धर्म करने से मंगल, आज नहीं तो कल होगा॥
पूज्य धर्म को भार न समझो, बहुत बड़ा उपहार यही।
पार करे उद्धार करे यह, कर दे जय-जयकार यही॥४॥
"धम्मो दया विसुद्धो" वाली, हमें भावना भाना है।
"दंसण मूलो धम्मो" प्यारा, मन मंदिर में लाना है॥
"चारित्तं खलु धम्मो" अपने, जीवन में अपनाना है।
"वत्थु सहावो धम्मो" धरकर, आत्म लक्ष्य को पाना है ॥५॥
पूज्य "अहिंसा परमो धर्मः", सकल धर्म आधार कहा।
आतम जुदा, जुदा है पुद्गल, सब धर्मों का सार रहा॥
तरह-तरह के भेद धर्म के, इसके ही विस्तार कहे।
धर्मनाथ जिनके समग्र को, नमोऽस्तु बारम्बार रहे ॥६॥
सर्व सुखों की खान आप हैं, नहीं आप सम अन्य रहे।
दया अहिंसा संयम तप में, तिष्ठित जग से भिन्न रहे॥
सबके रक्षक आप दयालु, रक्षा करो हमारी भी।
सबकी सुनते एक बार अब, अर्जी सुनो हमारी भी॥७॥
हम अनादि से दुखिया जग में, आप बिना घबराते हैं।
पाप ताप संताप कष्ट भय, हमको खूब सताते हैं॥
भक्ति भावना ऐसी भर दो, आत्म मिले पुद्गल छूटे।
'सुव्रत' के बस दिल में रहिये, दुनियाँ रूठे तो रूठे ॥८॥

(सोरठा)

धर्म धर्म की चाह, रोज भक्त हम चाहते।
देख धर्म की राह, शीश झुका हम पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री धर्मनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, धर्मनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, जनवरी नौ तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभ को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

बाजे छम्-छम् छूम्-छूम् छाम्, लाओ दीया बाती घ्राम्।
आओ धर्म प्रभु के धाम, कर लो आरती भजन प्रणाम॥

वीतराग प्रभु! धर्मनाथ जी, पन्द्रहवे जिन स्वामी। पन्द्रहवे....
भानुराज सुप्रभा मातु के, नन्दन जग-कल्याणी। नन्दन....
करते आतम में विश्राम, बनते जिनसे सबके काम[२]
आओ धर्म प्रभु के........॥१॥

जब से ऊगा धर्म सूर्य तो, पाप अँधेरा भागा। पाप....
धर्म धुरन्दर के दर्शन से, भाग्य सितारा जागा। भाग्य....
होकर चिन्मय चेतन ग्राम, जिनसे उज्ज्वल सुबहो शाम[२]
आओ धर्म प्रभु के........॥२॥

धर्म कृपा है बड़ी निराली, कर्म बन्ध सब खोले। कर्म....
उसका होगा बाल न बाँका, जो इनकी जय बोले। जो....
छोड़ो यहाँ-वहाँ के काम, करिये पुण्य भरे शुभ काम[२]
आओ धर्म प्रभु के........॥३॥

हम भक्तों की सुनो प्रार्थना, अपना हमें बना लो। अपना....
धर्म अहिंसा शंख बजा के, अपने पास बुला लो। अपने....
'सुव्रत' भजें धर्म का नाम, पाएँ शुद्धातम शिव-धाम[२]
आओ धर्म प्रभु के........॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री शान्तिनाथ विधान
जय बोलिए

शान्ति के दाता, शान्ति के प्रदाता, शान्ति के विधाता, शान्ति के विख्याता, शान्ति के जिनालय, शान्ति के समुन्दर, शान्ति के सिद्धालय, शान्ति के परमहंस, शान्ति के सुखालय, परमपूज्य

श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम ॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।
जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥

शान्ति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥

जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥
जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जब-जब शान्ति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप-घट की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जब-जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो२
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में२
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में२
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में२
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथ जी
सौधर्म शचि सह आए, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाए, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथ जी

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग,
धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाए, केवलज्ञानी हों अरिहन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥

कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है ॥१॥

पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥२॥

विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥३॥

गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥४॥

चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर ॥८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर ॥१०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥

कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥१२॥

ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्डखण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥

पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

अर्घ्यावली

(अनन्त चतुष्टय) (हाकलिका)

कर्म हरे ज्ञानावरणी, पूज्य बनें अनन्तज्ञानी।
धर्म दान शुभ वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

हरे दर्शनावरणी जो, अनन्त दर्शन स्वामी वो।
निज दर्शन की वस्तु दो शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तदर्शनप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

मोहनीय को नष्ट किए, अनन्त सम्यक् प्राप्त किए।
श्रद्धा सुख की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म सम्बन्धी उपद्रव निवारकाय अनन्तसुख प्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

अंतराय नाशे पाँचों, अनन्तवीर्य का यश वाँचों।
आत्म शक्ति की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मसम्बन्धी-उपद्रवनिवारकाय-अनन्तवीर्यप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

(अतिशय)

हुए जन्म के दस अतिशय, क्षणिक शान्ति मिलती जय-जय।
अतिशयकारी वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

दसों ज्ञान के अतिशय हों, शान्ति ज्ञान के आलय हों।
ज्ञान-ध्यान की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

हुए देवकृत अतिशय जो, शान्तिविधायक चौदह वो।
विघ्न विनाशक वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं चतुर्विधउपसर्गसम्बन्धी-कर्मोपद्रवनिवारकाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

(त्रयपद)

सोलम तीर्थंकर चक्री, कामदेव त्रय पदधारी।
रत्नत्रय की वस्तु दो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकसम्बन्धी-पदप्रदाय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

(अष्टप्रातिहार्य)

अशोक तरुवर हरे भरे, शान्तिप्रभु सम शोक हरे।
हं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं बीजसहित अशोकतरु-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

दिव्य सुमन सुर बरसाते, शान्तिप्रभु सम सुख लाते।
भं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित पुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

दिव्य ध्वनि ओंकारमयी, सुख संपद दे नयी-नयी।
मं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं बीजसहित दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

चँवर ढुराएँ चौसठ देव, उर्ध्वगमन होता स्वयमेव।
रं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं बीजसहित चामर-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

शान्तिप्रभु सिंहासन पर, ॠद्धि सिद्धि दें मोहित कर।
घं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित सिंहासन-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

सात भवों को भामण्डल, दर्शाकर करता मंगल।
झं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं बीजसहित भामण्डल-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

देव दुंदुंभि वाद्य बजें, दसों-दिशा तक गूँज उठें।
सं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं बीजसहित देवदुंदुभि-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

तीन लोक के अधिपति जो, तीन छत्र से शोभित सो।
खं बीजाक्षर मय भज लो, शान्ति प्रभु को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं बीजसहित छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यमण्डित सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

(जोगीरासा) (अष्टकर्म वर्णन)

ज्ञानावरणी कर्म प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
जो ढँकले सर्वज्ञ ज्ञान गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, ज्ञानावरण नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानबुद्धि-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

दर्शनावरणी कर्म प्रकृतियाँ, नव प्रकार की होतीं।
ढँके निराकुल दर्शन गुण जो, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, दर्शनावरण नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं दर्शनदृष्टि-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

वेदनीय की वेदन प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
अव्याबाध हरे सुख-दुख दे, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, वेदन-कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं सुख-दुःख-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

मोहनीय की मादक प्रकृतियाँ, आठ-बीस विध होतीं।
जो ढँक ले रत्नत्रय प्यारा, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, मोही कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रद्धाचारित्रविरोधी-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

आयु कर्म जंजीर प्रकृतियाँ, चार तरह की होतीं।
बाँधे ढाँके अवगाहन गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, आयु कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं बन्धक-बन्धन-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

नाम कर्म बहु रंग प्रकृतियाँ, जो तिरानवे होतीं।
हरे सूक्ष्म गुण बाधक बनतीं, आतम जिससे रोतीं॥

परम दयालु शान्तिप्रभु सम, नामी-कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं बाधकसाधनतत्त्व-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

गोत्रकर्म की गजब प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
हरे अगुरुलघु ऊँच-नीच दे, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, गोत्री कर्म नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं ऊँचनीचहेतु-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

अंतराय की चतुर प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
हरें वीर्यगुण कार्य बिगाड़ें, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शान्तिप्रभु सम, सब अंतराय नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके भक्त आपको, सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं विरोधीअराजकतत्त्व-कर्मोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

एक सौ अड़तालीस कर्म प्रकृतियाँ, आठ कर्म की नाशे।
नन्तचतुष्टय प्रातिहार्यमय, समवसरण में वासे॥
अतिशयकारी त्रयपदधारी, सब अपराध नशाएँ।
अर्घ्य चढ़ाके करें नमोऽस्तु, सादर शीश झुकाएँ॥

(दोहा)

ओम् ह्रीं बीजाक्षर सहित, ह भ म र घ झ स ख आठ।
शान्तिप्रभु को हम भजें, करके शान्तिपाठ॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशत् मूलगुणसहित अष्टबीजमण्डित सर्वविघ्नशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

अद्वितीय जिनराज हैं, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनके सुमरण से मिले, परमशान्ति निर्वाण॥
चक्रवर्ति पंचम रहे, बारहवें कामदेव।
तीर्थंकर सोलम जिन्हें, शीश झुके स्वयमेव॥

(सायक)

हम माथा जिनको टेक चले, वह प्यारे प्रभु शान्तीश मिले।
बस आशा अपनी एक रही, हमको भी प्रभु आशीष मिले॥
हर तीर्थंकर से भिन्न रहे, निज को पा निज में लीन रहे।
जय शान्तिप्रभु हे शान्तिप्रभु! अपने तो निज-आदर्श रहे ॥१॥

भवसागर तिरने यान रहे, निज मुक्ति वर श्रद्धान रहे।
चित्-ध्यानी बनने ध्यान रहे, निज-ज्ञानी बनने ज्ञान रहे॥
अघ हिंसा हरने दूत रहे, फिर भी जो निज चिद्रूप रहे।
जय शान्तिप्रभु हे शान्तिप्रभु! हम धर्मीजन की शान रहे ॥२॥

जय पापों पर भी आप करें क्षय वैभाविक भी आप करें।
हर विघ्नों दुख को आप हरें, चरणों में हम भी माथ धरें॥
गुण सोला धर, तीर्थंकर का, पद पाया जिन सम्राट अहो।
जय शान्तिप्रभु हे! शान्तिप्रभु, अपनी भी कुछ तो बात रखो॥३॥

प्रकटायी निज की शक्ति सभी, प्रकटायी निज की मुक्ति जभी।
प्रकटाएँ हम भी शक्ति सभी, रच पाई जिन की भक्ति तभी॥
अब स्वामी कर दो आप कृपा, हममें भी निज की शक्ति भरो।
जय शान्तिप्रभु हे! शान्तिप्रभु, हमको भी निजवत् शुद्ध करो॥४॥

यह विश्वास हमें भी कुछ दो, नित हो साथ हमारे तुम भी।
यदि विश्वास यही हो प्रभु तो, सह लें कष्ट हँसी से हम भी॥
जय को प्राप्त किए हो तुम ज्यों, जय को प्राप्त करें यों हम भी।
झट ही 'सुव्रत' को शान्ति मिले, निज 'विद्या' पद को पाएँ हम भी॥५॥

(सोरठा)

यह अनन्त संसार, यहाँ कहाँ पाओ शरण?
अतः शान्तिप्रभु द्वार, खोजें पूजें हम चरण॥
यही लगा के आश, आत्मशान्ति हो विश्व में।
बनके प्रभु के दास, पाएँ मोक्ष भविष्य में॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री शान्तिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, शान्तिनाथ विधान॥
पन्द्रह सोलह जनवरी, आए पार्श्व नवीन।
चौबीसी त्रैयकाल में, हुए उच्च आसीन॥
दो हजार चौदह रहा, बुध गुरु दिन तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : विद्यासागर की गुण.....)

शान्तीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आए।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाए।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥१॥
तीन - तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किए संसारी,
प्रभुजी, सुखी किए संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥२॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनाएँ।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शान्ति हम पाएँ,
प्रभुजी, पुण्य शान्ति हम पाएँ।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥३॥
शान्तिश्वर की ....॥

❑ ❑ ❑

श्री कुन्थुनाथ विधान

जय बोलिए

परम श्रद्धालु, परम दयालु, परम कृपालु, परम धर्मालु, जीव दया के मसीहा, करुणा के अवतार, सत्य अहिंसा के संरक्षक, वात्सल्य के विस्तार, ब्रह्मतत्त्व वेत्ता, कर्म शैल भेत्ता, परमपूज्य श्री कुन्थुनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुन्थुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, १९-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वन्दना।
द्रव्य लाए साथ करने अर्चना॥
आप कुन्थुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥
कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़कर के कर्मबन्धन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम...।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥

नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं ॥
चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से ॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला ॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का ॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है ॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥
गंध के बदले हरो विधि-पाक को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं लाए चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुन्थुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अर्हंत को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

कर्म हरण मुक्तिवरण, कुन्थुप्रभु के स्थान।
यूँ ही मिलते भक्त को, अतः करें गुणगान॥
चक्रवर्ति छठवे रहे, तेरहवे रतिनाथ।
सत्रहवे तीर्थेश की, करें भक्ति नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥
त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥१॥
जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुन्थु जिनवर ॥२॥
यही कुन्थुप्रभु पिछले भव थे, रिपु-विजयी सिंहरथ राजा।
तब ही उल्कापात देखकर, धर्मी बन गए मुनिराजा॥
कैसे हो कल्याण विश्व का, जब रोया यों अन्तर-मन।
इतनी बढ़ी विशुद्धि तब ही, शुद्ध हुआ सम्यग्दर्शन॥३॥
तब तीर्थंकरप्रकृति बाँधी, और समाधिमरण करके।
स्वर्ग अनुत्तर पाया जिसको, त्याग दिया नर बन करके॥

सूरसेन नृप श्री कान्ता माँ, हस्तिनागपुर हुए खुशी।
इन्द्र जन्म अभिषेक पर्व कर, नाम कुन्थु रख हुए सुखी ॥४॥
राजा बने मण्डलेश्वर फिर षट्खण्डों के अधिकारी।
जातिस्मरण से आत्म ज्ञान पा, की शिवपथ की तैयारी ॥
लौकान्तिक का अनुमोदन पा, चले पालकी विजया से।
तुरत सहेतुक वन में जाकर, हुए सुशोभित दीक्षा से ॥५॥
धर्ममित्र ने पंचाश्चारी, दीक्षा का आहार दिया।
सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, तेला वाला नियम लिया ॥
तिलक वृक्ष के नीचे स्वामी, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण की सभा लगी तो, सबने सुनी दिव्यवाणी ॥६॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किए।
कर्म हरण कर मुक्ति वरण कर, मोक्ष कुन्थुप्रभु प्राप्त किए ॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहाई थी।
चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पाई थी ॥७॥
तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुन्थुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी ॥
कुन्थु नाम बस कर्म हरे सब, बुध ग्रह की क्या बात रही?
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही ॥८॥
जैसा आप कहोगे स्वामी, वैसा हम क्या कर न सकें?
किन्तु अकेले तड़प रहे हम, विरह वेदना सह न सकें ॥
अतः रिझाने तुम को आए, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ ॥९॥

(सोरठा)

बकरा जिनका चिह्न, कुन्थुनाथ प्रभु नाम है।
करुणाकर चैतन्य, प्रभु को सतत प्रणाम है ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(श्रावकों के १७ नियम)

(हाकलिका)

कितनी बार पिएँ खालें, प्रतिदिन नियम यही पालें।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं आहार हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

कितने रस षट्रस लेना, प्रतिदिन नियम बना लेना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं रस षट्रस हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

सौंफ सुपारी प्रतिदिन में, कितनी बारी भोजन में।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं सौंफताम्बूलादि हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

तन श्रृंगार विलेपन का, नियम अहिंसक प्रतिदिन का।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं प्रसाधनसामग्री हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

पुष्प पुष्प-मालाओं का, दैनिक नियम पुण्य मौका।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं सुगंध हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

कितनी बार पान खाना, नियम तनिक तो अपनाना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं स्वाद हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

कितने गीत श्रवण करना, कितने वाद्य यन्त्र सुनना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं वाद्ययंत्रगीतसंगीत हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

कितनी बार नृत्य करना, दैनिक कैसे कब करना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं नृत्य हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

दिन पक्षों या वर्षों का, ब्रह्मचर्य हो भक्तों का।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं भोगोपभोग हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

कितनी बार नहाना है, दैनिक नियम बनाना है।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुनाथ को करके॥

ॐ ह्रीं देहमैल हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

कितने आभूषण रखना, प्रतिदिन कितनों से सजना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं आभूषण हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

कितनी बार वस्त्र बदलो, कितने पहनो या रख लो।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं वस्त्र हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

पलंग चटाई विस्तर के, कंबल तकिया चादर के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं शैय्या हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

कुर्सी सोफा पाटे के, करो नियम बिन घाटे के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं आसन हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

यन्त्रों वाहन गाड़ी के, कर लो नियम सवारी के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं यात्री वाहन हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥१५॥

कौन दिशा में आज चलें, कितनी दूरी पार करें।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं दिशाशूल हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

अन्य प्रयोजन की वस्तु, सीमित कर बाकी तज तू।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥

ॐ ह्रीं क्रम संख्या हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥१७॥

(गृहस्थ के १७ यम) (सखी)

विपरीत स्वरूपी कुगुरु को, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध स्वरूपी बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं दिशाविभ्रमदाताकुगुरुभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

विपरीत स्वरूपी प्रभु को, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध निजातम पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं लक्ष्यविभ्रमदाताकुदेवभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

विपरीत कुधर्म की सेवा, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध निजानुभव को, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं साधनविभ्रमदाता कुवृषभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

नहीं कोई प्रयोजन जिसका, तज अनर्थदण्ड की वस्तु।
सो शुद्ध अखण्डित बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आयोजनविभ्रमदाता अनर्थदण्डभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥२१॥

जो योग्य न, पाप सहित वो, व्यापार तजो हर वस्तु।
सो शुद्ध भाव रस चखने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं विचारविभ्रमदाता अयोग्यव्यापारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

बाजी या दाव लगाना, तज जुआ हमेशा को तू।
सो शुद्ध ज्ञान गुण पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं वित्तविभ्रमदाता जुआभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

आजीवन मन वच तन से, तज माँस, माँसमय वस्तु।
सो शुद्ध क्रिया अपनाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं हिंसकक्रियादाता माँसाहारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

जो सात गाँव जलने का, दे पाप शहद वह तज तू।
सो शुद्ध स्वस्थ रत होने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अशुद्धिदाता मधुसेवनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

जो शील रहित नर नारी, उनको आजीवन तज तू।
सो शुद्ध ब्रह्म में रमने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अब्रह्मदाता वेश्यागमनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

पर पुरुष और नारी में, तज रमण हमेशा को तू।
सो शुद्ध निलय में वसने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पराभवदाता परस्त्रीरमणभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

गिरी गुमी पड़ी वस्तु को, ले लेना चोरी तज तू।
सो शुद्ध द्रव्य निज पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अपयशदाता चोरीभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

हिंसक चीजों का देना, तज हिंसादान सदा तू।
सो शुद्ध अभय सुख पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं भयप्रदाता हिंसादानभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२९॥

जो शौक जीव को मारे, तज पाप शिकार सदा तू।
सो शुद्ध चिदातम रुचि को, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं व्यर्थप्राणघातदाता शिकारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥३०॥

संकल्प सहित त्रस हिंसा, जीवन में कभी न कर तू।
सो शुद्ध निराकुल बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं संकल्प अभावदाता त्रसहिंसाभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३१॥

जो झूठ हरे जीवन को, वो आजीवन को तज तू।
सो शुद्ध बनाने सत्ता, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं समस्तकलहदाता स्थूल असत्यभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३२॥

जो देह धर्म का नाशी, वह बिना छना जल तज तू।
सो शुद्ध निरंजन बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं संकटदाता जीवाणीरहितजल उपयोगिताभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३३॥

निज पर की दया हरे जो, वह रात्रिभोजन तज तू।
सो शुद्ध-आत्म भोजन को, हो कुन्थु प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अदयादाता रात्रिभोजनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३४॥

पूर्णार्घ्य

तुम यद्यपि कुछ नहीं देते, नहिं स्वीकारो कुछ स्वामी।
हो दर्पण सम अविकारी, सो तुमको नाथ! नमामी॥
फिर भी जो सुमुख तुम्हारे, वह आतम भाग्य सँभारें।
लेकिन जो विमुख तुम्हीं से, वह अपना भाग्य बिगाड़ें॥
हम अपना भाग्य सजाएँ, सो सुमुख हुए शरणों में।
जो जैसा भी है लेकिन, है अर्घ्य भेंट चरणों में॥
विश्वास हमें है ऐसा, हम शीघ्र सफल ही होंगे।
जिन चरण पकड़कर स्वामी, हम मोक्ष महल में होंगे॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण आत्मिकविभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द आनन्द हो, प्रभु चैतन्य निधान।
नमन हमारा है उन्हें, जो कुन्थु भगवान्॥
करें उन्हीं की वन्दना, करें उन्हीं का ध्यान।
जिनका कण-कण वास है, उनका करें बखान॥

(भुजंगप्रयात)

जहाँ देख लो तो दया ही दिखे रे, दया के अलावा कहो क्या दिखे रे।
न कोई यहाँ जो दया छोड़ देंगे, दया धर्म से राह ही मोड़ लेंगे॥१॥
जिन्होंने ने गिराया दया का किला है, उन्हीं को कुआ नर्क का भी मिला है।
मिटाई जिन्होंने दया भावना को, उन्हीं की न पूरी हुई कामना हो॥२॥
जिन्होंने दया को पराई कही है, उन्हीं ने महा कष्ट पीड़ा सही है।
भुलायी जिन्होंने दया की कथा को, वही पाए तिर्यंच जैसी व्यथा को॥३॥
नहीं जीव होते दया से सुखी ही, कहें जो यही वो रहेंगे दुखी भी।
विभावी कहें जो दया धर्म को वो, विरागी न वो बाँधता कर्म को तो॥४॥

कि जब तक रहेंगे सितारे गगन भी, रहेंगे धरा धाम जब तक मगन ही।
कि जब तक नदी और सिंधु रहेंगे, चमकते रवि और इंदु रहेंगे॥५॥
कि जब तक खिलेगी बहारें यहाँ पै, बरसतीं रहें मेघ धारें यहाँ पै।
कि पानी हवा आग जब तक रहेंगे, कि इस देह में प्राण जब तक रहेंगे॥६॥
कि जब तक चिदातम जिएँगे यहाँ भी, कि जब तक जिनागम रहेंगे यहाँ भी।
न कोई दया को मिटा पाएँगे वो, नहीं भक्त भगवन् भुला पाएँगे सो॥७॥
नियम और संयम पलेंगे यहाँ भी, कि श्रावक श्रमण नित मिलेंगे यहाँ भी।
कि कुन्थुप्रभु की करेंगे विनय हम, कृपा प्राप्त करके करेंगे विजय हम॥८॥
मिले अर्चना का यही फल हमें भी, तुम्हारे चरण की मिले रज हमें भी।
तुम्हारी शरण भी हमें चाहिए है, मिला आपको वो हमें चाहिए है॥९॥
रुलाओ हँसाओ बुलाओ हमें तो, जगाओ सुलाओ भगाओ हमें तो।
बिठाओ उठाओ बनाओ हमें तो, मिलाओ मिटाओ सजाओ हमें तो॥१०॥
ये अर्जी हमारी सुनाई तुम्हें है, तुम्हारे सिवा कौन पूछे हमें है।
जो मर्जी तुम्हारी करो तुम वही तो, कि हम तो रखे भावना बस यही तो॥११॥
हमें भी बुला लो निजी ग्राम में तुम, हमें भी मिला लो निजी धाम में तुम।
कि 'सुव्रत' पुकारें सदा आपको ही, कि जल्दी हरो रोग गम पाप को भी॥१२॥

(सोरठा)

दया धर्म है सार, कुन्थुप्रभु के जिन-वचन।
दया निजातम द्वार, अतः कुन्थुप्रभु को नमन॥
ये इच्छा हो पूर्ण, हिंसा का ताण्डव टले।
कर्म शिला हो चूर्ण, दया धाम आतम मिले॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री कुन्थुनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, कुन्थुनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, जनवरी थी तेईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : मधुवन के मन्दिरों में....)

दीपक जला के लाए, हम आरती उतारें।
कुन्थुप्रभुजी अपने, हैं भाग्य के सितारे॥
नृप सूर्यसेन के तुम, थे पुत्र आज्ञाकारी।
संस्कार दात्री जग में, श्री कान्ता माँ तुम्हारी॥
जन्मे श्री हस्तिनापुर[२], सौभाग्य हैं हमारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥१॥

तुम आत्म ज्योति पा के, संसार मोह छोड़े।
फिर वीतरागी बन के, मुक्ति से नाता जोड़े॥
अज्ञान अंध हरने[२], ये दीप हम उजारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥२॥

हमने सुना है तुम हो, तेजस्वी सूर्य से भी।
होते न अस्त, बाधित, न राहु केतु से भी॥
वरदायिनी किरण के[२], दे दो चरण सहारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥३॥

दीपक तले अँधेरा, सब विश्व में भरा है।
तुम ही बताओ तुम बिन, जो साँचा है खरा है॥
'सुव्रत' जपें अब 'सोहं', परमात्म को पुकारें।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री अरनाथ विधान

जय बोलिए

परम प्रभावक, जिनमत विधायक, मिथ्यात्व विनाशक, सम्यक्त्व प्रकाशक, बहिरात्म-हारी, परमात्म विहारी, निर्ग्रन्थ निराकुल, जिनायतन के संकुल, अरिहन्त जिनेश्वर, परमेष्ठी परमेश्वर, परमपूज्य

श्री अरनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(शिखरणी) (लय : महावीराष्टक)

हजारों फूलों से, अधिक जिनकी गंध महके।
करोड़ों सूर्यों से, अधिक जिनका तेज चमके॥
अनन्तों जन्मों में, इस तरह हो पुण्य अर्जन।
तभी मिल पाएँगे, अरह प्रभु के देव-दर्शन॥

किया होगा कोई, गत समय में पुण्य हमने।
इसी से पाई है, मनुज भव पर्याय हमने॥
बने हैं जैनी तो, अरह जिन को वन्दन करें।
झुका के माथा भी, विनय करके अर्चन करें॥

हमारी आत्मा में, प्रकट परमात्मा तुम करो।
नहीं तो श्रद्धा के, निलय मन को पावन करो॥
हमारी नैया को, जिनवर तुम्हीं पार कर दो।
इसी से भक्ति के, वर सुमन स्वीकार कर लो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पाञ्जलिं...)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ाएँगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पाएँगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रसायन मंत्र मणियों में, न शान्ति है तो क्यों जाएँ।
तभी चंदन चढ़ाके हम, प्रभु सम शान्ति झलकाएँ॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

हुई सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाए।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आए॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥

तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें, कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम-काजल जलाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जमाने में उलझकर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पाएँगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटक कूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य अरनाथ जो, हैं सप्तम चक्रेश।
चौदहवे रतिनाथ हैं, अष्टदशम् तीर्थेश॥

त्रिजग-ईश त्रय कर्म हर, भव-सागर के पार।
जय-जय की जयमालिका, कहें त्रियोग सँभार॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुन्दर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं ॥१॥

इनके दर्शन-भर करने से, उर में निर्मलता आती।
पूजन से सब पातक कटते, पुण्य-आवली शर्माती॥
चिंतन मनन ध्यान जप-तप से, निज स्वभाव सा झलक रहा।
तभी आपके गुणगाने को, हृदय हमारा ललक रहा॥२॥

ज्ञानी ध्यानी सुर विद्याएँ, कह न सके कवि पण्डित जो।
उनके गुण हम क्या गाएँगे, आप स्वयं में मण्डित जो॥
फिर भी जहाँ सूर्य ना जाता, वहाँ दीप क्या जलें नहीं?
बच्चे बाहें फैलाकर क्या, सागर का जल कहें नहीं?॥३॥

पिछले भव में धनपति राजा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधें।
गए स्वर्ग संन्यासमरण कर, मनुज बने जब सुर त्यागें॥

गर्भ जन्म का पर्व सुदर्शन, राजा रानी पाए थे।
स्वर्ग-सुखों को त्याग-त्यागकर, देव पर्व में आए थे॥४॥

चौदह रत्न नवो निधि भोगी, पर देखा जब मेघ विलय।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तब, लौकान्तिक बोले जय-जय॥
राज्य दिया अरविन्द पुत्र को, स्वयं वैजयंती से जा।
लिए सहेतुक वन में दीक्षा, चौथा ज्ञान तुरत उपजा॥५॥

चक्रपुरी नृप अपराजित के, हुई पारणा दीक्षा की।
आम्र तरू-तल बने केवली, जगह वही थी दीक्षा की॥
बारह भरी सभाएँ जिनको, तत्त्वज्ञान अरनाथ दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, महामोक्ष प्रभु प्राप्त किए॥६॥

किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाये।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥७॥

कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्ररत्न का, जिन पर चलकर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥८॥

जिनका नाम अकेला सुनकर, निधियाँ रत्न चक्र दौड़ें।
उनका नाम कहो बुध ग्रह में, सीमित करके क्यों जोड़ें?
पाप शत्रु का मान मरोड़े, राज-रसोड़े जो छोड़े।
राज-रमा घट-दासी जैसी, चक्ररत्न घट-सा छोड़े ॥९॥

इसी तीर्थ में सुभौम चक्री, नन्दिषेण बलभद्र हुए।
पुण्डरीक छठवे नारायण, प्रतिनारायण निशुम्भ हुए॥
ऐसे श्री अरनाथ देव से, एक प्रार्थना बस यह हो।
रत्नत्रय से मुक्तिवधू से, चट मँगनी पट विवाह हो॥१०॥

किया नमोऽस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा जीवन में॥
फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोऽस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥११॥

(सोरठा)

चरण शरण में मीन, चिह्न सदा ही शोभता।
जो हैं कमलासीन, उन्हें जगत् नित खोजता॥

वो हैं अर जिनराज, जो शुद्धातम सुख भरें।
उन्हें नमोऽस्तु आज, हम पर भी करुणा करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरहनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(१८ दोष वर्णन) (स्त्रग्विणी)

मोह से भूख ऐसी सताये सदा, पाप निन्दा भरी रोज देती सजा।
आपने वेदना भूख की नाश के, शुद्ध ज्ञानामृती आत्मा को चखा॥
भूख की वेदना नष्ट हम भी करें, आत्म संतुष्ट हो आप जैसे रहें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं क्षुधानिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

प्यास से कण्ठ तालू जहाँ सूखते, किन्तु मरते नहीं प्राण से सूखते।
तुम पिपासा नशा ज्ञान रस को पिए, तो तुम्हारे लिए भक्त नित पूजते॥
ज्ञान गंगा हमें प्रेम की अब पिला, आप ही ये पिपासा हमारी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं पिपासानिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

कुछ दिखाई न दे कुछ सुनाई न दे, हाय! बूढ़े सहें नर्क सी ताड़ना।
आप हो आप में, हो विनश्वर नहीं, दुख बुढ़ापा हरे, दूर की यातना॥
अब दिला के जिनाश्रय निजाश्रय हमें, यह पराश्रय बुढ़ापा हमारा हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वृद्धावस्थानिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

पित्त कफ वात के रोग करते दुखी, कौन माटी भरी देह में हैं सुखी।
देह में आप रहके विदेही बने, शुद्ध आत्मस्थ हो स्वस्थ अन्तर्मुखी॥
आप गर्भस्थ करके निरोगी करें, रोग तन मन वचन के हमारे हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवे क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं रोगनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

कर्म जंजीर में विश्व ऐसे फँसे, जीव उत्पन्न चारों गती में हुए।
खूब कष्टों भरे जन्म को तुम हरे, बस इसी से चरण हम तुम्हारे छुए॥
आप निर्बन्ध निर्द्वन्द दें आतमा, गर्भ की जन्म की वेदना भी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं जन्मनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

है भयंकर महा वेदना मृत्यु की, कौन जीते इसे कौन टाले इसे।
आप ध्यानस्थ मृत्युंजयी बन गए, अब किसे खोजना पूजना है किसे?
दे समाधी निराकुल भरी आतमा, मृत्यु की मृत्यु कर वेदना भी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं मृत्युनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

जो कँपा दे हमें डर दिला दे हमें, सात ऐसे भयों से जमाना डरे।
आप आतम किले में सुरक्षित हुए, भय तभी तो तुम्हारे चरण में गिरे॥
दे दिगम्बर अभय रूप मुद्रा हमें, भय हमारे हरें, शीघ्र निर्भय करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं भयनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

जाति कुल आदि आठों मदों से मदित, जीव अभिमान से जल रहे हैं अहो।
आप उपसर्ग परिषह सहे निज रमे, इसलिए आप सम्मान के योग्य हो॥
हम जलें तो मगर दीप जैसे जलें, ये अहंकार ज्वाला हमारी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं गर्वनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

वस्तुएँ इष्ट पाके हुई प्रीति जो, प्राणियों को वही कष्ट की रीति हो।
आपने आपको आपमें वर लिया, सो तभी राग की नष्ट की नीति हो॥
आपकी भक्ति से आत्म की प्रीति को, राग की प्रीति को नष्ट तुम सम करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं इष्ट रागनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

(अडिल्ल)

अनिष्ट वस्तु में अप्रीति परिणाम जो।
द्वेष वही करवाता निज संग्राम हो॥
हरने तुम सम द्वेष हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं द्वेषनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

पर स्वभाव को अपना कहना मोह है।
अहं बुद्धि तज अर्हम् पाते मोक्ष हैं॥
हरने तुम सम द्वेष हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं मोहनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

इष्ट प्राप्ति के, अनिष्ट हरण के भाव जो।
चिन्ता-चिता जलाती आत्म स्वभाव को॥
चिन्ता तुम सम हरें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं चिंतानिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

अनिष्ट वस्तुएँ मिल जाने से कष्ट हो।
वही अरति जिससे होता पथ-भ्रष्ट हो॥
अरति आप सम हरें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं अरतिनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

पाँचों निद्राएँ रोकें निज दर्श को।
निद्रा विजयी आप जगत् आदर्श हो॥

निद्रा जय करने हम को आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं निद्रानिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

होते जो आश्चर्य रूप परिणाम हैं।
विस्मयहर्त्ता प्रभु को नम्र प्रणाम हैं॥
विस्मय जय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं विस्मयनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

तत्त्व ज्ञान जो हर्त्ता वो ही मद रहा।
रूप दिगम्बर मद-हर्त्ता जिन पद कहा॥
मद जय तुम सम करें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं मदनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

तन-छिद्रों से बूँद पसीना जो बहे।
वही स्वेद उसके विजयी उज्ज्वल रहे॥
स्वेद विजय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं स्वेदनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

जिसे थकावट कहा वही तो खेद है।
खेद विजेता पाते निज-पर भेद है॥
खेद विजय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥

ॐ ह्रीं खेदनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

(क्षायिक लब्धियाँ) (स्त्रग्विणी)

पूर्ण ज्ञानावरण शत्रु को तुम हने, राज्य कैवल्य पा निज विजेता बने।
घोर अज्ञान निज सम हमारा हरो, पूर्ण शुद्धात्म सर्वज्ञ हमको करो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणनिमित्त-दोषाचरणविनाशन समर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

दर्श गुण का विरोधी नशाए तुम्हीं, पाए कैवल्य दर्शन बने निज गुणीं।
देव-दर्शन मिले दर्श प्रभु दीजिये, आत्म दर्शन विरोधी नशा दीजिये॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

दान में विघ्न-बाधा करम तुम हरे, पाए क्षायिक महादान निज का करे।
दान दे तत्त्व झोली हमारी भरो, दान में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं दानान्तरायनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

लाभ में विघ्न-बाधा करम तुम हरे, पाए क्षायिक महालाभ निज का करे।
लाभ दे धर्म झोली हमारी भरो, लाभ में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं लाभान्तरायनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

भोग में विघ्न-बाधा करम तुम हरे, पाए क्षायिक महाभोग निज का करे।
भोग दे आत्म झोली हमारी भरो, भोग में विघ्न -बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं भोगान्तरायनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

विघ्न उपभोग बाधा करम तुम हरे, पाए क्षायिक उपभोग निज का करे।
दे स्व-उपभोग झोली हमारी भरो, विघ्न उपभोग बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उपभोगनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

वीर्य में विघ्न-बाधा करम तुम हरे, पाए क्षायिक महावीर्य निज जय करे।
वीर्य दे ध्यान झोली हमारी भरो, वीर्य में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वीर्यनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

आप सम्यक्त्व के हर विरोधी हरे, आत्म सम्यक्त्व क्षायिक सुश्रद्धा वरे।
देव गुरु शास्त्र की आत्म श्रद्धा भरो, कर्म श्रद्धा विरोधी हमारे हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-सम्यक्त्वनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२६॥

आप चारित्र के हर विरोधी हरे, शुद्ध चारित्र क्षायिक स्वरूपी वरे।
पाप-पुण्याचरण बिन हमें तुम करो, कर्म चारित विरोधी हमारे हरो॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं चारित्रनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

पूर्णार्घ्य

पुण्य अर्जित करें, अर्घ्य अर्पित करें, किन्तु कुछ भी नहीं माँगते दीन हो।
क्योंकि तुम वीतरागी उपेक्षक रहे, राग बिन द्वेष बिन आप निजलीन हो॥
पेड़ की छाँव में छाँव क्या माँगना, किन्तु फिर भी अगर दीजिये तो यही।
रोज सेवा तुम्हारे चरण की मिले, कर न देना हमें दूर खुद से कभी॥
समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं समस्तविधनिमित्त-दोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जिनशासन अरनाथ से, चेत उठा चैतन्य।
जिनको नमोऽस्तु कर हुए, सभी भक्त हम धन्य॥

धीरे-धीरे हम करें, गुण गाकर कुछ शोर।
वीतरागता प्राप्ति को, आए प्रभु की ओर॥

(मालती)

हे अरनाथ! रहो जयवंत, रहो जयवंत सदा तुम स्वामी।
रोज तुम्हें हम पूज रहे नित, रोज तुम्हें नत माथ नमामि॥

खोज रहे उस पुद्‌गल को, जिसने तुमरी यह देह सँवारी।
सुन्दर हो इतने तुमको अब, नजर लगे ना आज हमारी॥१॥
एक कहो प्रभु बात हमें तुम, सुन्दरता इतनी कब पाई।
सुन जिसको खुद मुक्ति-वधू अब, खोज तुम्हें जिन दर्शन पाई॥
देख तुम्हारी सुन्दरता को, फूल समान बड़ी शरमायी।
नत् नयना वरमाल लिए वह, मुक्ति स्वयंवर को ललचायी॥२॥
आप उसी पर मोहित होकर, छोड़ गए रतिनाथ जवानी।
चौदह रत्न नवो निधि को तज, छोड़ गए सब राज-रु-रानी॥
चक्र सुदर्शन छोड़ गए सब, छोड़ गए सब माल-रु-माला।
रूप दिगम्बर से तुमने निज, आत्मस्वरूप निखार हि डाला॥३॥
दोष अठारह पूर्ण नशा तुम, निर्मल दर्पण सम अविकारी।
क्षायिकलब्धि तभी प्रकटी नव, जय हो! जय हो! नाथ तुम्हारी॥
खूब किए उपकार सभी पर, पार करो भव-यान हमारा।
जो मन में तुमको धर ले वह, शीघ्र बने शिव राज दुलारा॥४॥
त्याग तपस्या खूब करो सब, पूजन पाठ भी खूब रचा लो।
खूब करो धन दान दया सब, खूब सभी व्रत शील सँभालो॥
जो मिलता इससे वह भी सब, मात्र मिले क्षण में प्रभु द्वारा।
सो अरनाथ प्रभु के दर्शन, हों हमको यह भाव हमारा॥५॥
दर्शन ज्ञान महागुण आदिक, पूज्य अनन्त गुणों के स्वामी।
दुर्लभ पूजित वंदित वे गुण, आप बने प्रभु अन्तर्यामी॥
हो कुछ लेकिन अन्त न उनका, कौन कहे वह पूर्ण कहानी।
लेकिन अन्त हुए थुति से वह, सो हम रोज करें प्रणमामि॥६॥
आत्म स्वरूप मिले हमको बस, सो प्रभु को हम शीश नवाते।
भक्ति-नमन भी सिद्धि करे सो, विध-विध के हम पथ अपनाते॥
इसविध उसविध किसविध भी प्रभु, अपनी बिगड़ी आप बना लो।
देर-अवेर भले प्रभु हो पर, 'सुव्रत' को निज पास बुला लो॥७॥

(सोरठा)

भुक्ति मुक्ति दे दान, आत्म स्वरूपी सुख भरें।
अतः किए गुणगान, धर्म ध्यान अपना करें॥
धर्मध्यान का लक्ष्य, शुक्ल ध्यान पाएँ कभी।
बने भक्ति में दक्ष, अर-प्रभु को वन्दन अभी॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री अरनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, श्री अरनाथ विधान॥
दो हजार चौदह प्रथम, मंगल अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : इह विधि मंगल .....)

जगमग-जगमग ज्योति जला के, करें आरती हम गुण गा के।
परम पूज्य अरनाथ प्रभु को, करें नमोऽस्तु शीश झुका के॥
जगमग-जगमग ज्योति ...।
आप मित्र सेना के नन्दन, धार्मिक राजा पिता सुदर्शन।
आतम रसिया जग उपकारी, करें आपका हम अभिनन्दन॥
जगमग-जगमग ज्योति ..... ॥१॥
कामदेव में काम न जन्मा, चक्री को भव चक्र न भाया।
तीर्थंकर ने कर्म नशा के, सिद्धचक्र अविनश्वर पाया॥
जगमग-जगमग ज्योति ..... ॥२॥
चौदह रत्न नवों निधियों को, छोड़ गए वन स्व-रानियों को।
मुक्ति स्वयंवर को रच डाले, पाए निज की निज निधियों को॥
जगमग-जगमग ज्योति ..... ॥३॥
यह संसार कर्म की रैली, इसमें आतम दुखी अकेली।
डोर थाम लो पार लगा दो, चाहें क्या? फिर चेला-चेली॥
जगमग-जगमग ज्योति ..... ॥४॥
तुम सर्वज्ञ आत्म धर्मालु, भक्त आपके हम श्रद्धालु।
'सुव्रत' की निज ज्योति जला दो, अरे! दयालु, अरे! कृपालु॥
जगमग-जगमग ज्योति ..... ॥५॥

❑ ❑ ❑

श्री मल्लिनाथ विधान

जय बोलिए

मोहमल्ल विजयी, अष्टकर्म जयी, शल्यों के हारी, शूलों के विदारी, सिद्ध स्वरूपा, आतम भूपा, चिन्मय रूपा, श्री चिद्रूपा, परम तपस्वी, पूज्य यशस्वी, परम ओजस्वी!, परम तेजस्वी! परमपूज्य

श्री मल्लिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२], हम आज सजाए रे॥
नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥
अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥
पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)[२], हम भक्त बुलाएँ रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पाएँ।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जीना अरु मरना, (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं...।

खस चंदन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पाएँगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएँगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पाएँ।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पाएँ।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
पर की आसक्ति (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर-रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥
रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
काया भव व्याधि (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पाएँ।
अतः आरती दीप जला, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
मोही भव गलियाँ (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जाएँ।
अतः सुगंधी खेकर हम, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
कर्मों के शत्रु (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सुख-दुख की परवाह न की,निज-कर्त्तव्य निभाए तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाए तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटाएँ।
अतः भेट फल निजफल को, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥
जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचें फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जग में पूज्य विशेष हैं, मल्लिनाथ योगीश।
जयमाला के नाम से, मिले हमें आशीष॥
कर्म-शरण संसार दे, धर्म-शरण दे तार।
पाने शरण विशेष अब, आए प्रभु के द्वार॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुंडों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥१॥
एक वैश्रवण राजा देखे, जब बरगद का पेड़ गिरा।
जब इतना मजबूत गिरा तो, अपना तो हो हाल बुरा॥
इसी दृश्य से हो वैरागी, राज रमा जग छोड़ गए।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति धर, कर सल्लेखन स्वर्ग गए॥२॥
स्वर्ग त्याग मिथिला नगरी के, राजा कुम्भ बड़े प्यारे।
जिनकी प्रजावती रानी को, देकर स्वप्न जन्म धारे॥
गर्भ जन्म कल्याणक विधि से, मल्लिनाथ यह नाम रखा।
सौ वर्षों का कुमारकाल जब, बीता तो सब नगर सजा॥३॥
तभी याद आई स्वर्गों की, कहाँ त्याग का फल पावन।
और कहाँ यह लज्जादायक, बिडम्बना विवाह बन्धन॥
ऐसे विवाह की निन्दा कर, दीक्षा का उद्योग किया।
तब लौकान्तिक देवों ने आ, अनुमोदन सहयोग किया॥४॥
अहो! अहो! कौमार्य दशा में, नर-इन्द्रों को जो दुष्कर।
वही विषय तज चले श्वेत-वन, बैठ जयन्त पालकी पर॥
'प्रशान्तरूपायदिगम्बराय' को, धरा 'नमः सिद्धेभ्यः' कह।
हुई पारणा मिथिलानगरी, नंदिषेण राजा के गृह॥५॥
बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिए॥६॥
जनम-मरण की जहाँ तरंगें, भँवरे इच्छा की रखता।
भवसागर दुख जल से पूरित, मिथ्या चंदा से बढ़ता॥

मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥७॥
तब ही पद्म चक्रवर्ती अरु, नन्दिमित्र बलदेव हुए।
तब बलीन्द्र प्रतिनारायण भी, नारायण तब दत्त हुए॥
जिनका नाम मोह ग्रह हर ले, फिर क्या बात केतु ग्रह की।
अतः नमोऽस्तु मल्लिनाथ को, जो दें राह मोक्षगृह की॥८॥
धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥
चरित-मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज-भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥९॥
स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥१०॥
अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥
सब मंगल में पहला मंगल, जिन-दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥११॥

(सोरठा)

कलश चरण में चिह्न, मल्लिनाथ प्रभु नाम है।
आतम मिले अभिन्न, इससे सदा प्रणाम है॥
हे निर्मोही! आप्त, करो एक हम पर नजर।
दुख गम करो समाप्त, कालसर्प-भवयोग हर॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥
(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(सम्यग्दर्शन की पाँच लब्धि वर्णन) (हरीगीतिका)

बढ़ती विशुद्धि आत्म की जब, हीन पापोदय हुए।
संज्ञी बने हित दृष्टि से, सम्यक्त्व के काबिल हुए॥
ये रेल पहियों सम क्षयोपशम-लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं कर्मपापोदयनाशक-विवेकदृष्टिदायक-क्षायोपशमिकलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

जो पुण्य आदि प्रशस्त बन्धन, के लिए परिणाम हों।
जिससे असाता कष्ट नशते, प्राप्त साता कर्म हों॥
सिगनल सफाई सी विशुद्धि-लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं असाताकर्मनाशक-साताभावदायक-विशुद्धिलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

गुरु के वचन सुन तत्त्व आदिक, ज्ञान के उपवन खिलें।
उस पर मनन कर अर्थ से, सम्यक्त्व के कारण मिलें॥
ये हॉर्न जैसी देशना की, लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं गुरु उपदेशामृतदायक-देशनालब्धिविधायक-श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

बिन आयु अन्तः कोड़ाकोड़ि, कर्म की थिति कर सकें।
अनुभाग अशुभों में कमी से, योग्यता कुछ धर सकें॥
पेट्रोल सम प्रायोग्यलब्धि, शीघ्र सब जन उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं अशुभकर्मप्रभावनाशक-प्रायोग्यलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

जिस भाव से सम्यक्त्व होता, वो करणलब्धि कही।
प्रतिपल अनन्तों गुण विशुद्धि, जो अभव्यों में नहीं॥

चाबी समा ये करणलब्धि, भव्य सब जन उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं उत्तमपरिणामदायक-करणलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

(सम्यग्दर्शन के ५ अतिचार)

जिनदेव द्वारा कथित श्रुत में, जो करें संदेह को।
या सप्त भय से भीत होकर, पा रहे दुख-देह को॥
सम्यक्त्व को करता मलिन जो, नाश वह शंका करें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं शङ्कानाशक-निःशङ्कितभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

इस जन्म में पर जन्म में जो, चाहते भव-भोग को।
इस चाह से भव-दाह से, उनको न आतम योग हो॥
सम्यक्त्व को करता सदोषी, नाश वह कांक्षा करें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं कांक्षानाशक-निःकांक्षितभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

रत्नत्रयी जो शुद्ध हैं पर, बाह्य तन पर मैल हों।
अथवा दुखी दारिद्र्य जन को, ग्लानि के जो भाव हों॥
सम्यक्त्व का अतिचार यह, हम नाश विचिकित्सा करें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं घृणानाशक-निर्विचिकित्साभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

तप ज्ञान मिथ्यादृष्टियों का, देख अच्छा मन कहे।
ये अन्यदृष्टि की प्रशंसा, नाम के अवगुण रहे॥
सम्यक्त्व को मैला करे यह, त्याग आत्मार्थी करें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिप्रशंसानाशक-गुणप्रशंसाविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

मिथ्यात्व के तप ज्ञान आदिक, वाक्य से कहना भले।
ये अन्यदृष्टि संस्तवों का, दोष आतम में पले॥
सम्यक्त्व का यह दोष जल्दी, त्याग मोक्षार्थी करें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिसंस्तवनाशक-जिनसंस्तवविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

(व्रतों की २५ भावनाएँ)

मन की शुभाशुभ तज प्रवृत्ति, तो अहिंसा पल सके।
ये ही मनोगुप्ति सँभारें, आत्म तब ही मिल सके॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं मनोविकारनाशक-मनोगुप्ति-अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

छोड़ो शुभाशुभ बोलना तो, जीव की करुणा पले।
ये ही वचनगुप्ति सँभारें, शुद्ध आतम तब मिले॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं वचनविकारनाशक-वचनगुप्ति-अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

बस चार हाथों की नजर रख, देख कर भू पर चलें।
ये ही रही है ईर्यासमिति, इस दया से चित खिलें॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं यातायातविकारनाशक-ईर्यासमिति-अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

जो भूमि पर रखना उठाना, देखकर हर वस्तुएँ।
आदाननिक्षेपणसमिति वो, धर दया अन्तर छुएँ॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं विनिमयविकारविनाशक-आदाननिक्षेपणसमितिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

लो अन्न-जल तो शोध करके, सूर्य के आलोक में।
आलोकभोजनपानसमिति, नित्य पुजती लोक में॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं शुद्धिविकारविनाशक-आलोकितपानभोजनसमितिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

जब क्रोध हो तो सत्य क्या सो त्यागना ही क्रोध को।
ये क्रोध प्रत्याख्यान करके संत पाते बोध को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं असत्यविकारविनाशक-क्रोधप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

जब लोभ हो तो सत्य क्या सो, त्यागना ही लोभ को।
ये लोभ प्रत्याख्यान करके, संत हरते क्षोभ को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं लोभविकारविनाशक-लोभप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.. ।१७॥

भीरुत्व हो तो सत्य क्या सो, त्यागना भयभीत को।
भीरुत्व प्रत्याख्यान करके आत्म से मुनि प्रीत हो॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं भयविकारविनाशक-भीरुत्वप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

जब हास्य हो तो, सत्य क्या सो, त्यागना ही हास्य को।
ये हास्य प्रत्याख्यान करके, धार लो संन्यास को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं हास्यविकारविनाशक-हास्यप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९ ॥

शास्त्रोक्त ही निर्दोष बोलो, या धरो सब मौन को।
अनुवीचि-भाषण से समझ लो, विश्व में तुम कौन हो॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं वाणीविकारविनाशक-अनुवीचिभाषणविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

पर्वत गुफा तरु-कोटरों में, और निर्जन धाम में।
ये वास शून्यागार धरकर, लीन हों निज ध्यान में॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, संत जैसी हम धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं वनविकारविनाशक-शून्यागारवासविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

छोड़े हुए महलों किलों में, या गृहों में वास हो।
यह है विमोचित वास इससे, नाश लो उपहास को॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, संत जैसी हम धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं आवासविकारविनाशक-विमोचितावासविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

तुम हो जहाँ ठहरे वहाँ पर, रोकना नहिं अन्य को।
ऐसे परोपरोधाकरण से, चेतना भी धन्य हो॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, संत जैसी हम धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं विरोधविकारविनाशक-परोपरोधाकरणविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३ ॥

हो शास्त्र के अनुसार भोजन, शुद्धि से भिक्षा करें।
ये भैक्ष्यशुद्धि प्राप्त करके, शुद्ध जिनदीक्षा करें॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, संत जैसी हम धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिविकारविनाशक भैक्ष्यशुद्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४ ॥

सहधर्मियों से कलह करना, धर्म को दागी करे।
सहधर्म-अविसंवाद यह जो, चित्त वैरागी करे॥
ये भावना ही अचौर्यव्रत की, संत जैसी हम धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं वादविवादविकारविनाशक-सधर्माविसंवादविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

ऐसी कथाएँ जो बढ़ाए, नारियों में राग को।
वह स्त्रीरागकथा श्रवण का, साधुओं का त्याग हो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं स्त्रीरागविकारविनाशक-स्त्रीरागकथाश्रवणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६ ॥

हो देखने का त्याग सुन्दर, नारियों के अंग को।
वह तन्मनोहरांग निरीक्षण, त्याग से सत्संग हो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं अङ्गोपाङ्गविकारविनाशक-तन्मनोहराङ्गनिरीक्षणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७ ॥

अव्रत दशा में भोग भोगे, याद उनकी छोड़ दो।
पूर्वरतानुस्मरण त्याग से, शीघ्र सुव्रत धार लो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं भोगविषयविकारविनाशक-पूर्वरतानुस्मरणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८ ॥

तज इष्ट और गरिष्ट रस जो, काम का वर्धन करें।
वृष्येष्टरस का त्याग करके, पुण्य का अर्जन करें॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं रसविकारविनाशक-वृष्येष्टरसत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२९॥

संस्कार अपनी देह के, सजने सँवरने के तजो।
स्वशरीरसंस्कारत्याग से, स्वरूप शृंगारित भजो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं शृंगारविकारविनाशक-स्वशरीरसंस्कारत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३०॥

अच्छे बुरे परसन विषय में, राग हो ना दोष हो।
त्रय योग से समता सँभालो, ध्यान-मुद्रा शेष हो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनविकारविनाशक-स्पर्शनेन्द्रियविषयराग-द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३१॥

कड़वे मधुर आदिक रसों में, राग हो ना द्वेष हो।
पाँचों तरह रसना विषय में, साम्य अमृत भेष हो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं रसनाविकारविनाशक-रसनेन्द्रियविषयराग-द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३२॥

दुर्गन्ध या शुभ गंध को अच्छा-बुरा कुछ ना कहो।
धर घ्राण के विषयों में समता, आत्म सौरभ में रमो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं घ्राणविकारविनाशक-घ्राणेन्द्रियविषयराग-द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३३॥

जो चक्षु के पाँचों तरह के, वर्ण में समता धरे।
वो पुद्गलों के भाव तज के, आत्म निर्मलता करे॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं नेत्रविकारविनाशक-चक्षुरिन्द्रियविषयराग-द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३४॥

जो कर्ण के सातों सुरों में, साम्य नित ही धारता।
साधक सुरासुर से पुजे, संसार भी वह तारता॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोऽस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥

ॐ ह्रीं कर्णविकारविनाशक-कर्णेन्द्रियविषयरागद्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३५॥

पूर्णार्घ्य

जो चाहते दर्शन उन्हें प्रभु आप दर्शन दीजिये।
जो पूजते तुमको, उन्हीं पर, शीघ्र करुणा कीजिये॥
जो माँगते शरणा तुम्हारी, शरण उनको लीजिये।
जो खोजते हैं मोक्ष उन पर, प्रभु दया कर दीजिये॥
है मल्लिप्रभु को अर्घ्य अर्पित, भावना केवल यही।
बस दो दिनों की जिंदगी यह, भक्त की कर दो सही॥
हों जन्म-मृत्यु फूल जैसे, जिन्दगी हो इत्र सी।
झट भक्त-भगवन् के मिलन को, है नमोऽस्तु भक्त की॥

(दोहा)

निज से निज की भेंट को, अर्घ्य भेंट है आज।
कृपा करो हम भक्त पर, मल्लिनाथ जिनराज॥
ब्रह्म रमण की साधना, मल्लिप्रभु दें दान।
ऐसे परम जिनेश के, चरण पड़ें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं समस्तविध-आत्मविकारविनाशक-त्यागवैराग्यभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मल्लिप्रभु इस विश्व को, हर पल रहे उदार।
आतम ज्ञान प्रकाश से, हरें पाप अँधयार॥
भय को जो कर दें अभय, पतितों को लें धाम।
उनकी महिमा क्या कहें, हम तो करें प्रणाम॥

(पंचचामर)

द्वितीय बाल ब्रह्म के, यतीश मल्लिनाथ हैं।
उनीशवे जिनेन्द्र शुद्ध-आत्मलीन आप हैं॥
विराग वीतराग के, महान् उच्च धाम हो।
अतः स्वरूप प्राप्ति को, तुम्हें सदा प्रणाम हो॥१॥

विभाव से हटे हुए, स्वभाव में रमे हुए।
अभाव से दुखी नहीं, प्रभाव में जमे हुए॥
दबाव से दबाव में, तुम्हें दबाव है नहीं।
झुकाव आपके लिए, सही दवा बने वही॥२॥

विचार ही स्वभाव है, विचार ही विभाव है।
यही विचार आपका, महान ही सुझाव है॥
यही विचार आत्म में, अनादि से अनन्त है।
दिगम्बरी यही विचार, शुद्ध जैन-पंथ है॥३॥

विचार ही बुराई है, विचार ही भलाई है।
विचार स्वर्ग-मोक्षधाम, और नर्क खाई है॥
विचार शत्रु मित्र बन्धु, अन्य खिन्न-भिन्न हैं।
विचार से सुखी-दुखी, विचार से प्रसन्न हैं॥४॥

यही विचार आपने, निजात्म में विचार के।
विहार मोक्ष को किया, विचार को सुधार के॥
अनादि की परम्परा, कुधर्म की विनाश दी।
सुधर्म पाँच लब्धियाँ मिली, निजी विकास की॥५॥

सदोष कोश आत्म रत्न, को किए विशुद्ध हैं।
सदैव भावना किए, अतः बने प्रसिद्ध हैं॥
प्रसिद्धि देख आपकी, हमें सुसिद्धि भा गयी।
तुम्हें निहार के हमें स्व-आत्म याद आ गयी॥६॥

विचार के सुधार को, रचा रहे उपासना।
भवाब्धि-वर्त वर्तना, हरो यही सु-प्रार्थना॥
हमें कभी विचारभाव, धर्म के मिले नहीं।
तभी गुलाब आत्म में, स्वभाव के खिले नहीं॥७॥

दया करो कृपा करो, हरो विभाव भ्रान्तियाँ।
तभी विनाश हो सकें, अनन्त कर्म ग्रन्थियाँ॥

यहाँ न आप आइए, हमें बुलाइये वहाँ।
सदा रहे जिनेन्द्र देव, आपकी कृपा जहाँ॥८॥

हमें न दीन भाव से, दया प्रदान कीजिये।
समानता स्वभाव से, हमें समान कीजिये॥
गरीब के नसीब को, गरीब क्या बनाओगे।
विचार तो सुधार दो, हमें करीब पाओगे॥९॥

(सोरठा)

ऋद्धि-सिद्धि उपहार, पाकर निज बगिया खिले।
'सुव्रत' करें पुकार, निज स्वभाव हमको मिले॥
अतः किया गुणगान, मल्लिनाथ भगवान् जी।
हो स्वीकार प्रणाम, कर देना कल्याण भी॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री मल्लिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

है 'बामौरकलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, मल्लिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, दूजी सत्ताबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : हे शारदे माँ....)

ज्योति जला के, लखो मूर्ति को।
मल्लिप्रभु की, सदा आरती हो॥

तुम कुम्भ राजा के, राज दुलारे। प्रजावती माँ के, नयनों के तारे॥
मिथिला के स्वामी, मुक्ति पथी हो। मल्लिप्रभु की ...॥१॥
जिसमें ही सम्पूर्ण ये विश्व उलझा। तुमने वो निस्सार संसार समझा॥
समझ के न उलझे बने जिन-पथी हो। मल्लिप्रभु की ...॥२॥
तुम्हें खोजते हम तो पहुँचे यहाँ पर। तुम्हीं न सँभालो तो जाएँ कहाँ पर॥
सर्वोपकारी तुम्हीं महारथी हो। मल्लिप्रभु की ...॥३॥
अगर आसरा तुम दे दो चरण का। तो पूरा हो सपना मुक्ति वरण का॥
करुणा तुम्हारी हमें तारती हो। मल्लिप्रभु की ...॥४॥
ये दौलत हमारी बदौलत तुम्हारी। बिना आपके क्या हो हालत हमारी॥
'सुव्रत' को पथ दो, ओ! सारथी हो । मल्लिप्रभु की ...॥५॥

❑ ❑ ❑

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

जय बोलिए

मुनिव्रत पालक, मुनिव्रत दाता, मुनिव्रत रक्षक, परम प्रमाता, संकटमोचक, विघ्न विनाशक, मंगलकारी, कष्ट निवारी, उपकारी, सर्व सौख्य कर्त्ता, सुख-शान्ति के सृजेता, परमपूज्य श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं-क हीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

प्राणत नामक स्वर्ग त्याग जब, श्रावण कृष्णा दूज रही।
सोमा जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब वैशाख कृष्ण की दशमी, नगर राजगृह जन्म लिया।
श्री सुमित्र राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज वैशाख कृष्ण दशमी को, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तिथि वैशाख कृष्ण नवमी को, घाति कर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥

अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस फाल्गुन कृष्ण रात में, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बन्धन सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥१॥
बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥२॥
आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥३॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥४॥

आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥५॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥६॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

अर्घ्यावली

(१० सम्यक्त्व वर्णन)

(लय : माता तू दया करके ......)

कोई न हमारा है, हमको प्रभु अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥
अपना सबको माना, कथनी सबकी मानी।
दुख भोगा पर हमने, जिनवाणी ना मानी॥
हितकर जिनवर उपदेश, अब हमको अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥१॥

ॐ ह्रीं कुज्ञाननाशक-आज्ञासम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

हमने शिवपथ पाया, पर चले कुपथ पर हम।
सो भटके अब तक पर, नहिं चले सुपथ पर हम॥
अब शिवपथ मंगलमय, श्रद्धा से अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥२॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकुमार्गनाशक-मार्गसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

दुखकर साहित्य सुना, त्यों श्रद्धा मन भायी।
अब पुरुष शलाका के, चारित्र सुनो भाई॥
चारित्र कथन सुनकर, श्रद्धा उर में लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥३॥

ॐ ह्रीं हिताहितविज्ञानदायक-उपदेशसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

नहिं सद्गुरु पहचाने, नहिं सद्चर्या जानी।
अब मुनिचर्या वाले, सद्ग्रन्थ सुनो प्राणी॥
सद्ग्रन्थों को सुनके, श्रद्धा को उपजाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥४॥

ॐ ह्रीं भयातङ्कनाशक-सूत्रसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

करणानुयोग के ग्रन्थ, या बीज सूत्र सुन के।
जो श्रद्धा लेती जन्म, वो पाप हरे मन के॥
वह बीज नाम वाला, सम्यग्दर्शन पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥५॥

ॐ ह्रीं संसारमूलहेतुनाशक-बीजसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

जीवादिक तत्त्वों का, संक्षिप्त रूप सुनके।
जन्मी श्रद्धा हरती, सारे दुख आतम के॥
सम्यग्दर्शन संक्षेप, हम भक्तों को पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥६॥

ॐ ह्रीं पापवर्धकभावनाशक-संक्षिप्तसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

जो भव्य जीव सुनते, विस्तृत श्री जिनवाणी।
उससे जो श्रद्धा हो, वह होती कल्याणी॥
विस्तार नाम का वह, सम्यक्त्व हृदय लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥७॥

ॐ ह्रीं पुण्यवर्धक-विस्तारसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

बिन वचनों के विस्तार, तत्त्वार्थ ग्रहण करना।
तब होता जो विश्वास, वह श्रद्धा उर धरना॥
वह अर्थ नाम धारी, सम्यग्दर्शन जाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥८॥

ॐ ह्रीं परमार्थदायदायक-अर्थसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

श्रुतकेवलि का सम्यक्त्व, अवगाढ़ कहाता है।
सब तत्त्व द्रव्य जाने, तम मोह नशाता है॥
अवगाढ़ नाम का वह, सम्यक्त्व श्रेष्ठ माना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥९॥

ॐ ह्रीं पूज्यदृष्टिप्रदायक-अवगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

केवलि जिनवर का जो, सम्यक्त्व रहा न्यारा।
है वही परम-अवगाढ़, सम्यक्त्व महा प्यारा॥
वह साधन मुक्ति का, प्रभु वंदन से पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥१०॥

ॐ ह्रीं रोगपातनाशक-परमावगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

(तीन प्रकृतियाँ)

(चौपाई)

देव-शास्त्र-गुरु जो ना माने, शुद्धातम को ना पहचानें।
वह मिथ्या का संकट हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वप्रकृतिरूप-महासंकटविनाशनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

मिथ्यासम्यक् जब मिज जाते, दहि गुड़ जैसे मिश्र कहाते।
वह सम्यक् मिथ्या दुख हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्वप्रकृतिरूप-घोरोपद्रवविनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

देवशास्त्रगुरु को जो पूजे, परमातम आतम को खेजे।
वह श्रद्धा हम सक्यक् करलें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिरूप-महानन्दकर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

(चार कषाएँ)

अनन्तभव से जो बँधवाती, अनन्तानुबन्धी कहलाती।
पत्थर सम वह कषाय हरलें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीकषायसम्बन्धी-महावेदनाहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

छह माहों तक जो तड़पाए, अप्रत्याख्यान वो कहलाए।
मिट्टी सम वह कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं अप्रत्यख्यानावरणीकषायसम्बन्धी-महापीड़ाहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

पंद्रह दिन तक जो तड़पाए, प्रत्याख्यान वही कहलाए।
धूली सम वह कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीकषायसम्बन्धी-महाकष्टहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

अंतरर्मुहूर्त तक जो तड़पाए, संज्ज्वलन कषाय कहलाए।
जल रेखा सम कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं संज्ज्वलनकषायसम्बन्धी-महाविघ्नहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

(चार उपसर्ग) (ज्ञानोदय)

शीत ग्रीष्म वर्षा मौसम के, जो होते उपसर्ग कभी।
उनके संकट दुख सहने में, योग्य नहीं है जीव सभी॥
प्रकृति कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं प्रकृतिकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

शापानुग्रह बल के कारण, देवोंकृत उपसर्ग हुए।
दिल दहला देने वाले वे, दृश्य देखकर खेद हुए
देवों कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं देवकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

कभी पालतू कभी फालतू, जानवरों के द्वारा जो।
जीवमात्र के हृदय विदारक, हों भय दुख संहारा जो
तिर्यंच कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

जियो और जीने दो वाले, भूले मंत्र अहिंसक जो।
सो अज्ञान कषायों द्वारा, मानव बनते हिंसक वो
मनुष्य कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं मनुष्यकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

(पूर्णार्घ्य)

कर्मों के फल सभी भोगते, तो हमको छोड़ेंगे क्या?
किंतु हमारी यही भावना, जीवमात्र का होए भला॥
संकट दुख उपसर्ग नहीं हों, सिद्धालय सम विश्व बनें।
अर्घ्य चढ़ा सो सुव्रत प्रभु को, नमोऽस्तु अपने घने-घने॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : **ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।**

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सूर्य चाँद जब तक रहें, गिरि सागर में नीर।
तब तक सुव्रतनाथजी, जय जयवंत सुवीर॥

(सुविद्या)

जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत नाथ।
आप बीसवें तीर्थंकर हो, काम बीसवाँ हाथ॥
काम नहीं उन्नीस सुहाया, कर डाला इक्कीस।
मानस तल पर तभी विराजे, सिद्धालय के ईश॥१॥

मोहकर्म-तम विघ्न निवारक, तारणतरण जहाज।
जगहितकारी मंगलकारी, गुणधारी जिनराज॥
आपदहारी संपदकारी, अतिशयवान् जिनेश।
कुगतिनिवारी शिवसुखकारी, मुक्ति रमा परमेश॥२॥

कण-कण गुण-गण मणिमय पूजित, रहो सदा जयवंत।
जो भी पूजे नाम तिहारा, नहीं रहे भयवंत॥

हम भी छोटे भक्त तुम्हारे, अज्ञानी हैं बाल।
भक्ति सहित फिर भी गुण गाते, छूटे भव जंजाल ॥३॥
बस इतना सामर्थ्य हमारा, हुए हँसी के पात्र।
दोष क्षमाकर पावन कर दो, भक्तों का मन गात्र॥
ज्ञान आपका ध्यान आपका, जपें आपका नाम।
शीश झुकाएँ गाथा गाएँ, जीवन में अविराम॥४॥
बदले में बस इतना चाहें, इच्छा होवे पूर्ण।
विश्वशान्ति हो, प्रेमभाव हो, सुखी जगत् संपूर्ण॥
भय आतंक रहित हो दुनियाँ, पापों से हो दूर।
धर्म भावना समझ हिताहित, सेवक बनें जरूर ॥५॥
तजे उपेक्षा और अपेक्षा, मंदिर हो संसार।
दया प्रेम करुणा हो मन में, मंगलमय आचार॥
रोग गरीबी लूट मार ये, होवें सकल समाप्त।
प्रचार प्रसार हो मूल धर्म का,समझें प्राणी आप्त॥६॥
कर्त्तव्यों का हो परिपालन, माँगे ना अधिकार।
उपदेशों की शिक्षा पालें, गौ-बछड़े सा प्यार॥
सीमाओं के पार न जाएँ, सज्जन बनें महान्।
भार बनें ना हम गैरों पर, बस इतना अरमान॥७॥
दिया आपने भक्त जनों को, मुँह माँगा वरदान।
योग्य लगे तो झोली भर दो, हम पाएँ सद्ज्ञान॥
धर्म क्रांति घर-घर हो जाए, हरियाली सुख छाँव।
दूर भ्रांति सब की हो पाएँ, मुक्ति रमा का गाँव॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा.....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री मुनिसुव्रतनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

है 'बामौरकलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, मुनिसुव्रत विधान॥
दो हजार चौदह रवि, पंचम तिथि दिन तीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : चंदा तू ला रे....)

जय हो! हे सुव्रतस्वामी!, तुमको शतबार नमामि,
चरणों में झुकते हैं हम भारती॥
हो स्वामी, हम सब उतारें तेरी आरती॥
मुनिसुव्रत प्रभु कष्ट हरो, स्वामी जय प्रभु कष्ट हरो
हम हैं चरण पुजारी तेरे[२], हमको नहिं विसरो।
हो स्वामी, नीली सी सुन्दर काया, साँवलिया रूप सुहाया,
हमको तुम्हारी करुणा तारती... हो स्वामी.....॥
आप बीसवे तीर्थंकर हो, करते इक्कीसा[२]
किए राजगृह का संचालन[२], अंतर शान्ति भरो।
हो स्वामी, सुमित्र-सोमा के नन्दन, तुम ही परमातम भगवन्,
तुमको भक्तों की भक्ति पुकारती....हो स्वामी....॥
नाम आपका तारणहारा, दुख संकटहारी[२]
हम भी चरण शरण में आए[२], हम पर कृपा करो।
हो स्वामी, हमको क्यों रोता छोड़ा, बोलो क्यों मुखड़ा मोड़ा,
दुखियों की अर्जी सुनलो सारथी.... हो स्वामी....॥
चाह नहीं कुछ पर वस्तु की, तुम्हें देखकर के[२]
मुनिसुव्रत को 'सुव्रत' माँगे[२], इच्छा पूर्ण करो।
हो स्वामी, हम पर तुम नजरें कर दो, आतम से झोली भर दो,
नजरें ही नैया को उतारती.... हो स्वामी....॥

❑ ❑ ❑

श्री नमिनाथ विधान

जय बोलिए

निर्मल मूरत, सुन्दर सूरत, भव्यों के आश्रय, भक्त श्रद्धालय, कल्याणकों के अधिपति, जगत्-पूज्य लक्ष्मीपति, श्री के स्वामी, शिव अधिगामी, अन्तर्यामी, केवलज्ञानी, परमपूज्य श्री नमिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बन्धन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बन्ध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का श्रृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥

अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥
कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

निज-निधियों पर शिव-गलियों पर, अत्यन्त ठेस है कर्म शिला।
पर धूप-कुदाल लिया जिसने, निज-वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन-गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन-सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥१॥

पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥
अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥२॥

गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥३॥

ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥४॥

तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥५॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥६॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥७॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना ऐसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।
मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥८॥
इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥९॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥१०॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥११॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(इन्द्रिय संयम के विरोधी २८ विषय)

(काव्य रोला)

संयम है सुखकार, जिसे गुणशीत सताये।
आप शीत को जीत, आत्म से प्रीत लगाए॥
स्पर्शन का गुण शीत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं शीतप्रकोप-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

संयम मुक्ति-द्वार जिसे गुण उष्ण तपाए।
आप उष्ण को जीत, शुद्ध आतम प्रकटाए॥
स्पर्शन का गुण उष्ण, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उष्णप्रकोप-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

संयम गुण भण्डार, जिसे गुण रूक्ष रुलाए।
आप रूक्ष को जीत, रूप चिदातम पाए॥
स्पर्शन का गुण रूक्ष, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं रुक्षस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

संयम दृढ संकल्प, जिसे गुण स्निग्ध नशाए।
आप स्निग्ध को जीत, निराकुलता सुख पाए॥
स्पर्शन का गुण स्निग्ध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं स्निग्धस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

संयम प्रेम फुहार, जिसे कोमलता काटे।
कोमलता प्रभु जीत, कर्म की कड़ियाँ काटे॥
स्पर्शन का गुण नर्म, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं नर्मस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

संयम भरे हिलोर, जिसे कठोरता बाँधे।
कठोरता प्रभु जीत, आत्म कंचन सी साधे॥
स्पर्शन का गुण सख्त, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कठोरस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

संयम है अनमोल, जिसे गुण हल्का रोके।
हल्का गुण प्रभु जीत, धनी हो अपने होके॥
स्पर्शन का लघु भाव, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं लघुतास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

संयम है शक्ति अपार, जिसे गुण भारी लूटे।
भारी गुण प्रभु जीत, तभी भव बन्धन टूटे॥
स्पर्शन का गुरु भाव, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं गुरुतास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

संयम है रसदार, जिसे गुण खट्टा खाले।
खट्टा गुण प्रभु जीत, हुए निज आत्म हवाले॥

रसना का गुण अम्ल, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अम्लता(येसीडिटी)स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥

संयम आतम सार, जिसे गुण मीठा मारे।
मीठा गुण प्रभु जीत, रूप सर्वज्ञ छुआ रे॥
रसना का गुण मिष्ठ, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मधुरता(शुगर)मधुमेहस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१० ॥

संयम है अमरत्व, जिसे गुण कडुआ घाते।
कडुआ गुण प्रभु जीत, प्रेम-प्रसाद लुटाते॥
रसना का गुण कटुक, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कटुकस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

संयम करुणा धार, जिसे गुण हरे कसैला।
प्रभु! कसैला जीत, तभी जग में यश फैला॥
रसना स्वाद कषाय, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं कसैलास्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

संयम चिच्चमत्कार, जिसे गुण तीक्ष्ण विनाशे।
प्रभु! तीक्ष्णता जीत, धर्म का तीर्थ विकासे॥
रसना का गुण तीक्ष्ण, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं तीक्ष्ण (चरपरा) स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३ ॥

संयम आत्म सुगंध, जिसे कि सुगंध मिटाए।
सुगंध गुण प्रभु जीत, आत्म सौरभ महकाए॥
नासा-विषय सुगंध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं सुगंधस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

संयम यश का इत्र, जिसे दुर्गंध दबा दे।
ईश! जीत दुर्गंध, शरण में रखो दया दे॥
नासा-गुण दुर्गंध, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्धस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

संयम निज श्रृंगार, जिसे रंग काला ढाँके।
काला रंग प्रभु जीत, विश्व की सीमा लाँघे॥
चक्षु गुण रंग श्याम, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्यामवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

संयम है निर्ग्रन्थ, जिसे रंग नीला निगले।
नीला रंग प्रभु जीत, सभी से आगे निकले॥
चक्षु गुण रंग नील, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं नीलवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

संयम निज संस्कार, जिसे रंग पीला पटके।
पीला रंग प्रभु जीत, वसे दुनियाँ से हट के॥
चक्षु गुण रंग पीत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पीतवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

संयम सुन्दर रूप, जिसे रंग लाल लजाए।
लाल रंग प्रभु जीत, आत्म का नगर वसाए॥
चक्षु गुण रंग लाल, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१९॥

संयम निज आकर्ष, जिसे रंग श्वेत सड़ाए।
श्वेत रंग प्रभु जीत, मोक्ष तक आत्म चढ़ाए॥
चक्षु गुण रंग श्वेत, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

संयम निज सुर ताल, जिसे 'सा'-षड्ज सुखाए।
'सा' सुर को प्रभु जीत, आत्म संगीत सुहाये॥
कर्ण-विषय सा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं षड्ज-सा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

संयम आतम साज, जिसे 'रे' ऋषभ रिसाए।
'रे' सुर को प्रभु जीत, स्वरूपी साधन पाए॥
कर्ण-विषय रे-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं ऋषभ-रे-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

संयम अक्षर माल, जिसे गांधार गँवाए।
'गा' सुर को प्रभु जीत, गुणी-गरिमा प्रकटाए॥
कर्ण-विषय गा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं गान्धार-गा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

संयम महिमावंत, जिसे 'मा' मध्यम मोहे।
'मा' सुर को प्रभु जीत, लोक के सिर पर सोहे॥
कर्ण-विषय मा-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मध्यम-मा-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

संयम परम पवित्र, जिसे 'प' पंचम पीटे।
'प' सुर को प्रभु जीत, पुण्य के मारो छींटे॥
कर्ण-विषय प-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पंचम-प-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

संयम पावन धर्म, जिसे 'ध' धैवत धौंके।
'ध' सुर को प्रभु जीत, मसाले निज के छौंके॥

कर्ण-विषय ध-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं धैवत-ध-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

संयम सुख निर्वाण, जिसे नि-निषाद निचोड़े।
नि-सुर को प्रभु जीत, नाम तक जग का छोड़े॥
कर्ण-विषय नि-शब्द, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं निषाद-नि-स्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

संयम सौख्य अपार, जिसे मन मोर मरोड़े।
मन का मत्त मयूर, जीत निज नाता जोड़े॥
मन के विषय समस्त, विजय हम करें जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं मन-स्वभावविभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

पूर्णार्घ्य

यह संसार असार, असंयम दुख ही देता।
जो दुख का विष वृक्ष, काटने संयम लेता॥
ले तप त्याग कुठार, पाप-वन काट गिराये।
पाए सुख साम्राज्य, आत्म का वैभव पाए॥

करके यही विचार, तजे जग-इन्द्री नाते।
वीतराग नमिनाथ, बने सर्वोच्च कहाते॥
तुम्हें भेंट के अर्घ्य, आप सम होएँ जयोऽस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इन्द्रिय जय की साधना, करती आत्म विभोर।
अतः प्रभु नमिनाथ जी, थामो भक्त की डोर ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति-इन्द्रियविषयस्वभाव-बाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

हृदय कमल में भक्त जो, धारें प्रभु का नाम।
उसे मुक्ति नमिनाथ दें, जिनको विनत प्रणाम॥
विश्व सुखों की बात क्या, मिले स्वयं निर्वाण।
उसी भाव से गुण कहें, यही भक्त कल्याण॥

(वीर/पंवारा/आल्हा/मात्रिकसवैया)

जय-जय-जय नमिनाथ जिनेश्वर, कितना सुन्दर तेरा नाम।
नाम आपका इतना सुन्दर, कितना दर्शन लगे ललाम॥
दर्शन इतना सुन्दर है तो, कितना सुन्दर होगा धाम।
धाम प्राप्त कर कौन चाहता, इससे दूर वसाना ग्राम॥१॥
बने आपसे मन यह मंदिर, हर्षित हुए हृदय के हाल।
देह बना देहालय जैसा, हँसे होंठ खुश होते गाल॥
गद्‌गद् हुई गात्र की गरिमा, जन्म समझते हम तो धन्य।
फिर भी क्यों कल्याण हुआ ना, यही सोचकर हम हैं खिन्न॥२॥
इसका कारण एक ही लगता, बने इंद्रियों के हम दास।
सब कुछ दुख तो सहन करें पर, धार सकें ना हम संन्यास॥
स्पर्शन के ही वशीभूत हो, गज दुर्दशा सहें दिन-रात।
रसना के वश फँसे जाल में, मछली तड़फे प्राण गँवात॥३॥
पुष्प गंध से दम घुट-घुट के, भौंरे मरते आकुल होएँ।
चक्षु के वश मरें पतंगे, जल-जलकर हो व्याकुल रोएँ॥
कर्ण स्वरों के वशीभूत हो, हिरण सर्प के होते नाश।
फिर पाँचों में फँसे मनुज का, क्या होगा ना सत्यानाश?॥४॥
बहुत तरह की पहली इन्द्री, करे स्पर्श जो आठ प्रकार।
कमल एक हजार योजन का, आयु वर्ष है दशक हजार॥
खुरपा सी रसना रस चखती, मुख्य रूप से पाँच प्रकार।
शंख मिले बारह योजन का, उत्कृष्ट आयु बारह साल॥५॥
तिल-पुष्पों सी घ्राण सूँघती, सुरभी-दुरभी दो विध खास।
तीन कोस की कुम्भी मिलती, उत्कृष्ट आयु दिन उन्चास॥

चक्षु इन्द्री मसूर जैसी, देखे मुख्य पाँच रंग राह।
मिलें एक योजन के भौंरे, उत्कृष्ट आयु है छह माह॥६॥
कर्णेन्द्री जब नली सरीखी, सुनें सात सुर मुख्य प्रकार।
पूर्वकोटि वय महामत्स्य की, फैले योजन एक हजार॥
दीप स्वयंभू रमण सिन्धु में, है उत्कृष्ट आयु अवगाह।
इनमें फँसे आज तक मन को, केवल मिली पतन की राह॥७॥
हे! नमिनाथ कृपा यह कर दो, इंद्रियों के न बनें गुलाम।
हमें इन्द्रियाँ नचा न पावें, मिले आपका प्यारा धाम॥
वीतरागविज्ञान मात्र को, केवल झुके हमारा शीश।
प्राण भले ही चले जाएँ पर, धर्म न जाए दो आशीष॥८॥
हाथ आपके चरण छुएँ बस, जीभ आपके गाए गान।
नासा ले चारित्र गंध बस, नयन निहारे जिन भगवान्॥
तत्त्व देशना कान सुने बस, श्रुत स्वरूप मन करे विचार।
हृदय देह का अर्घ्य भेंटकर, नमस्कार हो आत्म सुधार॥९॥
भोग बड़े से बड़े विश्व के, भक्ति आपकी करे प्रदान।
जो निर्माण भक्त का करके, कर निर्वाह करें निर्वाण॥
इसमें सभी न सक्षम इससे तुम्हीं आत्म का दो संन्यास।
'सुव्रत' तो बस करें नमोऽस्तु, आप बुला लो अपने पास॥१०॥

(सोरठा)

काया का श्रृंगार, करना अपनी भूल थी।
तुम्हें देख नमिनाथ, काया सजना भूलती॥

हो निज का श्रृंगार, अतः रचाई अर्चना।
मिले भवोदधि पार, यही भक्त की प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं....)

॥ इति श्री नमिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

है 'बामौरकलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, प्रभु नमिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह भौम्, मार्च चार तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : गुरुदेव तुमको नमस्ते[२])

नमोऽस्तु नमोऽस्तु हे! नमिनाथ तुमको।
करें आरती दे दो आशीष हमको॥
माँ वप्पिला और राजा विजय के।
प्रभु आप नन्दन मिथिला नगर के॥
हे! आत्म दीपक, उजारो तुम सबको,
करें आरती ......॥१॥
रहे देह में किंतु बनकर विदेही।
बन्धन न भाया बँधकर रहे भी॥
अब वीतरागी, बना तो लो जग को,
करें आरती ......॥२॥
बिना राग तुमने संसार तारा।
बिना द्वेष तुमने कर्मों को मारा॥
सुन लो सुनाई जो अर्जी है तुमको,
करें आरती ......॥३॥
नहीं आप जैसा इस जग में दूजा।
कर्मों से ऊऋण होने को पूजा॥
अपनी शरण में ले लो 'सुव्रत' को,
करें आरती ......॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री नेमिनाथ विधान

जय बोलिए

करुणा के धारी, मोक्ष के विहारी, मुक्ति के निहारी, धर्माधिकारी, परम संन्यासधारी, प्राणियों के हितकारी, राज रमा राजुल के त्यागी, परम वैरागी, मुक्ति रागी, जगत् प्रसिद्ध, गिरनार से सिद्ध, परमपूज्य

श्री नेमिनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना (दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥
अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥
फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम, नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[२]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बन्धन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बन्धन टूटे।[२]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[२]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्मचक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे ॥१॥

अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥२॥

धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकरप्रकृति पाए।
समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आए॥
शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥३॥

धर्मचक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥
बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥४॥

वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाए।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाए॥
क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥५॥
नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बन्धन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो ऐसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥६॥
अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बन्धन भी फेंके॥७॥
चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे-पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥८॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥
ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥९॥
भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥१०॥
दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥
इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥११॥

ब्रह्मदत्त भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द्व-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
ऋद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥१२॥

सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥१३॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(बाईस-परिषह) (विष्णु)

तुम्हीं जिनालय तुम सिद्धालय, आतम तीरथ हो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

मिले न भोजन अल्प मिले तो, क्षुधा वेदना हो।
फिर भी अयोग्य करें न भोजन, आत्म साधना को॥
क्षुधा विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं क्षुधाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

असमय में यदि प्राण विदारक, लगे प्यास तो भी।
पिएँ न जल लेकिन जो पीते, आत्म ध्यान जल ही॥
तृषा विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं तृषाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

शीत लहर में खुली डगर में, रहें दिगम्बर जो।
फिर भी डरें न भागे ओढ़े, आतम कम्बल को॥
शीत विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं शीतजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

महा ग्रीष्म में लू-लपटों में, तालु कण्ठ सूखे।
देह-विदारक दाह सहें पर, संयम ना छूटे॥
उष्ण विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं उष्णजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

मच्छर आदिक जो दें पीड़ा, सहन करें उनको।
पर निर्वाण प्राप्ति के इच्छुक, कष्ट न दें उनको॥
दंशमशक जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दंशमशक-खटमलचींटीबिच्छूआदिकजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

यथाजात बालक के जैसा, जिनका रूप रहा।
दोष रहित निर्वाण प्राप्ति को, ब्रह्म स्वरूप कहा॥
धरें नग्नता बनें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं नग्नताजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

पंचेन्द्री के शुभ-विषयों से, जिनने मुख मोड़ा।
जीव दया के परिपालन को, अपना सुख छोड़ा॥
अरति विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अरतिजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

ब्रह्म विनाशक अगर नारियाँ, हाव-भाव कर लें।
कछुए सम मन-विकार जयकर, निज में संत रमें॥
स्त्री विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं स्त्रीबाधाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

कर-पात्री बन पग-यात्री बन, गमनागमन करें।
लेकिन कण्कड़ काँटों में भी, पीड़ा सहन करें॥
चर्या जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं चर्या-आहारबाधाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

निर्जन क्षेत्र गुफादिक में जो, आसन ध्यान करें।
भय उपसर्ग विजेता पथ से, कहाँ प्रयाण करें॥
विजय निषद्या करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं निषद्या-घुटिकाकटिआसनबाधाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

भले थके हों लेकिन विधिवत्, करवट से सोते।
ज्ञान ध्यान में लीन रहें पर, दुखी नहीं होते॥
शय्या जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं शय्या-निद्राबाधाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥११॥

कटु-वचनों को सुनकर भी जो, क्रोध नहीं करते।
तपश्चरण में तत्पर रहकर, पाप-ताप हरते॥

विजय करें आक्रोश आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं आक्रोश-क्रोधावेशजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२ ॥

अस्त्रों-शस्त्रों की पीड़ा दे, जब कोई मारें।
तो भी चंदन जैसे महकें, रत्नत्रय धारें॥
हम भी वध जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं वध-अस्त्रशस्त्रप्रहारजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

तप करके जो सूख चुके पर, दीन-हीन ना हों।
पथ न भटकें, कुछ नहिं माँगे, प्राण कण्ठगत हों॥
विजय याचना करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं याचनाजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१४॥

बहुत दिनों तक मिले न भिक्षा, तो भी दुख न करें।
करें तपस्या हरें समस्या, आतम मनन करें॥
अलाभ जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अलाभजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

कर्मोदय से रोग जन्म लें, फिर भी नहीं दुखी।
प्रतीकार तो कर सकते पर, निज में रहे सुखी॥
रोग विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं रोगजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

कंकड़ काँटे चुभने पर भी, मिलें चेतना से।
विजय निषद्या चर्या शय्या, करें साधना से॥
तृणस्पर्श जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श-शूलकण्टकादिजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

स्नान त्याग है अतः धूल से हुई खाज खुजली।
वो चारित्र नीर से धोकर, आतम हो उजली॥
हम भी मल जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मलजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

ज्ञानी ध्यानी बनने पर भी, मिलता आदर ना।
तो भी खेद-खिन्न ना हों यदि, मिले बड़प्पन ना॥
जय सत्कार-पुरस्कार करें हम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं सत्कारपुरस्कार-मानापमानजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥१९॥

मैं अध्यात्म निपुण श्रुत ज्ञाता, मैं रवि, जग जुगनूँ।
यों विज्ञान गर्व को तजकर, मैं जिन-दास बनूँ॥
प्रज्ञा जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा-बुद्धिविकारजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

ज्ञान न हो तो अपमानों के, कर्कश वचन सहें।
किन्तु तपस्या भंग न करके, ज्ञानानन्द चखें॥
करें विजय अज्ञान आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अज्ञानजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

मैं वैरागी त्यागी हूँ पर, चमत्कार नहिं हों।
अतः निरर्थक व्रत पालन हैं, ऐसे भाव न हों॥
विजय अदर्शन करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं अदर्शन-मतमतान्तरजन्य-पीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

(चार - भावना) (लय - माता तू दया....)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥

प्रभु! अपने-परायों में, नित मैत्री भाव रहे।
नहिं वैर भाव पनपे, आपस में प्रेम रहे॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं मैत्री-सुखशान्तिविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

गुणियों को देखें तो, अनुराग भक्ति उमड़े।
जिया पुलक-पुलक जाए, निज-आत्म प्रमोद बड़े॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं प्रमोद-भक्तिअनुरागभावविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

जो दीन-हीन दुखिया, हो दया-भाव उन पर।
उनका दुख मिट जावे, तो करुणा हो निज पर॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं कारुण्य-दयाभावविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२५॥

जो विनय नहीं करते, उनमें माध्यस्थ रहें।
नहिं पक्षपात होवे, निज आतम स्वस्थ रखें॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं माध्यस्थ-रागद्वेषपक्षपातभावविनाशनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२६॥

(चार-आराधना)

बहिरंग छहों कारण, दें सम्यग्दर्शन जो।
व्यवहार और निश्चय, दर्शन-आराधन हो॥
वह दोष रहित पाएँ, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनाराधनाप्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२७॥

श्रुत बारह अंगों का, जो सम्यग्ज्ञान रहा।
वह ज्ञानाराधन जो, तीर्थंकर कथित रहा॥

वह ज्ञान पिण्ड पाएँ, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाराधनाप्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२८॥

मुनि तेरह विध वाला, सम्यक्चारित्र धरें।
उन मुनि का आराधन, निज आत्म पवित्र करें॥
चारित्र धरें हम भी, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं चारित्राराधनाप्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२९॥

जो मूलगुणों के साथ, उत्तरगुण तप करते।
उन महा तपस्वी का, हम आराधन करते॥
हम कर्म हरें तप से, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं तपाराधनाप्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३०॥

पूर्णार्घ्य

हम जल बन जाएँ तो, तुम निर्मलता कर दो।
हम चंदन बन जाएँ, तुम शीतलता भर दो॥
हम बनें अगर अक्षत, तुम अपना बना लेना।
हम पुष्प बनें तो तुम, हमको भी खिला देना॥
नैवेद्य बनें हम तो, दो आत्म स्वाद हमको।
जब दीप बनें हम तो, तुम ज्योति बनो चमको॥
यदि धूप बनें हम तो, तुम खुशबू बन महको।
जब फल बन जाएँ हम, दो चिदानन्द रस को॥
यह अर्घ्य चढ़ा के हम, इच्छाएँ व्यक्त करें।
प्रभु कृपा करो हम भी, प्रभु में अनुरक्त रहें॥
हम भी गिरिनार चढ़ें, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

(दोहा)

आतम साधक सह रहे, परिषह अरु उपसर्ग।
नेमि प्रभु दो शक्तियाँ, करने कायोत्सर्ग॥

ॐ ह्रीं समस्तविध-उपसर्गपरिषहजन्य-पीड़ानिवारणार्थं आत्मभावनाविकार्थं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

ऋषि मुनि की सेना रही, नायक प्रभु नेमीश।
कर्म युद्ध जीता जिन्हें, हम भी टेकें शीश॥
जिनके चरण सरोज में, भक्त भ्रमर का शोर।
हमें नेमिप्रभु ले चलो, गिरिनारी की ओर॥

(त्रिभंगी)

हे! नेमि जिनेशा, हे! परमेशा, हे! सर्वेशा दया करो।
तुम जग के नायक, सब के पालक, आतम ज्ञायक कृपा करो॥
तुम संकटहारी, अतिशयकारी, ब्रह्म-विहारी स्वामी हो।
हे! सब-उपकारी, तुम्हें हमारी, बारी-बारी नमामि हो॥१॥
जब जन्म लिए तो, स्वप्न दिए तो, पर्व हुए तो सभी खुशी।
माँ-पिता खुशी, पर लोग खुशी, पर भक्त खुशी पर आप दुखी॥
क्या आप विचारे? कर्म हमारे, भर्म हमारे सुखनाशी।
तुम राज निवासी, बन संन्यासी, आत्म प्रकाशी निजवासी॥२॥
तुम परिषह सहकर, निज में रहकर, पर को तजकर पूज्य बने।
हम तुमको भजकर, प्रभु गुण गाकर, प्रभु में रमकर धन्य बने॥
जब मंदिर आते, विघ्न सताते, संकट आते हमको भी।
प्रभु! बहुत कष्ट क्यों, आप रुष्ट क्यों, किन्तु इष्ट हो हमको भी॥३॥
उपसर्ग भले अब, कष्ट भले अब, भ्रष्ट भले अब हो जाएँ।
पर धर्म न छूटे, भाग्य न फूटे, शपथ न टूटे वर पाएँ॥
नित मैत्री होवे, प्रमोद होवे, करुणा होवे क्रम-क्रम में।
माध्यस्थ सदा हों, व्यस्त सदा हों, मस्त सदा हों आतम में॥४॥
छह कारण पाकर, लब्धि प्राप्त कर, सम्यग्दर्शन निर्मल हो।
सुन के गुरु-वाणी, गुन प्रभु वाणी, चुन कल्याणी मंजिल हो॥

चारित्र सँभाले, कर्म नशा लें, मोक्ष हि पालें धर्मात्मा।
है यही कामना, भक्त भावना, करे साधना हर आत्मा ॥५॥
है जग का मेला, धर्म अकेला, प्रभु का चेला धर न सके।
प्रभु अतः साथ दो, हाथ पकड़ लो, बाल भी बाँका हो न सके॥
मत आप भुलाना, पास बुलाना, पाप छुड़ाना ये इच्छा।
या तो खुद आओ, हमें बुलाओ, किन्तु दिलाओ जिनदीक्षा ॥६॥
हो आप दयालु, हम श्रद्धालु, हृदय हमारे प्यार भरो।
ये भक्त सुदामा, के मुट्ठी भर, चावल तो स्वीकार करो॥
तन-मन-धन अर्पण, भक्त समर्पण, 'सुव्रत' पर उपकार करो।
कुछ दो न दो पर, वियोग न देना, अर्जी यह मंजूर करो ॥७॥

(सोरठा)

दया धर्म का सार, बाकी सब विस्तार हैं।
जिसका कर शृंगार, नेमि गए भव पार हैं॥
आत्म दया का बन्ध, तत्त्वज्ञान भी दान दो।
नेमि प्रभु अरिहन्त, तुम को सदा प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री नेमिनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

नगर 'लिधौरा' है जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं लेख पूरा हुआ, नेमिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, अप्रैल सत्रह तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : लेके पिछी कमण्डल....)

प्यारे जिनवर नेमिनाथ, तुम हो अपने चारों धाम।[२]
करके आरति जोड़े हाथ, तुमको बारम्बार प्रणाम॥[२]
तुमको बारम्बार.....।[२] प्यारे जिनवर .....।
समुद्रविजय के राज दुलारे, शिवदेवी के लाल।
मुक्ति वधू अपनाने छोड़ा, शौर्यपुरी जग जाल॥[२]
दूल्हा तजे वधू बारात - तुमको बारम्बार प्रणाम....॥१॥

घर संसार वसाना क्या जब, सब जाता है छूट।
दिन के हों या स्वप्न रात के, सब जाते हैं टूट॥[२]
इससे बने विरागी आप - तुमको बारम्बार प्रणाम....॥२॥

बाल ब्रह्मचारी जा पहुँचे, नेमिनाथ गिरिनार।
संत बने तो धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकार॥[२]
हो गई मुक्तिवधू नतमाथ - तुमको बारम्बार प्रणाम....॥३॥

नाम आपका तारणहारा, साँसों की है डोर।
छोड़ न देना थाम हि लेना, चलो मोक्ष की ओर॥
'सुव्रत' की रख लो ये बात-तुमको बारम्बार प्रणाम....॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री पार्श्वनाथ विधान

जय बोलिए

खलु चिच्चदेव अरिहन्तदेव, देवों के देव, देवाधिदेव, उपसर्गों के विजेता, मोक्षमार्ग के नेता, परम धैर्यधारी, चैतन्य चमत्कारी, चिंतामणि, परम पारसमणि, अंतरिक्ष निवासी, घट-घट के वासी, परम यशवान्, साक्षात् मूर्तिमान्, निराकुल चित्त, परम पवित्र, परमपूज्य

श्री पार्श्वनाथ भगवान् की जय ॥

स्थापना

(दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामई, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पाञ्जलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥

जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

स्वर्ग त्यागकर चौदहवाँ जब, दूज कृष्ण वैशाख रही।
ब्राह्मी जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस शुभ तिथि में, नगर बनारस जन्म लिया।
विश्वसेन राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस को सारा, त्याग परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥

अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र कृष्ण चतुर्थी प्रातः में, घाति कर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

श्रावण शुक्ल सप्तमी प्रातः, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

(सुविद्या)

बड़े कमठ मरुभूति अनुज थे, सगे भ्रात विपरीत।
एक पाप विष दुख सा दूजा, धर्मामृत की रीत॥
धर्मनीति का ज्ञाता छोटा, बड़ा दुष्ट भू-भार।
नारीवश हो शत्रु कमठ ने, दिया अनुज को मार ॥१॥
आठ-आठ भव कमठ जीव ने, गहन किया उपसर्ग।
भव-भव में मरुभूति जीव ने, सहन किया उपसर्ग॥
जब राजा आनन्द नाम का, जीव धरा वैराग्य।
मुनि बन तपकर चउ आराधन, किया लिया सौभाग्य॥२॥
सोलहकारण भाय भावना, तपश्चरण कर घोर।
नामकर्म तीर्थंकर बाँधा, चले मुक्ति की ओर॥

इन्द्र स्वर्ग में बने यहाँ पर, पारस राजकुमार।
शतायु पारस का तन हरियल, उग्रवंश भर्तार ॥३॥
पारस के नाना तापस थे, पंच-अग्नि तप-भूत।
यौवन क्रीड़ा में पारस जी, समझाये शिव-दूत॥
काष्ट कटी तो सर्प-सर्पिणी, कटे हुए दो भाग।
विगत भवों को जान पार्श्व ने, धार लिया वैराग्य॥४॥
बने निरम्बर ज्ञानी ध्यानी, तप रत मुनि विख्यात।
कमठ जीव तब शम्बर सुर ने, दिए कष्ट कुख्यात॥
हुए न चंचल पारस स्वामी, सहन किया उत्पात।
सहपत्नीक् धरणेन्द्र सर्प बन, दूर किया आघात॥५॥
घातिकर्म हर बने केवली, अनन्त-गुण भर्त्तार।
उन्हें केतु ग्रह में लोगों ने, बाँधे दिन रविवार॥
जैसे माँ के आगे बालक, निजी योग्यता भूल।
योग्य-अयोग्य माँगता तो माँ, देती नहीं समूल॥६॥
नाथ! हमारे मात-पिता तुम, आप हि पालनहार।
दुख उपसर्ग आदि सहने को, दो पारसमणि हार॥
जिससे हम भी ऋद्धि-सिद्धि से, हो जाएँ परिपूर्ण।
'सुव्रत' धरकर कर्म विजेता, बनें सिद्ध सम्पूर्ण॥७॥

(दोहा)

पारसमणि बस लोह को, स्वर्ण करे बहुमोल।
जिन पारसमणि तो करे, सिद्ध सौख्य अनमोल॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

भयहर जिनवर गीता

भयहर संथवो/नमिऊण स्तोत्रं

नमिऊण पणय-सुर-गण-चूड़ामणि-किरण-रंजिअं मुणिणो।
चलण - जुअलं - महाभय - पणासणं संथवं वुच्छं॥

(पद्यानुवाद - ज्ञानोदय)

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

(हाकलिका-१४ मात्रिक)

विनयवान सुर-वर्ग सभी,मणिमय धारें मुकुट सभी।
उज्ज्वल उनकी मणि किरणा, करें प्रकाशित प्रभु चरणा॥
देव पूज्य प्रभु चरण युगल, पारस प्रभु के चरण कमल।
जिन्हें नमन कर हम ध्याएँ, थवन महा-भयहर गाएँ॥

(ज्ञानोदय)

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं महाभयातङ्कविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

सडिय-कर-चरण-णह-मुह-णिबुड्डुणासा विवण्ण-लायण्णा।
कुट्ठ - महारोगाणल - फुलिंग-णिद्दड्ढ - सव्वंगा॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥
जिनके हाथ पैर प्यारे, नख मुख सड़े मनोहारे।
तोता-नासा पूर्ण धँसी, सुन्दरता खो हुई हँसी॥
कुष्ठ-रोग की महा अनल, अंगारे दहके पल-पल।
उससे जो सर्वांग जले, पार्श्व कृपा से हुए भले॥
मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं कुष्ठमहारोगानलविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

ते तुह चलणाराहण - सलिलंजलि-सेय-वड्ढियच्छाया।
वण-दण-दड्ढागिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छिं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

कुष्ठआदि से वे जल-जल, प्रभुपद पूजन का ले जल।
चुल्लू भर सिंचन करके, कान्तिमान हो अति चमके॥
जलकर ज्यों दावानल से, वृक्ष भयंकर हो वन के।
हरे-भरे हों वर्षा से, पार्श्व-कृपा जल वर्षा दे॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं रोगादिक मानसिकसंताप विनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३ ॥

दुव्वाय खुभियजल-णिहि उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे।
संभंत भय विसंठुल णिज्जामय-मुक्क-वावारे ॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

दुष्ट पवन से क्षुभित हुआ, तूफानों से कुपित हुआ।
उत्कट लहरों से सागर, भीषण नाद करे थर-थर॥
जिसे देख नाविक काँपें, क्षुब्ध सभय हड़-बड़ नाँचें।
नाविक छोड़े काम जहाँ, पार्श्वनाथ ले थाम वहाँ॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं जलोदर आदिकसमुद्रभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४ ॥

अविदलिअ-जाणवत्ता खणेण पावंति इच्छिअं कूलं।
पास जिण-चलण-जुअलं णिच्चं चिअ जे णमंतिणरा॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

पार्श्वनाथ के चरण युगल, जो मानव नमते हर-पल।
यान उन्हीं के जल-घट में, फटें फँसे ना संकट में॥
पार्श्वनाथ के भक्त सभी, होते नहीं असक्त कभी।
पल-भर में इच्छित तट को,पा जावें वे शिव-घट को॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलप्रदाता चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

खर-पवणुद्धुय-वण-दव-जालावलिमिलियसयल-दुम-गहणे।
डज्झंत-मुद्ध-मय-वहु-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

तीव्र पवन मालाओं से, बढ़ी हुई ज्वालाओं से।
दावानल जो धधक रही, वन-पथ दुर्गम करत वही॥
वहाँ हिरणियाँ जो भोली, जलकर बोलें जो बोली।
गूँजे महा भयंकर वन, पार्श्वनाथ वह करें शमन॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं दावानलभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

जग गुरुणो कम-जुअलं णिव्वाविह-सयल-तिहुअणाभोअं।
जे संभरति मणुआण कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

त्रय लोकों का नभ जल थल, करें क्षेत्र जो सब शीतल।
पूज्य जगत्-गुरु वे ऐसे, उनको भूलें हम कैसे?
पार्श्व जगत्-गुरु कहलाते, उनके पद-युग जो ध्याते।
नमस्कार जो करें उन्हें, कभी अग्नि भय नहीं उन्हें॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं समस्तविध अग्निभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७ ॥

विलसंत - भोग - भीसण-फुरिआरुण-णयण-तरल - जीहालं।
उग्ग-भुअंगं नव-जलय-सत्थहं भीसणायारं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

फण फैलाए खड़े हुए, रक्त नेत्र जो बड़े किए।
भीषण-भीषण जो चमके, चंचल जिह्वा भी लपके॥
नव बादल दल से काले, उग्र भयंकर छवि वाले।
नागराज जो क्रुद्ध हुए, पार्श्व नाम सुन क्षुद्र हुए॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं सर्पभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

मण्णंति कीड-सरिसं दूर-परिच्छुड्ड-विसम-विस-वेगा।
तुह णामाक्खर-फुड - सिद्धमंत-गुरुआ णरा लोये॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

पार्श्वनाथ को जो ध्याता, जग में वो ही विख्याता।
नामाक्षर वो पार्श्व जपें, सिद्ध मंत्र ही उसे कहें॥
वेग विषम विष आगों को, उग्र दुष्ट उन नागों को।
फेंके क्षुद्र कीट कह के, पारस प्रभु को जो जपते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंत्र चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूल-सद्द-भीमासु।
भय - विहुर - वुण्ण - कायर-उल्लूरिय-पहिय-सत्थासु॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

क्रूर भील तस्कर राशी, शोर मचाएँ वनवासी।
जहाँ दहाड़ें बाघ बड़े, वन में ज्यों यमराज खड़े॥
वहाँ लुटे मुँह लटकाये, कातरपंथी भय-खाए।
पार्श्वनाथ ऐसे वन में, ध्याते भक्त सदा मन में॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं दुष्टक्रूरकृतभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

अविलुत्त-विहव सारा तुह णाह! पणाममत्त-वावारा।
ववगय-विग्घा सिग्घं पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

भक्त पार्श्व प्रभु के हैं जो, लुट सकते क्या वन में वो।
लुट न सके वैभव उनका, दूर विघ्न हो भय उनका॥
बस प्रणाम तुमको करके, मन वांछित फल वो वरते।
इच्छित धाम वही पाते, पार्श्वनाथ को जो ध्याते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं लूटमारि चोर भयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

पज्जलि आणल-णयणं दूर वियारिअ-मुहंमहाकायं।
णह-कुलिस-धाय-विअलिअ-गइंद कुंभत्थला भोअं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

अंगारे धधकें जैसे, जिनके लाल नयन ऐसे।
मुख की तीव्र दहाड़ों से, नख के वज्र प्रहारों से॥
महा गजों के कुंभस्थल, क्रोधित सिंह करते घायल।
ऐसे सिंह से क्या डरते?, पार्श्वनाथ को जो भजते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं सिंहभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१२॥

पणय-ससंभम-पत्थिव-णह मणि माणिक्क-पडिअ पडिमस्स।
तुह-वयण-पहरण धरा सीहं कुद्धंपि ण गणंति॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

प्रभु के नख चमकें ऐसे, मणि माणिक्य दिव्य जैसे।
राजाओं के तन जिनको, सविनय झुकते हैं उनको॥
पार्श्व वचन के आयुध को,भक्ति सहित उर धारक जो।
कुपित सिंह को गिने नगण्य, प्रभु कृपा से जो हैं धन्य॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं शस्त्रास्त्रभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

ससि-धवल-दंत-मुसलं दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं।
महुपिंग-णयण-जुअलं ससलिल-णव-जल-हरायारं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

दाँत मूसलों जैसे हैं,चमकित धवल चाँद से हैं।
दीर्घ सूँड़ की फटकारें, हर्ष बढ़ाएँ चिंघाड़ें॥
मधु सम पीत नयन वाले, नये मेघ जैसे काले।
महागजों का झुण्ड निकट, पार्श्वभक्त को क्या संकट॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्र उपद्रवकृतभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४ ॥

भीमं महागइंदं अच्चासण्णंपि ते ण विगणंति।
जे तुम्ह चलण-जुअलं मुणिवइ! तुंगं समल्लीणा॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

हे! मुनियों के जिन ईश्वर, जो हैं तुमरे ही अनुचर।
श्रेष्ठ चरण तुमरे पाके, सम्यक्-रत हैं गुण गाके॥
कुपित समद गजराजों को, आगे पा यमराजों को।
कुछ भी नहिं गिनते वे जन, पार्श्व करें जिनका रक्षण॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं प्रताड़नाभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

समरम्मि तिक्ख खग्गा-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबन्धे।
कुंत-विणिभिण्ण-करि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरम्मि॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

जहाँ तेज तलवारों ने, मस्तक काटे वारों ने।
कंपित धड़ बिन सिर वाले, जिनको फाड़ गए भाले॥
कटे शीश गज-तन फाड़े, जहाँ युद्ध में चिंघाड़े।
वहाँ शत्रु उन से डरते, पार्श्व नाम जो उर धरते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं युद्धभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

णिज्जिअ-दप्पुद्धर-रिउणरिंद-णिवहा भडा जसं धवलं।
पावंति पाव पसमिण-पास-जिण! तुहप्प भावेण॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

हे अघ शामक पारस जिन!, नृप जो तुमको करें नमन।
तो प्रभाव तुमरा पा के, सब युद्धों में जय पाते॥
शत्रु वर्ग के जो राजा, गर्वोन्नत से सिर ताजा।
उन्हें जीत भट यश पाते, पार्श्वनाथ को जो ध्याते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं अपयशभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

रोग-जल-जलण विसहर चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं।
पास-जिण-णाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

आग रोग या पानी का, साँप चोर रिपु-प्राणी का।
युद्ध शेर गज सम्बन्धी, जितने भय दुख अनुबन्धी॥
पार्श्व नाम संकीर्त्तन से, सभी शान्त जिन अर्चन से।
भक्त पार्श्व जिनवर ध्या के, निर्भय बनके सुख पाते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वरोगादिभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१८॥

एवं महाभय-हरं पास-जिणिंदस्स-संथुवमुआरं।
भविअ-जणाणंदयरं कल्लाण-परंपर-णिहाणं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

इस विध संस्तव ये न्यारा, पार्श्वनाथ का सुखकारा।
महा-महाभय-दुखहारी, इसको जप ले संसारी॥
भव्य जनों को सुखकारी, क्रमिक मोक्ष का भण्डारी।
तभी भक्त इसको पढ़ के, भयहर निर्भय हो बढ़ते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं समस्तविधसंसारभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९ ॥

रायभय-जक्ख-रक्खस-कुसुमणि दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु।
संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

राज यक्ष राक्षस का भय, बुरे शकुन सपनों का भय।
ग्रह नक्षत्र जन्य पीड़ा, पथ-उपसर्ग हरे धीरा॥
तो इस उत्तम संस्तव को, सुबह-शाम-निशि में सुन लो।
या जो पढ़े पार्श्व गाथा, भयहर पाते सुख-साता॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं राजग्रह भूत पिशाच स्वप्नादि सकलभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

जो पढई जो अ णिसुणइ ताणं कइणो य माणतुंगस्स।
पासो पावं पसमेउ सयल भुवणच्चिया चलणो॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

पार्श्वनाथ की यह गीता, पढ़ सुन ध्याकर जो जीता।
उसके पाप गलित होवें, 'मानतुंग' भी क्यों रोवें॥
हे जग पूज्य! चरित वाले, पार्श्वनाथ जग रखवाले।
मानतुंग का अघ हर लो, विश्वशान्ति को तुम वर दो॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं समस्तविधपीड़ाभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि झाणाउ जो ण संचलिओ।
सुर-णर किण्णर-जुवईहिं संथुओ जयउ पास-जिणो॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

कमठ जीव जो असुर बना, कर डाला उपसर्ग घना।
पार्श्वनाथ खा अघ-कोड़े, विचलित नहीं हुए थोड़े॥
सुर नर किन्नर किन्नरियाँ, पूजें प्रभु की पद लड़ियाँ।
ऐसे प्रभु जयवन्त रहें, पारस प्रभु जयवंत रहें॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं समस्तविध उपसर्गभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

एअस्स मज्झयारे अट्ठारस-अक्खरेहि जो मंतो।
जो जाणइ सो झायइ परम-पयत्थं फुडं पासं॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

इस संस्तव में जो प्यारा, महामंत्र खोजे न्यारा।
बना अठारह अक्षर का, पता बताए जिनवर का॥
जो जाने वह सुख का घर, परम तत्त्व पारस जिनवर।
पार्श्वनाथ को भी ध्या के, पदस्थ ध्यान का सुख पाते॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं समस्तकुमंत्रकृत उपद्रवभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३ ॥

पासह-समरण जो कुणइ संतुट्ठे हियएण।
अट्ठुत्तर-सय वाहि भय णासइ तस्स दूरेण (खणेण)॥

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥

जो संतुष्ट हृदय द्वारा, सविनय त्रय योगों द्वारा।
हँसी-खुशी से पारस जिन, सुमरण करता है हर क्षण॥
रोग व्याधियाँ कष्ट सभी, नशे एक सौ आठ तभी।
पारस का जो ध्यान करे, 'सुव्रत' बन भगवान् अरे॥

मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
भयातंक बिन विश्वशान्ति हो, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतव्याधिभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४ ॥

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

सब उलझन सुलझन में बदलें, दुर्लभ काम सुलभ होते।
पारस प्रभु का नाम मात्र सुन, विघ्न कष्ट फक-फक रोते॥
आज आपके गुण गाकर हम, धन्य-धन्य हो गए अहा।
मरण समय प्रभु नाम न भूलें, यही मिले वरदान खरा॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ के दर्श से, दिखता भव का तीर।
अर्घ्य चढ़ाएँ आज हम, समझें निज तकदीर॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कष्ट उपद्रव भय हरें, और दिए सुखदान।
ऐसे पार्श्व जिनेश का, हम करते गुणगान॥

(सुविद्या)

जय-जय पारस! जय-जय पारस!जय-जय पारस नाथ!
भक्त तुम्हारी गीता गाकर, सदा झुकाएँ माथ॥
आखिर गुण हम क्यों ना गाएँ, क्यों ना टेकें शीश।
तु ही ने तो हमें सँभाला, देकर पद-आशीष॥१॥
पार्श्वनाथ का हम ना लेते, अगर भक्ति से नाम।
तो हम भी भय बाधाओं में, क्या कर पाते काम॥
बड़ी कृपा है, खूब दया है, हम पर तुमरी देव!।
नाम मात्र सब काम बना दे, मिलता वर स्वयमेव॥२॥
जिसको तेरा वर मिल जाए, उसका अलग कमाल।
धरती अम्बर उससे रोशन, थामे धरम मशाल॥
हमको लगता पार्श्वनाथ को, ना समझा संसार।
तभी विश्व में आगजनी या, मचती हा-हा कार॥३॥

जरा सोचिये आज हमारे, तन मन का क्या हाल?
अगर पूजते पार्श्वनाथ को, तो ना मिले मलाल॥
विनय सहित सब प्राणी होते, ना पाते अघजाल।
नहीं रोग अंगारे धधकें, जहाँ कृपा प्रभु-माल॥४॥
जलयात्रा मंगलमय होती, क्या तूफानी पीर।
सागर तट के साथ मिलेगा, भव-सागर का तीर॥
बियावान वन की ज्वालाएँ, खुद हो जातीं शान्त।
नहीं जलेंगे भटके प्राणी, भटकन हुई प्रशान्त॥५॥
महाभयंकर गूँजें वन की, बने सरस संगीत।
आग-नाग का भय ना रहता, वैर त्याग हो प्रीत॥
तीन लोक में शान्ति सुधा की, होती नित बरसात।
क्रुद्ध जीव भी क्रोध त्यागकर, मैत्रीमय हो साथ॥६॥
पार्श्वनाथ का सिद्धमंत्र जो, जपता जग विख्यात।
क्रूर बड़ी से बड़ी आपदा, यूँ ही हुई समाप्त॥
कुपित शेर रक्षक बन जाते, मित्र बनें गजराज।
युद्ध त्याग दें शत्रु हमारे, साथी हों यमराज॥७॥
नाथ! आपके संकीर्तन से, विश्व बने परिवार।
रोग शोक को क्या हरना फिर, मिले मुफ्त सुख हार॥
लेकिन दुनियाँ भूल रही है, पारस प्रभु का नाम।
पता नहीं क्या धर्म बिना हो, दुनियाँ का अंजाम॥८॥
अपनी केवल यही प्रार्थना, प्रभु से बारम्बार।
पार्श्वनाथ के उपसर्गों का, समझ सके जग सार॥
दयाधर्म मय प्रेम-भावमय, हो जीवन उपहार।
विश्वशान्ति हो दूर भ्रांति हो,'सुव्रत' की सरकार॥९॥

बदल-बदल कर गीत हम, प्रभु से करने प्रीत।
पार्श्वनाथ जिन मीत से, हो हम सब की जीत॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा....)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं.....)

॥ इति भयहर श्री पार्श्वनाथविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

(दोहा)

रामटेक भू धाम में, शान्तिनाथ पद-खास।
विद्यागुरु आचार्य का, ससंघ वर्षावास॥
दो हजार सन आठ में, दशम माह गुरुवार।
जहाँ रही तारीख दो, लिखा भक्ति उपहार॥
भयहर पार्श्व विधान से, मिले शान्ति भण्डार।
'मुनिसुव्रत' ने गीत गा, पाया पारस द्वार॥
विद्यागुरु के शिष्य हैं, सुव्रतसागर एक।
सिद्धोदय प्रभु पार्श्व को, जो भजते सिर टेक॥
भक्ति भाव से कर दिया, पार्श्वनाथ गुणगान।
कमीं हमारी छोड़कर, शुद्ध पढ़े धीमान्॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : टन टना टन......)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥
भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[२], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें ....॥१॥
तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आए हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[२], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें ....॥२॥
अश्वसेन वामा के नन्दन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[२], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥३॥
मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[२], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥४॥

❑ ❑ ❑

श्री महावीर विधान

जय बोलिए

वर्तमान शासन नायक, भक्त हृदय के मूलनायक, अन्तर-बाह्य उजाले, दीपावली पर्व देने वाले, वीरों के वीर, अतिवीर, वर्धमान, सन्मति, महावीर !, त्रिशला दुलारे, सिद्धार्थ के प्यारे, सबकी आँखों के तारे, पावापुर से मोक्ष पधारे, परमपूज्य श्री महावीर भगवान् की जय ॥

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर,
शासननायक-जय महावीर।

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
"जियो और जीने दो" सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥
जय महावीर-जय महावीर!, शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पाञ्जलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल, अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(विष्णु)

बार-बार नर जीवन पा के, व्यर्थ गवाँ डाले।
हे प्राणी! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले॥
भाव भक्ति से गद्गद् होकर, प्रभु से नेह लगा।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा॥१॥
जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इन्द्र हुआ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ॥
वीर! ज्ञान से जान मेरु को, दबा दिए थोड़े।
रखा इन्द्र ने 'वीर' नाम तब, पूजन को दौड़े॥२॥
जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके॥
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुई।
नाम आपका 'वर्द्धमान' तब, रखकर खुशी हुई॥३॥
संजय विजय मुनि ऋद्धिधारी, जिज्ञासा लाए।
तत्त्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाए॥
और खुशी से नाम आपका, 'सन्मति' रख डाले।
धन्य! धन्य! हे त्रिशला नन्दन!, सबके रखवाले॥४॥
खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे।
संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे॥
सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर।
'महावीर' तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर॥५॥
हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा।
इसे वीर! वश करने निकले, माना नहीं कहा॥
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला।
तभी नाम 'अतिवीर' आपका, जग ने रख डाला॥६॥
पाँच-पाँच नामों के धारी, शासननायक हो।
जय हो! जय हो! नाथ आपकी, सबके पालक हो॥

पंचम गति का हमें लाभ हो, ऐसी करो कृपा।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा॥७॥
बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें॥
बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली॥८॥

(दोहा)

भक्ति सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय) (चार संज्ञाएँ)

भोजन संज्ञा के वश होकर, भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाते।
व्यथा कथा के चक्कर में हम, ज्ञानामृत ना चख पाते॥
भूख प्यास का पाप हरें हम, यों ज्ञानामृत दान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, भोजन संज्ञा हान करो॥

ॐ ह्रीं पापमूल आहारसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१॥

सात भयों से डरकर हम सब, डर-डर कर आधे जीते।
डर-डर कर ही आधे मरते, जहर गुलामी का पीते॥
सात भयों के शूल हरें हम, सुख का राज्य प्रदान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, भय संज्ञा का हान करो॥

ॐ ह्रीं परतंत्रतामूल भयसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२॥

मैथुन संज्ञा से जल करके, दुख सहते अपयश पाते।
आतम बगिया जले, खिले ना, ब्रह्मचर्य का यश पाते॥
मैथुन का संताप हरें हम, संयम पथ वरदान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, मैथुन संज्ञा हान करो॥

ॐ ह्रीं परेशानीमूल मैथुनसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥३॥

परिग्रह संज्ञा-साँप डसे तो, पापों का फिर खेल हुआ।
राजा-रंक बने यह दुनियाँ, वध-बन्धन का जेल हुआ॥
साँप परिग्रह का विष उतरे, गरुड़ मंत्र यों दान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, परिग्रह संज्ञा हान करो॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरिवर्तनमूल परिग्रहसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥४॥

(षट्-लेश्या)

वैर तजे ना क्रोधी लंपट, दया धर्म से मुकर रहा।
क्रूर दोगला झगड़ालू जो, पेड़ जड़ो-मय कुतर रहा॥
भाव कृष्ण लेश्या काली ये, नीच नरक गति पहुँचाये।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥५॥

चुगलखोर अति सोने वाला, संज्ञाओं का लोलुप जो।
अति लोभी जो तना तोड़ के, फल खाने का इच्छुक हो॥
भाव नील लेश्या नीली ये, मध्य नरक गति पहुँचाये।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं नीललेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥६॥

क्रोध जलन अपमान अन्य का, निन्दक ना विश्वास करे।
निजी प्रशंसक को धन देता, शाखा बड़ी विनाश करे॥
रंग कबूतर सी कापोती, उपरिम नरकों ले जाए।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं कापोतलेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥७॥

दया दान में रत मृदुभाषी, कार्य हिता-हित पथ जाने।
दृढ़ताधारी उपशाखा को, तोड़े फल खा सुख माने॥

भाव पीत लेश्या पीली ये, निम्न सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं पीतलेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥८॥

क्षमा शील सच्चा त्यागी जो, साधुजनों का पूजक हो।
भद्र श्रेष्ठ कार्यों का कर्त्ता, तोड़ फलों का भक्षक हो॥
भाव पद्म लेश्या नारंगी, मध्य सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं पद्मलेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥९॥

पक्षपात अघ राग-द्वेष का, नेह निदानों का त्यागी।
दोष न देखे शिवप्रेमी जो, गिरे फलों का अनुरागी॥
भाव शुक्ल लेश्या उज्ज्वल जो, उच्च सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचमगति सो, शरण वीर की हम आए॥

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१०॥

(चौदह गुणस्थान)

मोह योग के निमित्त से जो, आतम के परिणाम गुनो।
गुणस्थान वे चौदह उनमें, पहला है मिथ्यात्व सुनो॥
जो मिथ्यात्व कर्म उदयों से, तत्त्वों में श्रद्धान नहीं।
देव-शास्त्र-गुरु को ना माने, अपने-पर का भान नहीं॥

(दोहा)

मिथ्या दुख का मूल है, जैसे चुभे बबूल।
वीर! हमारा दुख हरो, दो श्रद्धा का फूल॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदुःखदरिद्रता मिथ्यात्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

पहले या दूजे उपशम के, उच्च शिखर से गिरकर के।
जब तक ना मिथ्या तल पाते, तीव्र कषायोदय धर के॥
वो सासादन सम्यग्दर्शन, उपशम समदृष्टी पाते।
सब भव्यों को इसका पाना, नहीं जरूरी गुरु गाते॥

सासादन मिथ्यात्व को, करिये दूर जरूर।
वीर! हमारी अर्ज को, शीघ्र करो मंजूर॥

ॐ ह्रीं समस्तविधपतनदायक सासादनसम्यक्त्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय

अर्घ्यं... ॥१२॥

यथा स्वाद खिचड़ी का अथवा, मिले दही गुड़ का होता।
त्यों मिथ्या वा सम्यग्दर्शन, मिलकर तत्त्व विषय खोता॥
यह सम्यक्-मिथ्यात्व नाम का, गुणस्थान या मिश्र कहा।
मरण न इसमें आयु बन्ध ना, यहाँ न संयम पले कदा॥
मिश्रभाव स्वामी हरो, शुद्ध भाव दो दान।
वीर! हमारी प्रार्थना, स्वीकारो भगवान्॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमिश्रदशादायक सम्यग्मिथ्यात्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१३॥

देव-शास्त्र-गुरुओं पर श्रद्धा, तत्त्व विषय श्रद्धान जहाँ।
सुनो! क्षयोपशम उपशम क्षायिक, तीनों हैं श्रद्धान जहाँ॥
पर व्रत संयम वहाँ न होते, अविरत सम्यग्दर्शन वो।
गुणस्थान चौथा बतलाया, चौ-गति में हो भव्यन को॥
रत्नत्रय की नींव है, मोक्षमहल सोपान।
वीर! हमें वह दीजिये, सम्यग्दर्शन यान॥

ॐ ह्रीं समस्तविधश्रद्धादोषनाशकसमर्थ सम्यग्दर्शनप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

जो श्रावक त्रस हिंसा तजते, तो संयम स्वीकार रहे।
तज न सकें पर थावर हिंसा, तभी असंयम धार रहे॥
नर पशु गति में साथ-साथ में, ऐलक क्षुल्लक आर्याजी।
गुणस्थान वह देशविरत या, धरें संयमा-संयम भी॥
देशविरत से पाइये, सोलह सुर तक धाम।
वीर! भक्ति से वह मिले, बाद मिले शिव धाम॥

ॐ ह्रीं गुणधनमण्डित देशविरतदायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१५॥

प्राणी संयम इन्द्री संयम, जहाँ रहे पापों पर जय।
वहाँ सकल संयम हो लेकिन, नहीं संज्वलन मंद उदय॥
तभी प्रमाद कहा मुनियों को, गुणस्थान वह छठा कहा।
प्रमत्त विरत उसी को कहते, प्रज्ञा का अपराध रहा॥
परमेष्ठी का रूप है, मुक्ति रमा का हार।
वीर! वही मुनि रूप दो, यथाजात सुख द्वार॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभ्रान्तिक्लांतिनाशक प्रमत्तविरतरूपपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१६॥

जहाँ संज्वलन कषाय का भी, मंद उदय का पड़ जाना।
प्रमाद का तब लेश न रहता, वही अप्रमत्त गुणमाना॥
भेद सातिशय स्वस्थानमय, क्रिया ध्यान वाला रहता।
गुणस्थान वह सप्तम माना, ऐसा जिन आगम कहता॥
गुणस्थान सप्तम मिले, क्रिया ध्यान का कोश।
वीर! वही मुनि रूप दो, सावधान संतोष॥

ॐ ह्रीं समस्तविधप्रमादनाशक अप्रमत्तविरतरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥१७॥

भिन्न समयवर्ती जीवों के, जहाँ भिन्न परिणाम रहे।
किन्तु समयवर्ती जीवों के, भिन्न अभिन्न सुकाम रहे॥
मिले न पहले भाव अपूरब - भाव अपूरब यथा धरे।
गुणस्थान वो अपूर्वकरण जो, उपशम क्षायिक व्यथा हरे॥
गुणस्थान अष्टम मिले, क्षायिक वाला धाम।
वीर! वही मुनिरूप दो, जिसको सदा प्रणाम॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभूतदोषनाशक अपूर्वकरणरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

भिन्न समयवर्ती जीवों के, भिन्न-भिन्न परिणाम जहाँ।
एक समयवर्ती जीवों के, समान ही परिणाम यहाँ॥
आगे-आगे नन्त गुणी जो, बढ़े विशुद्धि करणों की।
गुणस्थान वह नौवाँ होता, हो पूजा मुनि चरणों की॥
गुणस्थान नौवाँ मिले, क्षायिक वाला योग।
वीर! वही मुनिरूप दो, शुद्ध करो संयोग॥

ॐ ह्रीं अशुद्धिदोषनाशक अनिवृत्तिकरणरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..॥१९॥

उदय जहाँ संज्वलन लोभ का, बहुत-बहुत अतिसूक्ष्म हुआ।
वहाँ संत के परिणामों से, छोटा दुख का कूप हुआ॥

क्षायिक या उपशम वाला जो, नाश कषायों को करता।
गुणस्थान वो दसवाँ जानो, जो आतम में सुख भरता॥
गुणस्थान दसवाँ मिले, क्षायिक वाला भाव।
वीर! वही मुनि रूप दो, जो नाशे दुर्भाव॥

ॐ ह्रीं लघुताभावनाशक सूक्ष्मसाम्परायरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२०॥

चरितमोह के जहाँ कर्म सब, उपशम हो अथवा दबते।
यथाख्यात चारित्र वहाँ पर, होता यह जिनवर कहते॥
पतन यहाँ से निश्चित होता, उपशम श्रेणी अंत यहाँ।
गुणस्थान उपशान्त मोह वह, टिक न सकता संत जहाँ॥
गुणस्थान उपशान्त जो, उपशम करे कषाय।
वीर! उसी मुनिरूप को, माथा जगत् नवाय॥

ॐ ह्रीं उपद्रवभावनाशक उपशान्तरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२१॥

चरितमोह का जहाँ कर्म फल, पूरा क्षय अत्यन्त हुआ।
वहाँ शुद्ध निर्मल अविनाशी, यथाख्यात चारित्र हुआ॥
फटिकमणी सम भाव वहाँ पर, अंत क्षपकश्रेणी का हो।
क्षीणमोह या बारहवाँ वह, गुणस्थान आतम का हो॥
गुणस्थान जो बारवाँ, क्षीणमोह विख्यात।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो प्रभु रूप दिलात॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमूर्च्छानाशक क्षीणमोहरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२२॥

सकल घातिया नशे जहाँ पर, नन्त चतुष्टय प्रकट हुए।
वह अरिहन्त दशा जग पूजित, भाव सयोगी घटित हुए॥
यही केवली प्रभु के हो जो, मोक्षमार्ग दे भव्यों को।
सयोगकेवली गुणस्थान या, तेरहवाँ हो पूज्यों को॥
गुणस्थान जो तेरवाँ, सयोगकेवली भूप।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो अरिहन्त स्वरूप॥

ॐ ह्रीं दुःखसंयोगविनाशकसमर्थ सयोगकेवलिरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर

जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२३॥

जब अरिहन्त प्रभु के तीनों, योग नशे पर देह रहे।
पाँच लघु स्वर के वाचन के, समय मात्र भव गेह रहे॥
केवलज्ञान सहित भावों मय, जो अरिहन्त जिनेश्वर जी।
अयोगकेवली गुणस्थान या, चौदहवाँ पूजें सुर भी॥
गुणस्थान जो चौदवाँ, अयोगकेवली सार।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो सिद्धों का द्वार॥

ॐ ह्रीं संसारचक्रविनाशकसमर्थ अयोगकेवलिरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥२४॥

पूर्णार्घ्य

इस दुनियाँ में कोई न अपना, किससे अपनी बात कहें।
कहाँ रहें किसको अपनाएँ, किसको अपने साथ रखें॥
यही सोच हम द्वार आपके, विनय भक्ति से आए हैं।
हमको बस अपना लो स्वामी, अर्घ्य भावमय लाए हैं।
स्वयं सिद्ध प्रभु वीर हो, करो सिद्ध हर काम।
मुक्ति वरण को हम करें, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

वर्द्धमान सार्थक रहा, विश्व विजेता नाम।
वर्द्धित गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! महावीर की, जय हो! जय हो! सन्मति की।
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जय हो! जय हो! जगपति की॥
पथ पाथेय तुम्हीं हो स्वामी, पथ दर्शक हो पथ ज्योति।
तुम्हीं रतन चिंतामणि साँचे, तुम ही हो हीरा-मोती॥१॥

तुम्हीं कहाते त्रिशला नन्दन, सिद्धारथ के सुत प्यारे।
बने भील से भगवन् तुम ही, भक्तों की नैया तारे॥

राग त्याग वैराग्य धार के, किए साधना कल्याणी।
भक्त वही भव पार पहुँचते, जो अपनाते तव-वाणी॥२॥

लेकिन हम तो तुम्हें भूल के, भवसागर में डूब रहे।
राग-द्वेष अज्ञान मोह से, पापों से ना ऊब रहे॥
नफरत ईर्ष्या तृष्णा माया, बस इनमें ही उलझ रहे।
अपना वैभव भूल इन्हीं को, सर्व हितैषी समझ रहे ॥३॥

तभी ताकते रहते नयना, बुरे-बुरे गुण औरों के।
कान हमारे कभी न थकते, सुन-सुन अवगुण गैरों के॥
पाँव हमारे उल्टे पड़ते, बुरे काम ही हाथ करें।
हृदय शीश तन मन वचनों से, बुरी-बुरी हम बात करें॥४॥

अतः विश्व बन गया नरक सा, मौसम के तेवर बदले।
दोष किसे हम दें हम ही तो, हंस बने कपटी बगुले॥
बस इससे ही सुन्दर जीवन, भरा बुराई से अपना।
अब कैसे साकार यहाँ हो, बतलाओ सुख का सपना॥५॥

अतः विश्व को रही जरूरत, महावीर की सदा-सदा।
लेकिन आप नहीं आओगे, भक्तों की सुन व्यथा-कथा॥
तभी आपकी पूजा अर्चा, करने की हमने ठानी।
भाव यही है हम सब पाएँ, छाँव आप की वरदानी॥६॥

गर तस्वीर वसे नयनों में, तो तकदीर बदल जाएँ।
अगर आप मन में आओ तो, महावीर हम बन जाएँ॥
कान हमारे धन्य बनें जब, महावीर की कथा सुनें।
हाथ पैर सिर पावन हों जब, महावीर की राह चुनें॥७॥

महावीर का रूप धरें हम, महावीर की जय बोलें।
रोज दशहरा मने दिवाली, मोक्ष महल के पट खोलें॥
भक्त भक्ति को अमर बना दो, श्रद्धालय में आकर के।
'सुव्रत' का संसार बदल दो, सिद्धालय दिलवा कर के॥८॥

(दोहा)

महावीर का नाम ही, करे विश्व कल्याण।
जीवन का निर्माण कर, करवाता निर्वाण॥

जय महावीर–जय महावीर
शासननायक–जय महावीर

ॐ ह्रीं शासननायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री महावीरविधान सम्पूर्णम् ॥

प्रशस्ति

विद्या गुरु आशीष में, पद्मसिंधु मुनि मीत।
'मुनिसुव्रतसागर' लिखे, महावीर के गीत॥
प्यारी पन्द्रह जनवरी, दिवस रहा शनिवार।
दो हजार ग्यारह रहा, मिले मोक्ष का द्वार॥
नगर ललितपुर में हुआ, गजरथ बड़ा महान्।
झण्डारोहण के दिवस, पूरा हुआ विधान॥
भक्ति शक्ति से जो करें, होकर भाव-विभोर।
महावीर बन वो चलें, मोक्ष महल की ओर॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

समुच्चय जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

आरती

(लय : मेरा आपकी कृपा से....)

वीरा आपको नमन कर, तकदीर हम सँवारें।
हम आरती उतारें, प्रभु! आप भक्त तारें॥

सिद्धार्थ के कुँवर तुम, त्रिसला के हो सितारे।
कल्याण जग का करने, जिन रूप में पधारे।
हमको भी दो सहारा[२], हम भक्ति कर पुकारें ॥१॥

संसार के हितैषी, रसिया हो आतमा के।
तीरथ हो चलते-फिरते, वसिया चिदात्मा के।
मन में हमारे आओ[२], अखियाँ तुम्हें निहारें॥२॥

घी दीप बाती ज्योति, तेरे द्वार पर जलायी।
भक्ति के रँग में रँग के, दुनियाँ दीवानी आई।
अंतर की ज्योति देना[२], बाहर की हम उजारें॥३॥

हम हैं अधूरे तुम बिन, पूरा हमें बना दो।
सुर गीत ताल दे के, 'सुव्रत' का सुर सजा दो।
दे गीत आत्मा का[२], दो मोक्ष की बहारें॥४॥

❑ ❑ ❑

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

वीतराग विज्ञानमय, जिनका निज संन्यास।
सूर्य चाँद से पूज्य है, जिनका ज्ञान प्रकाश॥
विश्व विभूति की बढ़े, जिन चरणों से लाज।
तीर्थंकर चौबीस वे, हम भी पूजें आज॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! वृषभनाथ की, हुए प्रथम जो तीर्थंकर।
सागर तक वसुधा को तजकर, बने स्वयंभू क्षेमंकर॥
परम दयालु निर्दय बनकर, किए भस्म मोहादिक को।
निकट आपके आने हम भी, करें नमोऽस्तु चरणादिक को॥१॥
जय हो! जय हो! अजितनाथ की, रिपु-विजयी मृत्युंजय की।
जिन-प्रभाव से बन्धुवर्ग ने, शत्रु धरा निज-पर जय की॥
सार्थक नाम अमंगल हर्त्ता, भव्य कमल विकसित करते।
अपराजित! अपराजित बनने, तुमको नमोऽस्तु हम करते॥२॥
जय हो! जय हो! शम्भव प्रभु की, दुखहारक सुखकारक की।
भोग-विषय तृष्णा रोगों के, हर्त्ता आत्म चिकित्सक की॥
गुण गाने में दक्ष न कोई, तो गुणगान करें क्या हम?
अहंकार ममकार मिटाने, करते नमोऽस्तु फिर भी हम॥३॥
जय हो! जय हो! अभिनन्दन प्रभु, अंतर-बाह्य निरम्बर की।
क्षमा सखी सह दया-वधू ले, चुन ली राह दिगम्बर की॥
नश्वर तन में कुछ ना अपना, आसक्ति तज हित होता।
तत्त्वज्ञान को शाश्वत सुख को, नमोऽस्तु करने मन होता॥४॥
जय हो! जय हो! सुमतिनाथ की, ऋद्धि-सिद्ध के दायक की।
परम भेद-विज्ञानी सार्थक, आत्म ज्योति के नायक की॥
तजे अपेक्षा और उपेक्षा, दिशा-दशा को जो बदलें।
अन्तर दीप जलाने हम तो, जिनको नमोऽस्तु भी कर लें॥५॥
जय हो! जय हो! पद्मनाथ की, सुन्दर निर्मल सूरत की।
हुए भव्य कमलों में शोभित, सूरज सी चिन्मूरत की॥

सरस्वती लक्ष्मी शान्ति के, योग सर्व हित जो धरते।
चरण कमल भज, मोक्षमहल को, पल पल नमोऽस्तु हम करते॥६॥
जय हो! जय हो! सुपार्श्वनाथ की, जो अविनाशी स्वस्थ हुए।
भोग प्रयोजन नहीं हमारा, भोगों से तो कष्ट हुए॥
सभी मृत्यु से डरते लेकिन, माँ सी तुम करते रक्षा।
निजी प्रयोजन सिद्ध करें हम, इससे नमोऽस्तु की इच्छा॥७॥
जय हो! जय हो! चन्द्रनाथ की, जिनसा तप-धन त्याग नहीं।
चंदा जैसे शीतल हैं पर, चंदा जैसा दाग नहीं॥
रहे सूर्य से बहु तेजस्वी, पर सूरज सम आग नहीं।
आग दाग हर वीतराग को, नमोऽस्तु करना राग नहीं॥८॥
जय हो! जय हो! सुविधिनाथ की, सुविधि कहें जो शिवपथ की।
अनेकान्त का दया धर्म दे, शुद्धातम उद्घाटित की॥
क्रोध वैर एकान्त धर्म तज, जिन-शासन जीवंत किया।
शत्रु विरोध त्यागने हमने, नमोऽस्तु जय-जयवंत किया॥९॥
जय हो! जय हो! शीतल प्रभु की, करें चराचर शीतल जो।
जो शीतलता प्रभु से मिलती, चंदन चंदा में ना वो॥
विषय काम धन सुत तृष्णा की, ज्वाला गंगाजल न हरे।
सम्यक् श्रम से आत्मप्रीति को, नमोऽस्तु कर भी मन न भरे ॥१०॥
जय हो! जय हो! श्रेयनाथ की, विघ्न हरें जो राह करें।
मधुर वचन से मोक्षमार्ग दें, ज्ञानावरणी आह हरें॥
न्याय-बाण के ब्रह्म-अस्त्र से, आतम के सम्राट हुए।
कष्ट विघ्न बाधाएँ हरने, नमोऽस्तु कर निज ठाठ हुए॥११॥
जय हो! जय हो! वासुपूज्य की, इन्द्र-पूज्य जग नायक की।
जिन्हें न पूजा निन्दा से कुछ, किन्तु शुद्धि हो पूजक की॥
सिन्धु पुण्य में बिन्दु पाप सम, पूजक की सावद्य क्रिया।
फिर भी 'पुण्यफला' बनने को, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥१२॥
जय हो! जय हो! विमलनाथ की, जो निज-पर उपकारक हैं।
अंतरंग बहिरंग दोष के, जो निष्पृह हो हारक हैं॥

विमल ज्योति से कर्म पटल को, पूर्ण हटाने के अवसर।
आत्म सूर्य को उदित कराने, करते नमोऽस्तु हम झुककर ॥१३॥
जय हो! जय हो! अनन्तनाथ की, अनन्त गुण भण्डार भरे।
तन की श्रम जल भोग नदी को, तप रवि से परिहार करे॥
भक्त-पुरुष भव पार उतरते, अभक्त जन भव दुखी हुए।
दुखी न हों भव पार उतरने, कर नमोऽस्तु हम सुखी हुए॥१४॥
जय हो! जय हो! धर्मनाथ की, धर्म-तीर्थ प्रतिपादक की।
भव्य सितारों के जो चंदा, कर्म-भर्म संहारक की॥
नाथ! आपकी चेष्टाओं के, दर्शन हुए प्रसन्न हुए।
देही हम भी बनें विदेही, अतः नमोऽस्तु कर धन्य हुए॥१५॥
जय हो! जय हो! शान्तिनाथ की, प्रजा सुरक्षक राज हुए।
धार सुदर्शन चक्र विजय कर, चक्रवर्ति अधिराज हुए॥
धर्मचक्र धर समाधिचक्र से, कर्मचक्र हर शुद्ध हुए।
विश्वशान्ति को आत्मशान्ति को, हम नमोऽस्तु करबद्ध हुए॥१६॥
जय हो! जय हो! कुन्थुनाथ की, तीन-तीन पद धारी की।
विषयाशा तज बने तपस्वी, लोकालोक निहारी की॥
जीव मात्र के परम हितैषी, कष्ट निवारक शिवधामी।
करुणा कर करुणाकर! बनने, है नमोऽस्तु है प्रणमामि॥१७॥
जय हो! जय हो! अरहनाथ की, तृष्णा जल जो सुखा दिए।
मोह पाप यम गर्व सैन्य का, डमरू बाजा बजा दिए॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, रत्नत्रय धर मुक्त हुए।
विद्यारथ से मुक्तिपथ को, हम नमोऽस्तु में युक्त हुए॥१८॥
जय हो! जय हो! मल्लिनाथ की, चमत्कार उद्धार किए।
कर्मेन्धन को ध्यान अग्नि से, जला आत्म श्रृंगार किए॥
सर्व जगत् सर्वज्ञ-भक्त बन, नम्रीभूत शरण आगम।
मोहमल्ल की शल्य हरण को, करें चरण में नमोऽस्तु हम॥१९॥
जय हो! जय हो! मुनिसुव्रत प्रभु, नाथ अनाथों के स्वामी।
मुनिपुंगव जो नक्षत्रों के, बीच चाँद सम कल्याणी॥

मोरकण्ठ सम देह सुगंधित, गए मोक्ष शाश्वत सुख में।
मोह शनीश्चर संकट हरने, नमोऽस्तु करके हम खुश हैं॥२०॥
जय हो! जय हो! नमिनाथ की, भक्तों के आराध्य रहे।
चित्परिणाम शुद्ध करने को, साधक के शिव साध्य रहे॥
श्रायस पथ पर बने दयालु, निःश्रेयस निर्वाण रहे।
आप सुनो या नहीं सुनो पर, हम तो नमोऽस्तु कर हि रहे ॥२१॥
जय हो! जय हो! नेमिनाथ की, नीलकमल से नैन रहे।
णमो जिणाणं, णमो जिणाणं, चरण ताकते जैन रहे॥
राजुल राज-रमा के त्यागी, आत्म रसिक गिरनार चढ़े।
निज अर्हंत अवस्था पाने, कर नमोऽस्तु हम पाँव पड़ें॥२२॥
जय हो! जय हो! पार्श्वनाथ की, अद्वितीय पौरुष जिनका।
वज्रपात आधी तूफां से, बाल न बाँका हो जिनका॥
लोहा स्वर्ण बनाते पारस, पर पारस पारस करते।
कर्म कीच हर पारस बनने, नमोऽस्तु सादर हम करते॥२३॥
जय हो! जय हो! महावीर की, जो जग में विख्यात हुए।
जिनके सूत्र जियो जीने दो, अब भी तो जयवंत हुए॥
प्रातिहार्य पा जिनशासन का, शंख फूँक ऐलान करें।
आप रहो या नहीं रहो हम, कर नमोऽस्तु सम्मान करें॥२४॥
ये चौबीसों तीर्थंकर प्रभु, मुक्ति वल्लभा कहलाते।
नवग्रह उनका क्या कर लें जो, कर्म परिग्रह नशवाते॥
अतः सभी जग कार्य छोड़कर, चौबीसी को नमन करो।
अब तक जो शुभ कार्य किया ना, वो करके निज रमण करो॥२५॥
दीप आपका ज्योति आपकी, हम तो बस जलते जाएँ।
राह आपकी शरण आपकी, हम तो बस चलते जाएँ॥
शब्द आपके भाव आपके, हम लिखते पढ़ते जाएँ।
फूल आपका बाग आपका, हम खिलते महके जाएँ॥२६॥
गीत तुम्हीं संगीत तुम्हीं हो, हमें बाँसुरी बन बजना।
भक्ति समर्पण के रत्नों से, चिदानन्द से अब सजना॥

यही भावना बस 'सुव्रत' की, सिर पर प्रभु आशीष रहे।
प्राण भले ही निकल जाएँ पर, प्रभु चरणों में शीश रहे ॥२७॥

श्वांस-श्वांस में वास, चौबीसों जिनराज हों।
यही भक्त संन्यास, निज स्वभाव से काज हों।
होगी अपनी जयोऽस्तु, चौबीसों के नाम भज।
सादर करके नमोऽस्तु, निज श्रृंगारित साज सज॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः महाअनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसों स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

प्रशस्ति

नगर लिधौरा है जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं छन्द पूरे हुए, 'श्री जिनचक्र विधान'॥
सोलहवें दीक्षा दिवस, की थी जब तारीख।
चौबीसों जिनराज के, पूर्ण भक्ति के गीत॥
दो हजार चौदह भौम्, अप्रैल शुभ बाबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज की मौलिक कृतियाँ

१. श्री बड़ेबाबा विधान
२. श्री जिनचक्रमहामण्डल विधान (चौबीस तीर्थंकरों के विधानों का संग्रह)
३. श्री आदिनाथ विधान
४. श्री अजितनाथ विधान
५. श्री शम्भवनाथ विधान
६. श्री अभिनन्दननाथ विधान
७. श्री सुमतिनाथ विधान
८. श्री पद्मप्रभ विधान
९. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
१०. श्री चन्द्रप्रभ विधान
११. श्री सुविधिनाथ विधान
१२. श्री शीतलनाथ विधान
१३. श्री श्रेयांसनाथ विधान
१४. श्री वासुपूज्य विधान
१५. श्री विमलनाथ विधान
१६. श्री अनन्तनाथ विधान
१७. श्री धर्मनाथ विधान
१८. श्री शान्तिनाथ विधान
१९. श्री कुन्थुनाथ विधान
२०. श्री अरनाथ विधान
२१. श्री मल्लिनाथ विधान
२२. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
२३. श्री नमिनाथ विधान
२४. श्री नेमिनाथ विधान
२५. श्री पार्श्वनाथ विधान
२६. श्री महावीर विधान
२७. पंचबालयति विधान
२८. त्रिकाल चौबीसी विधान
२९. श्री भक्तामर विधान
३०. श्री कल्याणमंदिर विधान
३१. श्री एकीभाव विधान
३२. बाहुबलि विधान
३३. नवदेवता विधान
३४. श्री सिद्ध विधान
३५. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
३६. श्री तीर्थंकरचक्र (तीस चौबीसी) विधान
३७. श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
३८. श्री शीतलनाथ विधान (वृहत्)
३९. श्री शान्तिनाथ विधान (वृहत्)
४०. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान (वृहत्)
४१. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
४२. णमोकार पैंतीसी विधान
४३. यागमण्डल विधान
४४. पंचकल्याणक विधान
४५. श्री समवसरण विधान
४६. श्री निर्वाणक्षेत्र विधान
४७. श्री सम्मेदशिखर विधान
४८. श्री गणधर विधान
४९. चौसठऋद्धि विधान
५०. दसलक्षण विधान
५१. नन्दीश्वर विधान
५२. सोलहकारण विधान
५३. विद्यागुरु विधान
५४. विद्यागुरु बुंदेली विधान
५५. चन्द्रविद्या गैरतगंज विधान
५६. रक्षाबन्धन विधान
५७. पावागिरि विधान
५८. कोलारस के खड़ेबाबा विधान
५९. जैन दीपावली पूजन विधि
६०. श्री जिनवाणी (पूजन-पाठ संग्रह)
६१. श्री जिनवाणी (लघु)
६२. लघु जिन पूजा
६३. पूजाञ्जलि विद्या
६४. आरती विद्या
६५. नाटक विद्या
६६. विद्या-गुरु गौरव गाथा
६७. भजन विद्या-१
६८. भजन विद्या-२
६९. पद्यानुवाद विद्या
७०. सामायिक विद्या
७१. कहानी संकलन
७२. नाटक संकलन
७३. कविता संकलन
७४. संस्मरण संकलन
७५. ऐसे बनें जैसे (मुक्तक)
७६ माँ (काव्य-कृति)
७७. संकल्प विद्या (नियम चार्ट)
७८. प्रसंग (संस्समरण)
७९. णमोकार दीप महा-अर्चना
८०. भक्तामर दीप महा-अर्चना
८१. चन्देरी के चन्द्रप्रभु
८२. भक्तामर बीजाक्षर विधान